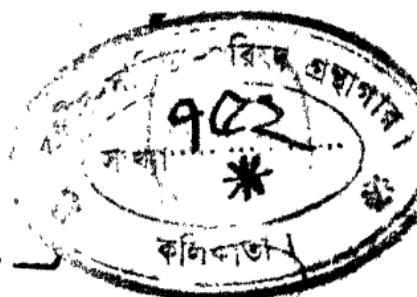


লিপি যালা

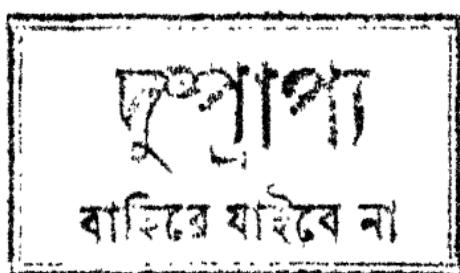


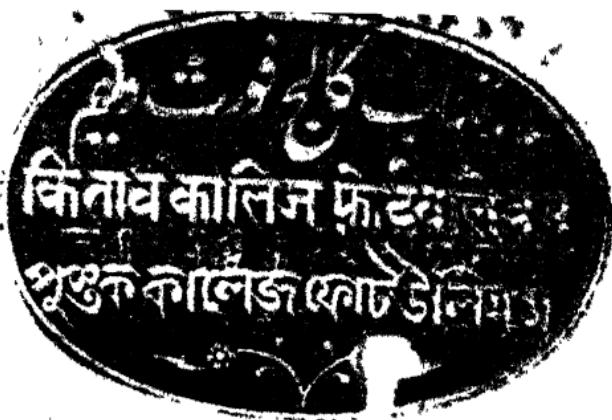
পুমুকা

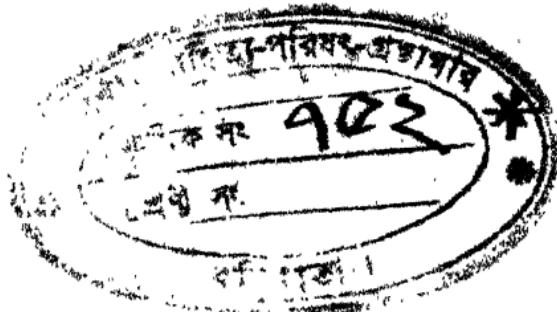
রাম রাম বসুর রচিত।—

শ্রবণপুরে ছাপা হইল।—

১৮০২।—







अस्ति हिति प्रलय कर्ता जानन् मिद्दि पाता
परम बुझ्ये उद्दिश्य तत् हइया पुनाम् ओ
पुर्वना कहिया लिखेन कर्ता याइयेछ।

ए हेन्दुशान अवास्तु रहे देखे कार्य
कर्म ए अग्रम् अनेकाना देशीय ओ उपर्युक्तीय
ओ पर्वतहु त्रिविति लोक ओउष शवाय अवीय
अनेक लोकहुर अगाम् हइयाँछ एवं
अनेक अनेकहुर उद्दिति ओ एই माने
अप्त ए श्लेष अस्तिपति ई० नामीय महा
श्वेता ताहारा ए देशीय ठन तापा अव-

गंतु नहिले इंजि किया ज्ञम् इहाते पाठेन
 ना इहाते उंडारदिगेव आकिञ्चन् एषांत
 कार चलन भीष्म ओ लोप्ता पत्तार वीरा
 आजान रुदिया सवर्दिहि राघ्यं फृश्चानम्
 हयेन। एउदधे ए ब्रह्मीय योवनीय लोप्ता
 पत्तार पृक्तव दूषे वीराते गुणित रुदिया
 लिपि याला नाम पूरुष रुचना करा गेल।
 पृथग् वीरा दूषे तिन अविष्य उंडार पृथग्तो
 इंजागीव असा उंडारदिगेके लोप्तेन
 उंडार पृथग्तुरु पूर्वक हितीय इंजागीव
 आनन मठिर लोहके अनुजा ओ विहि
 व्यवस्थाकम् प्रान। इति पृथग् वीरा। हितीय
 वीरा सामान्य लोप्ता पत्ता। समान समानीके
 गेल लघाके एह० लघु लिखके पृथु रम्य
 रुद्यके एह० आक्षयाला एहै यते पूरुष लोप्ता
 यहाते आयारु एहै आकाङ्क्षा यदि आयार रुठित

ऐ पुस्तकेर मदी काहाछि कम्बे कम्बित
दोष हया भाके ताहा अनुग्रह पूर्वक
दृष्टि । यात्रे निरा यदे मत ना हयेन
अकाइन कोन लोक दोष तिन्ह होइते
पारे ना । —

मानव मृजन विशि करिल यथन ।
मेहे काले षड्डिपू ईदल नियोजन ।
अउपर भूल भूष्टि आचे मवर जने ।
मानव लक्षन रम्य रामराम भने ।

भाद्रिता रम्य रष्ट्र पंख प्रोक्ष मास ।
पद्म आनन्दे राम करिल पुकाश । —



ପୁରୁଷ ଦୀର୍ଘ ।—

ପୁରୁଷ ଅଧିକ୍ୟ ।—

ପୁରୁଷ ଲିଖି ରାଜା ଅନ୍ତରେ ଲେଖନ ।

ପୁରୁଷ ଦେବତା ଉଦୀଦାନେର ଓଳାନ୍ତୁଦେ
କରନେଇ ପର ଯିତି ଶୂପିଦୀକେ ସାବହିତ
କରିଯାଇନ ଯାନର କୁରନଙ୍କ ଆର୍ଦ୍ଦ ପଞ୍ଚ ପଞ୍ଚକୀ
ମୀନ କୌଟ ପତନ ଇତ୍ତାଦି ମରଣ୍ତି ଯାନବେର
ନିମିତ୍ତକ । ଉନ୍ନାଦ୍ୟ ରାଜାଗନକେ ପ୍ରେସ୍ର୍ୟାବତ୍
କରିଯା ଓହୁର କରିଯାଇନ ଆର୍ଦ୍ଦ ମରଣ୍ତର
ରକ୍ଷାଥେ । ଇହାତେ ଇହାଦେଇ ଓହି ମରବାତୋ
ଭାବେ ମେହି ଉଦୀଦାନେର ସ୍ତାବକ ଧାରିଯା
ତାହାର ଅନୁଜୀ ପୋଲନ କରେନ ଏବଂ ଦେଖି
ଦିଲେଖି ନ ଇହା ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବନ୍ଦ ଓ ଭିନ୍ନ
ବନ୍ଦ ମରଣ୍ତକେ ଆପନ ପରିବାରେର ନ୍ୟାୟ
ପ୍ରତିନୀତନ କରେନ । ଏତଥେପରେ ଆମି
କାହାନ କାହାତି କାହା ଏ ମହିଳ ଦିବିଦି

ଲୋକେହି ଦିଗ୍ନକେ ଭିନ୍ନଭାବ ନା କୁରିଯା ମଧ୍ୟ
ଭାବେ ପୁତ୍ରପାଳନ କଥି ଇହାତେହି ଦିନେ ୨ ଆମ୍ବାର
ପ୍ରେସ୍‌ର୍ ଦାଖଲାତା ଅଜ୍ଞବ ଏହି ଆମ୍ବାର ପୂର୍ବ
କୁଥନେର ପୁଣୀନ । ଆମ୍ବାର ଇହା ମଧ୍ୟକୁ ପୁରୀନ
ଲୋକେହି ବିଦୀନ ଓ ଏହି ଯତ ହୁଏ ତାହାତେହି
ପୁରୀର ଶୋଭା ଆମ୍ବାର କର୍ଣ୍ଣଗୋଚର ହେଲ ।

ନିଜାଧିକାରେର ବହୁପୁର ପରିଣାମ ତୋଷୀର
ଅଶ୍ଵିକୀର୍ତ୍ତର ମାନ୍ଦିଯ ତିରକାଳୀଯର୍ଥି ଏହି ଯତ
କୃପନ୍ ୨ ମୀଳ ମେତୁର ବାଦ ବିମସ୍ତାଦ ହଇଯା
ରାମିତେଜେ ଏବାର ତୋଷୀର ପୁର ଲୋକେରା
ନିଜାଧିକାରେର ପୁଜାର ଓପର ଦୌରାତ୍ମା
କରେ । ଆହ୍ୟ ପୁତ୍ରାତେ ଏହି ଯତ ଶୁଦ୍ଧନେ ଯହା
ଓପ୍ପାଯ ଓପ୍ପାନ୍ତ ହଇଯା ବିଶେଷ ବିବେଚନୀ
ନା କୁରିଯା ସୈନ୍ୟ ଉକ୍ତାର ଆଜା ହଇବା
ଯାତ୍ରେଇ କୁରିଯାଏ ଅଶ୍ଵଦାର ପାଁଢ ହାଜାର
ତବକୀ ଓ ଦୁଇ ହାଜାର ମୌଘାର ମଶେତ ପୁରୁଷ ।
ଆଜା ଏହି ଯାହାତେ ମେ ନିଜାଧିକାରେର

मान्निया मौन कहउल हय ओ बांदीको
 आकमन करिया जाने किम्बा ताहार मनुष
 छेदन करिया ग्ले। इतिशब्दी नमुणि
 अहुर्वति हइया जानाइल ए सरुल अमरीज
 किया अठव आमार मे समाचार प्रति
 जानाम्बा हइया म० बादहुके समोचित करा
 ग्ल बुझाम भगत हइते पारे ना। आमार
 ए दर्शन ओ प्रेष्ठर्य सर्वत्र प्रकाशमान हइते
 आपना दिया महसा भगत ना हइया थाक्कि
 देके पदि आमार अफोविर फोवि हय उवे
 ए प्रुद्धशेर बाहार सावी आमार महित
 प्रतियोगिता करिया ममुम बक्का करिया
 थाक्किते पारे। एकै कि हइदेह
 ममुत एक छालीन ममुयान हइलैइदा ताहार
 देह सावी कि आमार विक्षी सेनार मनुष
 हय ताहार्ते आपनि ओ अन्योन्य प्रदीन राजा
 गवेर मुक्का तहे ताहा हइलैइदा कि हय

विजयी मेना एक दण्डे निरावरन कुट्रिवार
 आटके कि एषत् रात्या ताहारदेर अमार्द्य
 कि आजे । आपतकार महित एथानकार
 पुर्वं आजे एवं अनुग्राम शर्दन आशार
 मृत्तार कृपन नहे आर तोशा दिया एषत्
 हइते पारे ता कि माहमे तुमि एषत्
 कुट्रिवा इहाते ए मर्यादा आपुशाल्य
 हइल । किन्तु मेनार मझी पूर्ववर्ह इहाया
 छिल इहाते कुशार वाहादुर शीकार प्रेलिते
 ए आखले इहाइ हइलेन दूधिते पारि आपन
 कार महित मास्कात् कृपिया लिष्टाचार पुरुष
 कर्यवापा घदि ओ इहा दिया कोनमाते किन्तु
 त्रुटि इय ताहाते आनने क्षोभित नहियेन
 आपनि एथानकार भिन्न कोट्ठी नहेन । इनि
 शालक इहारदेर किया तोशार आशार विन्दु
 येर यद्येन हहे ए वालक बटे किन्तु अडि

आम सुरवाती अर्थात् कार्यक्रम ताहा आनंद
 हइलेहो आनिते पांडिवेन पुरीन भाने ए
 यात्रात रुक्षितेछे बोन चाने आनंदम् हय
 नाई। देखे किछु काल गति हइल मृतिपूर
 आदिकारी प्रतिवर राजा आपन पूर्णाङ्गम्य
 कुरुक्ष्म घटनाय एषांसकारु महित अति तुच्छ
 विषयाते विरोधि उपर्युक्ति रुक्षित रुक्षियांचिलेन
 ताहार निवारिबाटे कुमार बाहदूर एक पाटि
 आठ शार भेना मङ्गी हइया याइया तिन
 दिनारु युद्धेते ताहाके प्रकार रुक्षिया
 ताहार अहम् याजाव नगीरु ठात्र लुट रुक्षिया
 प्रतिवर राजाके आक्रमन रुक्षिया एषांने
 आनियांचिल आर्थारु इच्छा चिल ताहाके
 पूनर्याय आपन अशिक्षारे पदर्पन रुक्षिते
 ताहाते तिनि आपनि कारुणीरेव यद्ये
 आआहता रुक्षितेछेन ताहाते क्षेद
 हइल आमारु यत्त मूर्खार नहेये शङ्कना

गात निष्ठापीयके क्रमाच तक्ष फरा हय कि
 फरा याय ताहार दैवी लिखि एहे जिल। अतर्वा
 कुमार बाहादुर दैव पंडाकान्त बालक आपनि
 एथानकार अनुराग आपनकार आनन्द बाहुल्य
 तार करन ए समन्त लेपा गोल अन्याके ए
 पर्यान्त लिखिवार विषय कि। भगीरान आम्याके
 एकठि मठरित्र महान दियाँछेत इहांसि
 पुतावे एथानकार पुजागीन ओ मेनागीन ओ
 आरू लोक सकलेह मूर्खी एवं आम्यार
 शरनागीतेर कथन विपद्ध इहेते पारे ता
 आम्यार इष्टा आपनि ओ सर्वदा निबद्धी
 हयेत। इति ।



୨ ହିତୀୟ ଦୀର୍ଘ।—

ରାଜୀ ଅନ୍ୟ ରାଜୀକୁ ।—

ଆମୀଶା ଆନନ୍ଦ ଉଗିଦାଳେର ଓନ୍ଦିଶ୍ଚୋ
ଲତ ହେଯା ପୁରୁଷ କରା ଯାଇତେବେ କାହାର
ମାତ୍ର ତୀହାର ଉନ୍ନତ୍ୟାଙ୍କରଣ କରେ । ଅନ୍ତରୁ
ଅଳ୍ପ ଆମୀଶା ଜୀବ ଓ ଆନୁମିତ ବକ୍ତୁ ହେଲେ
କିମ୍ଭିତ କହିତେ ପାରିବା ଉହାତେ ମାନୁଷେର
ଓଠିତ ତୀହାର ଉନ୍ନତିର ପୁରୁଷିତ ନା କରିଯା
ଆମୀଶା ଆନନ୍ଦ ଓନ୍ଦିଶ୍ଚୋ ଆଜିମ୍ଭା ବିବରନ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ
କରେ ଏତୋରନ୍ମାତ୍ର ଉହାର ଅଧିକେ ଦୋଷ ।—

ଏ ଏକ ଦିବମ ଗିତ ହେଲ ଶୁଣା ଶିଥାଛିଲ
ମୁଦରନ୍ଧୂରେ ରତ୍ନାକର ରାତ୍ରି ସାନ୍ତକାଳାବସି
ଏହି ମରକାରେର ପୋଷା କିନ୍ତୁ ଖାଲ ହେଲ
ଏଥାନକାରୀ ମହିତ ନଷ୍ଟତା କରିଯା ଆପନକାରୀ
ଆନୁମିତ ହେଯାଛିଲ ତୀହାତେ କି ଇହ ଲକ୍ଷ
ପୁରୁଷ ଲୋକେର ଏତାବ କୁରାଠ ଅନ୍ୟ ଯତ

ইয়েতে পাঠু না। ১০৮ কার্যকর্মে আপনে
ও উদনুকৃৎ করিয়া স্বপুরিতাত্ত্ব পরগনে
বক্ষপুর ঘাস। চিরকালবধি এ অধিকারে
ভূক্তি তাহা দখল করিয়া চতুষ্পার্শ্বের পুজা
লোকের পৌজা দায় তাইকে নিরস্ত করা
অতি মাশান্ত রূপ। ১০৯ বক্ষপুর আপন
কার অধিকারের নিষ্ঠাবস্থার বিবেচনা করা
গিয়াছিল তাহার কিছুই বিদিত ইল না
জাতিলাগ বুঝি আপনকার আপনে কেন
বিভুটে ইয়েতের নতুবা ইহার দমনের গৌণ
কালের নিমিত্ত কি। অত্যন্ত আপনকার
রূপক জন স্মৃত মৃগিয়া ছলে যাইয়া তাহার
নিরাকৃত করিয়াজে। ১১০ আপনকার
শরূয় ইয়েতে বক্ষপুরে একটা গুড় নির্মাণ
করিতে তাহা ও পুস্ত ইল পুঁঁয়। মে মুকু
বিবেচন আবগত ইয়েতা পাখিবেন। আমি
যুদ্ধ আপনকার বিচরণ মাহায় পদিক দিয়া

इहेते पारिवर्तने । यथा रायु ये महान्
ठाकुर आदर्शाद्वय यात्रानि होले ब्रूडि हो
वेह ना एवे एहे महज विवेचना असुङ्करन
बर्तिज्ञा करिअचिल । इति मरव्ये आनन्द
कारु प्रेरित लोकेन्, निवेदनकथ्य ओलि न
पृष्ठे आप्यायित इअश्वी गेल आपत्तकारु
माहस चक्रवर्यर विवरन आउ इत्तन निजात
आलूदित आनिवा । आपत्तकारु मनुष्ये
केह मिरु इहेते पारे ना मेना ओ मेई यत
विजयिनी विप्राभा अडव इहा इहेते आरु
अदिक कि । इहाते अनुग्राने जाना गेल
प्रथानकारु विरोदीनपुकु इहेयाचन एठा
अदिक आनन्दर विषय ए मरुल विषयेते
क्षमताप्रम्प इअश्वी थारिवा किन्तु अदीन
इवान ए किंवदते दर्प आडिश्य वर्णिवन ना ।
एसा निस्यां ए अमर्सु दाजालीवर मराय
काळीवरटे किन्तु जायारु प्रायाश्चेह इहेते पारे

शारा। आग्नि दुर्द्विष पांवदीप्य शुभं शात्रुषे एव
 अङ्गश्च इतेऽनुव लक्ष्माठ ताहारि भिज्ञै न इ
 ए मरुलि नश्वय आहा पाहा आच्र वला ताहार
 देखा पाहा कि त्वा अन्देह ये वस्तु अति आम्ल
 लालेह विष्ट ताहारि अहक्कीरि विष्ट दृष्ट
 ओ अहक्कीरि भावानेह आनंदारि शोडा ताहा
 आनोहु नियितु न हे एउदर्थे मरुलि मृष्टि
 अति माशाळ्य वस्तुते ओपन्न लक्ष्माच्छेष
 उथाठ लोक ताहारि पुलोडी एवत न इय
 विवेतना लक्ष्माच्छेष। अहक्कीरि विष्ट
 ए मरुलि लेखा पाहितेजे आनंदारि हितार्थ
 जानिवेन जता यत न हे दृष्ट्या भावानेह
 नाय ताहारि पुति दृष्टि लक्ष्मा मदा माव
 धान थाकिवेन। ऐश्वर्या वीर्या क्षयता क्षम
 त्वेन वल पंद्राक्षय मरुलुषे अनित्य अहक्कीरि
 एवत दृष्टि पूर्वकाले र महारै राजागाव पूर्पु
 माङ्काता दिल्लीप भगिरथ प्रभुतिह पापल पाहार

ଅହକୀର ଇତ୍ୟାଜେ ତାହାର ଦୟନ ଉତ୍ସନ୍ଧି
 ଇତ୍ୟାଜେ । ॥ ଅତେବ ତୋଯାର ଆଶୀର୍ବାଦ ଅହକୀର
 ଅତି ଅନୁଚ୍ଛିତ । ॥ ଦେଖ ଏଥାତ ଦିଗ୍ବ୍ୟାପି ଅହକୀର
 ଇଲେ ହିତେ ପାରେ ଯେତୁ ଆଶୀର୍ବାଦ ଆନୁ
 ଗିତ୍ୟ ପ୍ରଧାନକାରୀ କାରିନ ପ୍ରତି ଅନେକ । ଆହ
 ଆହ ଓ ଏହ ଯତ କରେନ ଐଶ୍ୱରୀ ଦାଶଳ୍ୟ
 କଥେଷ୍ଟ ମାଧ୍ୟମରେ ଅପୁର୍ବିତ ଐଶ୍ୱରେ ଆନୁ
 ଗୁହତେ ସର୍ବଦ୍ଵାରେ ବିଜ୍ଞା ବୈରି ଦ୍ୟାପକ କାଳ
 ମାଧ୍ୟୟୀ ହିତେ ପାରେ ନା । ଶୁଣି ଯାତ୍ରେଇ ତାହାର
 ଦୟନ ହ୍ୟ ଅନୁଗ୍ରହ ଲୋକ ସହାନୁକର୍ଯ୍ୟ ଯାବଦୀୟ
 ଲୋକଟୋ ପ୍ରଧାନକାରୀ ପ୍ରତି ପାଲନେ ଅନୁଗ୍ରହ
 ଆମୟଦୁ ଅଶିକ୍ଷାର ପୂଜା ଲୋକ ପ୍ରଧାନ
 କାରୀ ମୂଳ୍ୟ ବିଚାର ଓ ସହାଯିତ୍ରାତ୍ କର୍ମୟ
 ଅନୁଗ୍ରହ ଅମ୍ବାକୁ ନିବିଷ୍ଟ ଉତ୍ସନ୍ଧି ଐଶ୍ୱରୀ
 ତାହାତେ ଓ ଅହକୀରେର ବମ୍ବତି ଏ ଅଙ୍କାଳେ ହିତେ
 ପାରେ ନା । ଇହାତେ ଭଗବାନ ଆମ୍ବାକେ
 ସୁଜୀବିରାଜ କରିଯା ତୋଯାର ଦିଗ୍ବ୍ୟାପି ସର୍ବତ୍ର

विष्णुत रुद्रियांचेन । एहे आशारु क्रेवल ना
 समून ओ निरुहकादिय लक्ष्म जानिवा लिखिया
 छेन आननकारु वालक मृगीयाते ॥ अफले
 आग्नेय रुद्रियांचेन इहाते आनन्द इस्ता
 गोल रुद्रव वारु कार्यक्रमे ॥ राजवीनीते
 आननि आमियांजिलेन । नतुरा आपनकारु
 वालक एत वड हइयांचेन उपांपि एपांने
 आइमेन नाहे । भाल एहे वाक्कु आइमेने
 सख्ल वारेऱ आनन्द आना पाइवेक ।
 आपनकारु लिनिपूष्टुकु ताहाके सहर घटी
 पूर्वेष रुद्राइया आनिते लोक पाठीन गोल
 घद्यनिम्यां रक्षपूरेऱ देल्लाय ओ पूठूर मत
 लोक आजे उपांपि वालकेर आग्नेय
 आनन्दक्रमे आरु शाजाबद्देश्वे मेता
 ताहार आगदाडान जना पाठीन गोल ताहार
 लिमित आरु जाहना रुद्रिवेन ना । : अमृति

ଶିଖମୀ ଦେଖାବିନ ନଷ୍ଟତା କରିଯା ଆରମ୍ଭେକୁ
 ନାଲାର ବାହିଳ ଭାଙ୍ଗିଯା ଦିଯାଚାନ ତାହାର
 ପୁତ୍ରୁପକ୍ଷରେ ଏଥାନକାର ଲୋକ ନିଯାଇଁ ଦମନ
 ହଇବେକୁ ତାହାରେ କି ହ୍ୟ ଆପନକାର ଓ ଅଫଳ
 ଏ ବାହିଳେ ରକ୍ଷା ପାଇଁ ତାହାରେ ସନୋଧ୍ୟୋଗ
 କରିବେନ । ଏଥାନ ଦିଯା ଯେ ଆନୁମତ୍ୟ ହିତେ
 ପାରେ ବ୍ରତ ହଇବେକୁ ନା । ଇହା ଆପନି
 ଯାଇଯା ତୋଷୀର ଓ ଅଫଳ ପାହାରେ ରକ୍ଷା ପାଇଁ
 ତାହା କରି କିନ୍ତୁ ଏଥାନେ ଆର୍ଥ ଅନେକର
 ଲୋକ ଆପନକାର ମହିତ ବିପକ୍ଷତା କରିଯା
 ନଷ୍ଟତା କରିତେ ଓହାର ତାହାରଦେର ଦମନ
 ନହିଲେ ଅଧିନକ୍ଷଣ ଓ ପର ବିପତ୍ତି ହଓନେବୁ
 ଆଟକ ହିତେ ପାରେ ନା । ଏହି ହିଲ
 ତାହାର ବାହିକୁ ତଥା ବ୍ରତ ହିଲ ନା । କହୁ
 ହାଜାର ମେଳା ଜମ୍ଯେତ ରାଜା ନବକୁମାର ଆପନ
 କାରୁ ଆନୁମତ୍ୟ କିମିତ ପ୍ରେରିତ ହିଲ ଇହା
 ଦିଯା ବ୍ରତ ହବେକୁ ନା । ଆର୍ଥ ନିଗୁଚୁ ପ୍ରମଂଦ୍ରୁ

अनेक पाशा अलिप्त आहा. ईनि प्रोक्षिणा
आंतर्कार मुगीठर करिवेन। लोक
विषय जावना करिवा ता, इशा दिया अनेक
जनूगीजा इवेक, आणि ओळे लोक्यांचे
दिगोर दमत करिया, आंतर्कार ओ अफले
अवश्य आसिव. इशाते सदेह करिवा ता
कुरा नुतून करा पाईवेह. इति।—

राजा अन्य राजाके।—

राजादिराज हिन्दूशान यावा। महा दर्शय
कृष्ण अतिशय। शर्वलाङ्गुष्ठकर्वन् कर्व हेय वर्वन।
भक्तियत्त शीर अति महावीर। आत्म लोक
पाल वैरि मर्दवाल। श्रीमात उविर महा
राज राजेश्वर राज। चक्रवर्ति र माहाय
आकाशाप्त माहाय लिनि लेपा पाईड्यजे।

तुर्धीवदि ए देशे ३ ओजाकल कहाँचित्त
 भेदोत्तेद रुदा छिल ना । एम्है राज्यै प्रह
 पराम्परा द्वित इदानीनु दिजुकाल गाँडु हइल
 एपानकार अस्तुकरन आन्नोता कार्यापि
 चेकाँटित छिल । अउप्रे पंक्ति लेखा
 पंडार विषय स्थित छिल । एथन आपनि तुदि
 एपानकार लेखा पंडा पंडानेर गिर्जाघाटे
 अस्तुकरने डिम्बाव करियाउन विशेष
 लिखिबेन । मृपुति पारिशना राज्य घाँडा
 एपानकार ३ ओपानकार मध्यम्ल राज्यैर
 राजा परश्वनाथ पूर्वे मूर्खातांटि छिल
 एथन पूँय पुताहान्ति से राज्यैर पुजा
 गानेर दूष्प उहारी पौछाइउजे । एই
 यत आपनकार आने ३ पौछाइया
 थाहिरेक । इहाते आघार ३ आपनकार
 मनोघोगी ना रुक्काते लोक दिव्य विकल्प
 दिन्तु आम्यात्र छेनना अस्तुकरन अन्यदिग्गी

द्युम्नु मरणु छिल। आपनि ॐ ईशाव
 पुत्रुकारु करेन नाहि ईशाव रागव
 विवेचनारु वाहिर इईल ॥ एहत पुजा
 लोक आयारु कांचे नौकिया आज्ञा निवेदन
 करिलेकु अउप्र ईशावदेर आनुगीत्य करेन
 परिशनार्थेर दमन आवश्यक एथातकारु
 मैना मरणु माजली करिया वाहिर इईयांचे
 कठक एथामेहे आज्ञे। आज कला
 याहिवेक। आयारु इष्टा ए महारात्यरु
 पुजारदेर उपकारार्थे आनने ३ मङ्गलियांन
 हईया यदि ओ अक्षले अनुरोदि करेन
 चिरकालेर मनोदूषण उत्पातो दूर हय एवं
 भगीरानेर मृक्षिय दिगीकु रुक्षा रुक्षा हय
 अ०-वाद पाहिले आडिनिवेश रुक्षा याहिवेक।
 पद्मपिस्या० आपतकारु आइमनेर कोम
 वाहिं थाके कि इट्टा० उपस्थित हय भालै।
 घुररात्यरुदिगीर जनेकाके परिपूर्व मङ्गाते

ପାଠୀଇବେଳ । ଅରୁଳ ସାଲକ ପୁଷ୍ଟି ପୁତ୍ରଭି
ଲୋକେଦୁମିଳେ ଆଜୀ ଦେଉଁ ଗିଯାଇଛୁ
ଅରୁଳଙ୍କ ପାରିଶତ୍ତ୍ୟ ଓ ପର୍ମିତ ଇଇବେଳ ।

ଏହି ଆମନି ପ୍ରକାର ପରଶନାଥର ଓ ପାତ୍ରାଦେ
ମାହାତ୍ୟାର କୁଣ୍ଡଳ ଇଯେନ ଲିଖିଲେ
ଭାବାତ ହାର୍ଯ୍ୟାର ବାବୀ ଇଇତେ ପାରିବେଳ ନା
ପ୍ରଧାନଙ୍କାଙ୍କ ବୈରି ବିଶ୍ଵରୂପ ମେନା ଓ ପର୍ମିତ
ଆମ୍ବୋର ବଢ଼ ଏଣଟା ଆବଶ୍ୟକ ଥିଲେ ନା ।
ଶୁଭେ ଲେଖା ଯାଏ ଯଦିତ ଅନୁରୋଧ ଗିଲନା
କରେନ ବିଶେଷ ଲିଖିଲେ ଏ ରୁକ୍ତିବା ଯେ କହା
ଯହିବେଳ । ନାଟିନୁବେଳ ଦେବହାତ ରାଜୀ
ଆମ୍ବୋ ମର୍ଭାର ମର୍ଭାନଦ ପୁଜା ଲୋକେର
ପୁତ୍ରିପାଲନ ଯଥୋତ୍ତି କରେ । ଶୁନା ଗୀଳ
ଆମ୍ବନଙ୍କାର ସୀମଟିବ ଦେବାନନ୍ଦ ରୁଧିନ୍ଦ୍ର ମେ
ଆଦିକାରେର ଓ ଯେ ଦୌରାତ୍ୟ କରେ ଏ ଅମ୍ବାତ୍ୟ ।
ଓଷାନଙ୍କାଙ୍କ ଲୋକ ହେହାତେ ରଙ୍ଗା ନଭୁବା ହେହାତ
ଅମ୍ବାତ୍ୟ ହିଲକୁଳ କରା ଦାଇତ ତାହାର ବି

आहो ए पर्यातु पूर्जनता रहे । आंतर्कांड
 आदिमन पर्यातु क्षणानेस्थ इत्यांगील पैद्रे
 ताहीर निवारन् अनुमन्त्रान् करिते इत्येवेद
 आनिदेन । आंतर्कांड देशं दिवदेव आनु
 पूर्वरूप आनन्दे आकाशे शुनियांचि ओ असि
 वृश्चिक रथा मान शिष्ठ जल वालुक्त घुक्त दोषांग
 वृश्चिकांस मूर्त्तिक्त देशे विना दुःखादि
 अति मूलत । लोकेदा मुद्राचारी मत्तावादी
 जित्तन्त्रिय मूर्त्तात्त्व मवर माते ओउय
 ग्वान इच्छा एकवार आननि घाइया दृक्ति कर्त्ति
 आनन्द पर्यातेन कृदा घाय महसा अनुठित ।
 इहा आंतर्कांड ठिक्के अनाघत लानने
 आटेक कि अउवर लेपा गील पारिशना
 इत्तेव वार्षिकांड काले ऐ दुजा इत्यां
 आमिते पारिवा । ततुका वृश्चिय एकवार
 छोतकामे मपरियाहे घाइया देशे लेपा

प्राइटरु । इहाते मनिरु लहिरेन
महन अग्नाताह निदयनशिखि । —

द्वाजा अक्ष द्वाजाके । —

“अन्मिकू दीनवक्तु यहादर्शयस् । आज्ञा
पील ऐरिआल पृष्ठे करे भय । यहाराज
क्षितिशाज दाने आहातुर । दयाशु अति
शाशु शब्द अतुर । यहाकौर्य येन मूर्य प्रातान
दुर्जय । प्रदाक्षय यममय द्वाजा यहाशय ।
दीयते तयुताय श्वान्मिकू यहाराय दायेन
लिपि प्रत्युत्तरयिद ॥ १ ॥ ए रमनु काल
प्रामुख्यात अग्नये रूपितनक याहेन्द्रुद्यातने
दाम रुद्रिया ताना प्रकार मुख्यातो राम
थानन करा याईते क्षिल । इति मर्दो

ପ୍ରେସର୍କ ଲିଖି ମୁହଁରାରେ ପ୍ରକାଶ ହେଯା ଆଜ୍ଞା
 ଦିତ୍ କହିଲ । ପ୍ରେସର୍କ ଲିଖି ଦୃଷ୍ଟି ଯାତ୍ରାରେ
 ଯେ ନିର୍ଗତ ଆନନ୍ଦର ଦାଶଲାଭ ହେଯା ଛିଲ
 ବିବରନ କାମନେ ତାହାର କୈବଳ କିନ୍ତୁ ଦୋଷାଧ୍ୟାନ
 କିମ୍ବା ମଦୁରୀର ବିଶେଷ ବିବେଚନା କରିଯା
 ଛେନ । ଯଦ୍ୟାନ୍ତିମାନ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ମେ ଲିଖି
 ଉତ୍ସାହିତ ଗାୟତ୍ରୀର ମୁକ୍ତି ଛିଲ ତାହାରେ କି ହ୍ୟ
 ପ୍ରକୃତାଧ୍ୟାନ ମହୁବ ଏହେ କଦାଚବିବର ହେଲେ
 ଥାଏ ନା । ଯଦିତୁ ତିତାଙ୍କ ହ୍ୟ ତାହା ହିନ୍ଦୁ ନାହିଁ
 କିନ୍ତୁ ଏଥାନକାରୁ ମହୁବ ଏହେ କରାଟିକାଯେ
 ଯଦିତୁ କୋନ ଲୋକର ମହିତ ମୟୁରୀତି ହେଲେ
 ତାବେ ତାହାର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ମେ ହ୍ୟ ନା ।
 ପାତିର ଗାୟତ୍ରୀର ମାଣନ୍ୟ ରୂପେ ଏଥାନକାରୁ
 ଶୁଭାଙ୍ଗିତ ବିଦିତ ନା ହଜନେର ହେତୁ ବିବେଳ
 କରା ଯାଇତେବେଳ । ଆନନ୍ଦର ଲିପିତ ଆହି
 ଓ ତାହାର ପ୍ରତ୍ୟାହରେ ଆହରାପ ଛିଲ ନା

ହେଉଥିବାରୁ ଇଲ୍‌ପାରିଶୋନାର ଦୂଷକ ପୁଞ୍ଜ
ଗନ୍ଧ ଆନନ୍ଦାରଦିଗଣଙ୍କ ଅନ୍ତିମ ମହିତ ଶାନ୍ତି
ବତ୍ତା କରିଯାଇଥାରୁ ଆକାଶକୁ କରିଯାଇଲି ରାଜୀ
ନମ୍ବୁ କରିଯାଇଥାରୁ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ କରେ ଇହାତେ
ମନୋତିନ ପୁରେର ଶ୍ରୀଯାମଙ୍କାଜାନ୍ତି ଏବଂ ଏର ମହିତ
ପରଶନାଥର ଚିରକୁଳାବାଦି ବିବାଦ ପୁଜାରଦେର
ମୂଳକ ଇହିଯା ଏହି ତାହାରଦିଗଙ୍କେ କୁମ୍ଭଙ୍ଗୀ
ପୁରାନେ ଦଶୀଭୂତ କରିଯାଇଲେନ । ଇହାତେ
ଶରଶନାଥ ହିନ୍ଦୁତ ହିଯା ନିତାନ୍ତ ଶୁରନାମିତ
ଅଶ୍ୟାତାର ଯାତ୍ୟାନ୍ତ ଇଲ୍‌ପାରି
ଆହକାଙ୍କ୍ଷାରେ ଦୃଷ୍ଟିଭେଦକୁ ମେନା ପାରି
ମନୋତିନ ମନ୍ଦ୍ରୀ ଛିଲ ଏହି ଆସି ଆନନ୍ଦିତି
ଭାବନ୍ତକୁ ଦେଖିଲାମ । ଏ ମହିତ କିମ୍ବା ଦୃଷ୍ଟ
ଭେଦକେତେ ମରାଦି ଇଲ୍‌ପାରି ଆଟକ ହିସେବେ
ନା । ଅତିଥି ଆନନ୍ଦିକେ ଏ କୌଣସି ବାଯୋହେବ
ବିଷୟ ଇଲ୍‌ପାରି ଏହି କୌଣସି କହିଲ କିମ୍ବା
ପ୍ରପଲବାର ମୁମ୍ଭାଦ୍ୟ ହୁଏ ତାହାତେ ଅନ୍ତରେ

आयाद् आयाद् अनुष्ठित आनिल। एवं
 आयाद् विरा उद्ध विषय दृष्टिभेदकेर
 नीतान प्रकाश अनुसन्धान करिया में यह
 प्रामाण्योक्तेर दमन एवं अधीनके प्रयाप्ति
 करिया परमानपके आशाद् वाज्यय कर्त्तव्य
 देह याइया पूनराय निज साने वाञ्छितेछिल
 इति यद्यो पूर्व शूल प्रैषुक पर्वतज्ञोहास
 इआ पाहार महित पूर्वेऽनीनकार पूर्व
 छिल एवं याहार देखे शेतोष्व ओपत्ति
 मूल। आगि जानि मे अपीनकार पूर्व
 कालेर वाक्यर एथन बुकि बेतणि हइया
 थाकिबेह। नतुरा एधानकार हिंसक
 हइत न। माजनी करिया प्रकाशित महसूक
 भूत्याकृ मेन। मत्ता करिया ए महाद्वारा
 दीनीर ओउरजाणि विहोविराम करियाछ।
 पूर्व यात्रेह मासन्ये ऐ अफले घनयागि
 करा गिल दृष्टिभेदकृ मेनार ओउरवे

न्युर्व राजा द्रव्यक लिपि पतिगीव शुभारिष्ट
 अनुभवात्य शुभ एवास्तु उपेक्षय कलिया
 छिल । ऐरे दृष्टिभेदावेदा प्रोक्षिया एवं
 वालीम सांजारे प्रवास्तु कलिया ताहार
 मायड इत्तार त्रिर्णु ब्रह्मपूर्व नविनान
 नाइया निज मनाय पुदिक्ष इट्टेयाज । देख
 और देखा ज्ञाय अथवारु रमानन्दायि अस्तु
 दिल्ली जैतिमहज ऊर हैन अत्तर यत्तरिम
 स्तुतो जाह इर्हाते निकन्त छिल । अपन
 मर्व दिवायाते शनमिह आनिल देख दैर
 इत्य प्रारिष्टा ओ श्यानाविकार निजारि
 कालेव भुक्त इल । ए दूर दृश्य राजा
 ऊर आनि जाउ आजेल प्रवास
 कायड एवं पर्वत अत्तर अपनिकार शरण
 गिल ए यह श्यानकुरा और रुक्मिणी
 लिलि हाड़ाय आनने देवानन्द ओ अदिलाहड़ा
 उपरु कृपतर राजता कल्पन ए अति

अमृत श्वर्म से विलक्षण करने आने देखा
 जायाएँ असुखरहन अनुग्रहदर्त नहे।
 तीहाते एवतर करे अत्यन्त आपनकारु
 लोगों प्रायीना करिल ताहार परिवर्त्त महा
 कल्पयिके निषुक्त करी गेल ताहार करिल
 आर चिक्का करिवेन ना। देवदार अतिशय
 विकास वर्टेन एउटपे ताहारके सेनाका
 यदी सेनानिति करिया परश्चात्पर
 आहायापि निकपन आनिबेन। ए यही
 हात्य दिया आपनकारु कर्दाठिकर्म करन
 किछु हिंसा हवेक ना। दर० उपकारु
 अवधीन रुक्न बर्देशास्थिपि एव० कोसलासि
 करी ओर्काटेर राजा एव० आर० पाहाड़िया
 पुष्ट राजागीन एकर्काता हईया कठकपाँचली
 करितेजे। शुभ ऐपे आपनारु राजा
 ताहारदेर मान्निदी ताहा यातिरेक ताहारु
 देखे दम्युवृत्तिर गम्भीरनेरु पथ अनात्म

କାରୁ ଥାଇ । . . ଅତ୍ୟବ ଠାଓରାଇସ୍‌ଟ୍ରେ ଆପଣି
 କାଳେ ଦୁଃ୍ଖ କରିଯା ଯନୋଭୀଷ୍ଟ ମିଛି କରୁ
 ଏ ବିଷୟ ବିଚାରିତ ବିବେଚନ କରିବେ । . . ଏ
 ବିଷୟ କଥା ହେଲ ତାହାର । ନିତାଙ୍କ ଦୂଷି
 ଲୋକ ଅତ୍ୟବ ତାହାର ମୟତର ମାଧ୍ୟମ୍ଭୁତ୍
 ଆପଣକାର ଉପର୍ଦ୍ଵିତ ନାହିଁ ତାହାର ମାହୀଯ
 ଏଥାନ ଦିଗ୍ବ୍ୟାନା ହେଲେ ହିତେ ପାଇଁ ନା ତାହା
 କରିବାକୁ ହେବୁ । . . ଏତ୍ୟଥେ ନିବେଦନ ଶେଷା
 ଯାଇତେବେଳେ ଆପଣକାର ଆକଳ୍ପିତ ଏ ଦ୍ୱାୟ
 ଅବଲୋକନ କରିଯା ମୁଖ ପର୍ଯ୍ୟାପିତ କରିତେ
 କରିବୁ ଇହାତେ ଦୁଇ ହେବେଳେ ଆପଣେ
 ନିର୍ବିର୍କାରୀ ଥାକିଯା ଏ ଦେଶ ଭୂମିନ ମୁଖୀନୁଭବ
 ହେବେଳେ । . . ଯଦି ଅନୁଯାୟି ହୟ ଆଗ୍ରାର ଇହୁା
 ଆପଣ ଆକଳ୍ପିତ ମାରି କରନ ଦେଶ ଦ୍ୱାୟଥେ
 ଦୃଷ୍ଟିଭେଦରୁ ମେନାରୁଦ୍ଧିଗଙ୍କେ ହାଜାର ବିଶେଷ
 ଉବଳି ଇତ୍ତାହି ମର୍ବତ ମମେତ ପାଇନ ଗିଲ ।
 ଅନ୍ୟା ତିଭାର ବିଷୟ ନାହିଁ ଜାନିବେଳେ ଯଦି ଓ ଇହାରୁ

ଦିଗ୍ନ ଦିଗ୍ନ ତୁଟି ଦେଖ୍ୟାଯ ତାହାରେକେ
ମହାଶୂନ୍ୟ ଜଳେ ଏଥାନକାହାର ଯନୋଧେଗି ହରକୁ
ଆନିବେଳ । ଆପନେ କୁରା ଏ ଅଛେଲେ ମନ୍ଦିରି
ଦୌରେ ଆମିବେଳ କୋନ ବିଷୟ ତାବନା କୁରିବେଳ
ନା । ଏଥାନ ଦିଗ୍ନ କେତେ ଲୋକର ମହାଶ୍ୟ
ହିତେଜେ ଆମିନିତୋ ଏଥାନକାହାର ଅତି
ଆଶ୍ରୀୟ ଓ ରାଜ୍ୟ ବୁଦ୍ଧିବଶି ଅନ୍ୟାନ୍ୟକାହାର
ଆନା ଛିଲ ନା ଏଥନ ଉଦସିର ହିଲ ଆନିବାରୀ
ଆପନାର ମନ୍ଦିରବୁଟର କୋଲପାପନା କୋନ ଯାତେ
ହିତେ ପାରିବେଳ । ନିବେଦନମିତି ।—

ରାଜ୍ୟ ଅନ୍ୟ ଦୁଆକେ ।—

ଚରାଚର ମୃଦ୍ଧି କର୍ତ୍ତା ଯେଇ ମହାଶ୍ୟ
ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପ୍ରାଣ ହୁ ତାର ବକ୍ର ନୟ ।

मृत्ति कर्ता अमरीता अनन्त जीवनि
 तारु उडे द्विजिते रूप नहे हर्षनि ।
 ए असिते प्रते आजे राजागीत
 येहे इक सेहे पात्र नहे अनाजन ॥
 तारु पृथि मनमिति बृंगि रुहि शुभ
 असु व आपा ना रुद्रिओ रहात्म ।

इहानिकु पवित्र चूरु प्रशिवाय अपेनकारु
 निकायरु वासी प्रवलेते दैवस्य रुद्रिलि
 दिन प्राणु इडेया छिलेन । उपत राजासि
 द्राज तारु पृथि यतोयोगी रुद्रिलेव ना किन्तु
 हिरण्यन यात्र दिन प्राण्यके आक्षयन रुद्रिया
 छिल । ए भव्यानु प्रसरि इडेल ताहारु वारुन
 इडेल उपानु से बाकि वर्षयते यत्तीपानेव
 यनोरुना रुद्रिया यन्नदे यायी इडेल ।
 सेहे दिनोनिलक्ष्मा ताहारु पृथि रुद्र जनसेना
 अङ्गुह रुद्रिया लिडली प्रशिवाय राजा
 निःसन्दान दिल्ली हडेल ताहारु किंवित

ଅଧିକାର କାର୍ଯ୍ୟକରେ ମେଲାଇ ପୁତ୍ରବନ୍ଧୁଯିବା
ଆନ୍ୟାଯ କିମ୍ବା କାହିଁ ତିଂବ ଅଧିକାର କରିଯା
ଛିଲେନ । ଶିତା ହିଁତେ ପୁଣ୍ୟ ଜାଗାରକ୍ଷଣ ଓ
ଫ୍ରେଡାନ୍ତର ଛିଲ ବାଟେ ଉପାଚ ଏଇ କାର୍ଯ୍ୟର
ଆବେଦିକ କଥା ଆହିରାର ଘଟ ହିଁଲେନ ନା ।
୧୯୦୦ ଅନ୍ୟର ହିଁମା ହିଁଲ ଛିଲେନ ଏଥିଲ
ଶୁଣି ଆପନି ଦୈତ୍ୟ ପରାକର୍ତ୍ତା ଲୋକୁ ମାନ
ଶୌର୍ଯ୍ୟ କୀତି ବୀର୍ଯ୍ୟ ରାଜ୍ୟ ମସ୍ତକ ଯାହା ଆହିର୍ତ୍ତ
୧୯୦୧ ଦେବୀମନ୍ଦିର ଢୁକ୍ଯାଇ ତିବଳାନ୍ତରବି ଏ
ମହାରାଜ୍ୟ ତୁଳ ଶିଂଦୁ ମହିତ ତାହାର କୋଣ
ଆୟୋଜନିକ କାହିଁ ଉପାଚ ଆପନକାର ଉଛ୍ଵା ନିଆ
ପରାକର୍ମୟ ତାହା ଅଧିକାର କରେନ ଏହି
ଆନ୍ୟର୍ଯ୍ୟ ଭାଲ । ଏ ଓ ଭାଲ ଆପନକାର ଘଟିଲ
ପରାକର୍ମୟ ହିଁଲ ଏ ହିଁଲେ ଆନନ୍ଦର ବିଷୟ ବାଟେ
କିନ୍ତୁ ଶୁଣ କହି ଅବଦାନ କର ଏ କି ତୁମ୍ଭି
ହୋଇ ଯାନୁହୁ ଯେ ତୁ ମି କୁଟେ ପୀଠନୀ କର ଏ

अस्त्रलेन शुभेर ॥ एतो मार्ग कि पुरुषार्द इतर
 विवेचना कोणा शुनियाज शुनि आहाडे
 शास्त्राल स्थित इता ॥ ३३ ॥ साधाना विषय
 पुण्यकृपानकार फोटेर वास्तवा इय ना
 शूगालेर शर्करन कोणी नाहि वाराये घदितु
 इतेल उवे तोमार कि गतिक इतेरे कोणाख
 वाईवा तोमार महाय वा वे एवं रुक्षावा
 के रुदिते पारे । एपांतकाठ कोवी घर्दि
 इय उवे त्रुति इन्द्रमणि रुदिले ओ ना पावे
 रुक्षा रैदिल्य मेला योऱ यद्याचि कोने
 अमैमन्योडे मंहार कुरिवे । मरुठुम्हे
 मावरीन आननार पितृ पितामहर मूर्खां
 किते मूर्खांडांडि इतेले कोनकाये दिन
 लातु रुदितेज इत्ताते विरम केन इय प्रथमि
 काह महित पुडियेपिता कुरिया तुणि कि
 द्वित रुदिला । निमादाविले राजावनवडुवाय
 साहार असुरां मेला एवं दर्शमानि कुतर्या

ताईरु पर्वाक्षयेरु आमा हि 'प्रमम' देवी
हइले दृक्षे कोरे भेद । 'पाहारी' राजा
पश्चिमभूति दिवसेरु पंथ विनाय नेतारु
कोलहिल मिङ्गु गुर्जन पुर्य प्रयत्न शहाराजा
नगरी तगडेरु आमे पाहा पूर्वे ताईरु
रूपन छिल कि क्षमता आपैन शक्ति आकाशु
करिया बन रुदिल इमवार्दी मे विरार्दि
उन्मित छिल । प्रथन देवदीप्या नेता
आपैनाराम्भेरु 'पर्वाक्षये दक्षयान' हइले
महजे बलबलुके म० हारु करिया प्रव०
ताईरु प्रतिवादी 'ये क्षेत्र आमिया' हइले
मंगमुक्ते निरादन रुदिल जारूरुरु त्रुति
मंवर्दु रामेकु रुदाइल । एथन मे निमाद
शाजा ए अस्तिकारु डुकु ईशाते तोशारु ए हि
दुक्षि शिवा इष्टा रुद यादि मिंहड महित
तुम्हि राऊरुले ए प्रयुक्त तोशाकु रुहि
आवदीन० प्रयत्ने मूमाइम आँख रुपन

କରିଲା । ତୁ ଯିବୀନ ପ୍ରାଚୀର୍ଦ୍ଧ ଲେଖାଯି
 ହସିଦୁ ମହୀୟ ହିନ ତୋଷୀର ଉଚିତ ଯାହି ଦେବୀ
 ଅମ୍ବୀର ଢରେ ତୋଷୀର ମେତାର ଗୀଥନ ହୈଯା
 ଥାରେ ଇହାତେ ମେଧାନକରି ପୁଜାରୁଦେବ ଯେ
 କିଛୁ ଫେରି ହୈଯା ଥାରେ ତାହାର ହିଂତିଳ
 କରିଯା ଦିଯା ତାହାର ଦିଗିକେ ପରିତୋଷ କରଇ
 ଯାହାତ ତାହାରୀ । ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆନ୍ଦୋଳନ ନା
 କରେ । ତାହା ହେଲେ ରକ୍ଷା ପାଇଯା ଭାବ । ଯାହା
 ଇତ୍ତକ । ଏତେ କରିଯା ମବାଜୁବବଗେ ଓ
 ମୈମନ୍ୟ ଏକତ୍ର ହୈଯା ବୈବିଦ୍ୟା ମେତାର
 ମାଦିନା କରିଲେ ବୁଝି ରକ୍ଷା ହେତେ ପାରେବା ।
 ଏକାରନ ଛୀନ ହିନ ଦୀ ଅଛିଛନ ନୌକେର
 ଯାମ୍ବୋହେତେ ତାହାର ଅଭିର ମର୍ଦା ବୁଝିର ଏବଂ
 କୁବେର ବଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହେବୁଟି କର କହି ଶୁନ ଯାଇ
 ତୋଷୀର ତାମ୍ଭୋଦୟକମ୍ବେ ଜାନେବେ ଦୀଖିଲା । ଯେ
 ତାବେଇସେ ତୋଷୀର ରକ୍ଷା ନଭୁବା ନାହିଁ । କିନ୍ତୁ
 ଯାହି ଦୂଷିତ ତୋଷୀର ପୁରୁତିର ମଧ୍ୟ ହୈଯା

थीरह उद्दे आहु रितापंचेष्ट्रु आवाहन
 नाहि मैत्रा माजना वाहिरु हड्या ममाचारु
 निघिले इवदिग्य पुस्तु हवेक। इहार
 पाहाते अभिरुचि खिंच आहाइ देवीमीशा
 हड्याते लोकु ओडियु लह उहारु दिक्षन
 गोनु कुदिवा ना। तोमारु दशा गोजाविल
 ओ प्रकृत्याङ्ग माहेर मत हवेक ओर्मायि कि।
 इति । —————

राजा अन्य राजावै । —————

दर्शहारि उगीवात तोर्हयि नाहि आन
 डेकारने दर्शदे हड्याच अज्ञान।
 आनेतारि मत विन्य काढ नाहि आन
 इहाते हड्येवे उद्दे अकल निर्वाचि
 विन मैत्रा राज्य मदे विजान हड्या
 कृनवृ सर्ग फिति देष्य मत हड्या।

ଆଚାର ଦିତ୍ୟର ହୀନ କେତେ ଯହାର୍ଥୀରୁ

ପ୍ରତ୍ୟୁଷର ପତ୍ର ଇଥେ ଶୁଣି ଶବ୍ଦମର୍ଗ ।

ବଟେ ଆଖିଲେ ଯେ ପୁରୁଷ ଲିପିଯାଇଲେ ଏବେ
ପୁରୁଷ ପୂର୍ବକାଳେ ଆମ୍ବାର ପିତାଙ୍କ ଦୈଵାନୁ
ଗୁହେ ବିନ ପୁଣ୍ୟ ଇଯାଇଲେମ ପରେ ପିତା ଯହା
ରାଜ୍ୟ ଦୈଵନେରାଯିଲ ଏତଦୁର୍ଭେ ଦେଖ ତାହାର
ମନ୍ତ୍ରାନ ଉନ୍ନମାଗିଇ କରେ ତାହାର ମୃଦ୍ଧି
କରିଯାଇଲେ । ଆମ୍ବା ଦୈଵାନୁଗୁହିତ ଏବଂ
ଆମ୍ବାର ମାତ୍ରା ଓ ଦୈଵଶିକ୍ଷିତ ତାବେ ଦୈଵର
ମହିତ ଅନ୍ୟର ଜୁଲାତା କି । ନଚଦୈଵାୟ
ପରିବଲୋ । ଦେବତାର ମହିତ ନରେର ପୁଞ୍ଜ
ପୁଞ୍ଜକତା ମମ୍ବକ ଆପନି କି ଆଖିଲାକେ ବାଧ୍ୟ
ନିଯା ଅହକୀର କରେନ ଦୈଵ ପାତିକ ଏହ ଏବଂ
ତାହାର ମୃଦ୍ଧି ଏହ ମତ ଦେଖ ଯାନ୍ତାତା ମନ୍ତ୍ର
ଦିଲ୍ଲୀପ ପ୍ରଭୃତି ଘଟେ ଦିକୁପତି ଛିଲେନ
ତାହାରୀ କୋଥାଯ ଇମାନିକୁ ଦୂର୍ଯ୍ୟାଦିନ କୁହନ୍ତି
ମହାଦେଶ ଆକ୍ରମିତିର କର୍ତ୍ତା ଭୀଷମ ଦ୍ରୋନ

ତାହାର ମହାସ୍ନାମ ଏବଂ ଉପାଦିତ ଆନେକ ଶହା
 ଯାଜାନୁଗୀତ ବୈନବାମୀ ପୌତ୍ରପ୍ରମାଣ ନାହିଁ ତାହା
 ଅଞ୍ଚ ଆକ୍ଷୋହିନୀତ କି ଯତ ଦୈଵକିମ୍ବେ
 ମସନ୍ତକେ ମହାର କୁରିଯା ଆମ୍ରମୁଦ୍ର ଅଧିକାର
 ପୂର୍ବକିର ଲୃପ୍ତବୟ ମଧ୍ୟ ତାର ଦେବ ନାରାୟଣ
 ଉତ୍ତରବ ଦୈଵ ବଢ଼ ମତ୍ତ ହିତେ ହୟ ଦୃଢ଼ ଇଥେ
 ଦ୍ଵିତୀୟ ନାମର ରାଜନ ଏଥିନ ଆନେକାବୁ ଓଡ଼ିଶା
 ଦେବୀମନୀଯାର ଚର ଯାହା ଆଦ୍ୟାନୀତ୍ତ ଶିଳ୍ପ
 ମୀରଦେବ ବୀଞ୍ଚ ତାହା ଦିଯା ଦୈଵନୁଗୁହୀତେର
 ଦିଗେର ମୁତ୍ତା କରେନ ଏବଂ କୁଦାଚ ଭାବାନ୍ତର
 ନା କରେନ ତବେ ରକ୍ଷା ହିତେ ପାଇଁ ଯଦି ଆପନ
 ଖାଦ ଆମ୍ରକ ମେନ୍ଦ୍ର ଏଥାନକାବୁ ଅଳ୍ପ ତାହାତେ
 କି କରେ ମହମୁଦବି ମୃଗ ଶତଳୀତେ ଏକ
 ମିଠୀପୁତ୍ରର କତ୍ତିଲା କାକେର ପାଲ ମେନ୍ଦ୍ର
 ଗୋଟି କୁରିଯାଇନ ତାହାର ଶବ୍ଦୀ ଏଥାନକାବୁ
 ଦୁଇଟାର ରାଜପରାକ୍ରାନ୍ତ ବୀର ଯଥେଷ୍ଟ ମାଯାତ୍ତର
 କାର୍ଯ୍ୟ ଥାକୁବ । ଏ ଅନ ଦୈଵଭାଜନ ଦେବଦତ୍ତ

पराक्रम मनुष्यान् हस्ते रुद्धान् मारी
 सन्मुखी हस्तेषु तोयोर् प्रोत् किं प्रवृ
 क्त वज्र मार्दि आवेनकारि शार्द्धं किं घमि
 आवेनकारि बाह्यदर्शि राजाग्निं एकता
 हस्तेषु मनुष्यान् हस्तेन दैव चूदूर्जुर् एका
 आशारि मूर्मारिः ।—————

एकारि त्रितापे एहे शुनह राजन
 एका मिंहे किं कविते छाणि पशुगानि ।
 एका डीय शत उडे छुक पुणि शास्मे
 एकेश्वर पुरुष्वर दासव दिनाशे ।
 एकेला वाशन दलि पातोले लइल
 एक नयहरि हिरन्याक विद्यारिल ।
 एकारि प्रातोपे भयु कर महाशय
 अल्प हेतु अवृत्तेतु ना हउ निक्षय ।
 विवेचन करिवा देवीमिश्रा शिरमी राजास्मे
 आवेद्य तहे अतेष्व परवीन लोड बन्नित
 हउ लीडि शास्त्रोऽजु दूरीति आकाङ्क्षित ना

इहेवेन। लोते पाप पापे मृत्यु मारा
जाए तानिवेन देख कुकुपति इतराकु
परवेन लोत करिया उत्तर लाले ताहार
कि गतिकु हेल आननि ओ दृष्ट स्मै दमाना
इय देवेन महित मारवीन इहेवेन विवादे
पुत्रीन्य पाइते पापे। देख जानवान देवेन
विवाद करे ना ताहार माफ्ही वमाप परिक्षित
से विष पुतिकार विद्याते अति पारक
चिल देव विद्यावीर्य वाहतिल। मन्त्रिरा कहिल
महाशय आजा करव कि हेतुकु कमाप
वाहतिल। ताहार विशेष करिया कह
आयरा ए पुमनि कथन शुद्धन करि नाई।
उजा कहितेज्जन उबे तोयरा यनो
योगी कहुइ ए शहाभारहतर एक अदीयि
शापर घुणाते चारितरोंके अभियन्तु
अनुति महाराजा परिक्षित सर्व मतावादी

यित्तुन्नियमस्तु पुकार्टप्पुक्षिप्प। एक
 हिंसा यग्नियाते वायर्जये अग्नाता ३ मत्ता
 गीवेत् सरि इहेते तिन्न इष्टेषा दैवेष्टु
 दन् पुदेश करिष्याच्छिलन् अताह त्रुष्टु
 त्रुष्टु इहेया जल ना त्रो अनेते विदुत् अल
 अत्तुष्टन् रुदिते २ देखेन एक रुष्य मृत
 तिन्न जल लिक्ष्टेर शब्दे देखेन ना एक
 जल (प्रोन्तुष्टु रमिष्याच्छ उहाके बाबर १
 जिज्ञासा करिलेन उहाते उत्तर ना पाइया
 कोनाच्छित् इहेया मेहे चाने मृत्यु मर्म
 छिल उहामेहे मूलिर गिलाय बेष्ट्य करिया
 दिया त्रुष्टन् रुदिलेन। मे मूलिर पूर्ण
 रमिष्या मिताय दिग्भिर देखिया उष्ट्याय
 उष्ट्यायित् इहेया जल इस्तु करिया शाप दिल
 ये जल मृत्युमर्म अप्याय निताय गिलाय
 उहाइयाच्छ अर्था इहेते संक्ष हिंसा
 उहाके उक्त राजमन्त्रे इन्द्रक पक्षाय

काल विदित इहेल मे वालि छिल रुआ
 परिस्कित। यहायनि योन भज्जे इहेशा विवरन
 जापनेते अत्यन्त शोकातुर हइया। पूर्वके
 कहिलेन पूर्ण यहाराजा परिस्कितउके शाप
 गुरु करिल। ए अनुचित क्रिया आमार आशुम्ये
 आतीथि इहेयाचिल आमरा ताहार आतिथि
 करिते अताजन इहेलामे आमारके जात
 छिल ना ताहाते यदितु किछु अपराधि करिया
 थाहे ताहाते ए यहाशान घाति करन अति
 अविचार अत्यव ताहाके शापातुर कर।
 शुनिपूर्ण निवेदन करिल शितः आगि यहा
 कोपे ए शाप दियाछि इहार विमोचन
 आमार मात्रा नहे इहा आनिया ये कुर्बा
 हय आजा हुक्क। इहाते मे करि विश्व
 इहेशा विन्द्र रोदन करिलेन एवं जानिलेन
 ज्योग बुद्धशान योठन इहेते पाँचे ता
 ताहार एक शिघ्र दिया राजाके समानि

दिलेन राजा सर्विवाहे युक्त शासीधि^१ भीड
 हयेया एवं प्रूङ्कि छानेव यद्या एवं यस्ते
 इठना करिया उहाङ्कु शप्त इप्त यत्ति
 दिवात्तेव इठना करिया उहात्ते अवाच्छिति
 करिलेन। प्रबृ आतेकृ सर्विष्टावि उक्ता
 पनि इठने आनन्दारदेव उपदि ओऽनि यद्यु
 यान्नला करिया रहिलेन। एहे यत्तेष्ठु दिवम
 गति इत्तेसक्त्य दिवमे उक्तकु सर्वराज
 बाल्लवगीतेर महिति पूर्वुत इत्या गति
 करित्तेछिल मेहे यत्ते कम्यने युक्त्वा दरिद्र
 ईल ओ सुख्याति पोऽनेव आशय राजा
 अविकृतके यत्ते दिव आले उक्ता करवाए
 यस्त्तितु इस्त्तित्य गति करित्तेछिल।
 प्रथम यद्यो काम्यकपी लागीराज युक्त्वा गेत
 वेले गति करित्तेछिल हितके देखिया
 तिजामा करिल कह हित कोथाय गिरन
 कर्द्युत्तेज। कम्यने बलिलता शुनियाति

आय उक्के नामा राजा परिषिताके दूर्लभ
करिबेह आसि उक्कदु बले ताहाके उक्का
करिब इहाते आमार पैहिक पाँव त्रिकर
दूयेहि एल हइबेक । ॥१॥ इहा शुनिया नामा
बलिल तुमि निर्वाहे दुःखन कार मार्दी रक्षा
करे उक्कक दूर्लभन । द्विज बलिल ऐत
फेत कह उक्कक कोन छार आसि उक्कदु
प्रजाहे अवाहे छाजाहे रक्षा करिब एक रक्खा
शुनिया नामा कोपान्ति इहेया बलिल आसि
उक्कक शुन तुमि क्षमत ओहा देखिब देख आसि
हृक्षे दूर्लभ बलि रक्षा कर देखिय ऐत
कहिया निज मूष्ठि दिनिया याइया दूर्लभ
करिल बृक्षके ताहार शहाविषानले बृक्ष
अमूले उम्म हइया गेल । उक्कका॒ ओहा द्विज
उल्लुक करिया ताहारि एक मूष्ठि उम्म बारन
करिया पुनर्वार मेहि गते॑ यहामन्त्राभिषिक्त
करिया मूर्तिला करिल ताहाते एकडी अक्षुर

हैया। मैं हाँ वृद्धि प्राप्ति एवं पूनर्जीवन में है
पूर्वज्ञता वृक्ष हैल आहार किंकित विभेद
हैल ना। आहार काळीहरव खारन एवं
आह आरोहन करियाजिल एवं वृक्षर
महित उभय हैल मे ओ आरोहन जीवन
पाइल। ए ममकु देखिया तागिराजी
विश्व इैया दुश्मनके कहितजेन द्विज
आणि जानिलाया तोयार किंतु आज्जे आयार
दृष्ट उक्त उक्त करिते किन्तु विश्वानि दैव
किया आहारे किंशत उक्त उक्त उक्त उक्त
किंतु उक्त उक्त दैव निर्वचने घटितु
आहारे केह इय अकियानि दैव दिरोहे
काकु नाहिक कुलांन। शुन द्विज तुयि
दृष्टितु किंकित विनाप्ते दैवर राती जन्मा
इते ठाइ उक्त उक्त ना आणि तोयारके
एवं यहाविन दिव याह आर आओरे नाहे।
अत दलि तागि दृष्टि आनन्दकु महकु हैते

शानि कालिका प्रिया शोभा शन मोहा पुतिलिल
 पुराव इव । ॥ हिजा आहिलेन दीन पाईलाश
 ब्रह्मका दैव दाटे अउपर दैवदेव सहित
 दिवोवै अनुष्ठित देव पवित्रा वाहिकारी
 पूनर्वर्त्ता निजानय गमल करिलेन । अउपर
 आनदान लोक आने दैव दिवोवै उद्गु नाहि
 दिवेचना करिओ । यशुदा जिजासा करिल
 शहाराज पंचे मे मन किं कर्म करिलेन ।
 दोजा कहितेजेन शुल नाग दृउम्युष्मे
 अम्हाद पाईशा आनिल राजार मशीणे
 द्रुक्षन वातिरेक याईते पारे ना अउपर
 डाहाद परिवार मशक्तुई हिजकृते इहेश
 कुत्तुलीन घने ओ पूष्प राजाके आशीर्वट्टाद
 कावन हाते करिशा लहिलेन कौशकृती नाग
 राज उहारि एक घलेर यादी कीटकृ
 इहेश पुरवण करिशा रुहिलेन । नाग
 किहित रेला रकि आहिते याईशा राजार

कमीने उन्हित इयां मेहे छल ३ प्रस्तु
 राजाके आशीर्वाद करिया बुद्धिन मणिर
 मवी वसिले राजा कहिलेन ए कि इल
 मूर्य अमुगि इल आमिया आमोब
 दुक्ष्मान व्यप्त इल ए हि ठम्कार
 इशाते आमार वस्त्रान अन्वावे एते
 रुहिते॒ मेहे आशीर्वादीय छल उनी
 करिते॒ ताहारि एक फलेर मवी देखेन
 एक रुटि अति कुदुरुक्षवन् ताहार मूर्य इक
 बन्देशिया राजा रुहितेन शुन तोयरा
 मवे दुक्ष्मान व्यात्यय इय एत भाल नहे
 अउपर ए रुटि उक्षक इयां आमाके
 संहार करक। एत रलिया दुक्ष्मालुते
 रुटि धुइया रलिलेन ए उक्षक इडक सक्लि
 दलिल इडक न। रुमिरुनी नानि निज मूर्ति
 दियिया राजाके नाश करिया अक्षरिके गति
 करिया प्रमुख करिल राजार शङ्कीर विषानले

द्वाहन हैया गोल । आर पे लेखिया छिटेन
मेना मजान कुरिया सम्माद दिते ताहाते
शिशकानेर अनुत्ताव हैल आपनि आपनाके
पे जान कुरिया छेन ताहा प्रथन त्यागी कुखन
प्रथन मे काल गित हैल प्रथन रातोम
क्षिरिया बहित्तेजे जानिवेन । आर पे ओ
वास्तुव्य बटे यदि मरवर्काल प्रक जन विभागी
गुम्तु थाके उबे अन्नेर गित्ताल्लर हवेके
ना भगीरानेर मूक्का बिठार वर्षाकाल गिते
शीत्तर मरागिय हैवेहे अउप्रव खालक्ये
प्रकृ अनेर वृक्षि ताहाते लोक्ति केन
निगूँच विवेचना कुरिले जानिते पारिवेन ।
आम्यार विवेचनाय पहे जाइसे पहे अपानकार
तदु अनेक कालावधि रायझ कुरिया
आसित्तेजेन प्रथन दैव ईहा प्रक जनके
मरवर्काविन कुरिते पर्व आपनि ३ आपन

यने बुद्धियाज्ञन आणि दैव पंराकाळे ग्रहत
इडीले निवारेऱ महित पुन इस्ता कुटिया
थाकुवार आटक इय ना नतुवा बुद्धि आवे
नार शेषदमा उपस्थित केवल देवीमीयार
ठारेर करिन मरूऱ्ये म०हार इयेनवा ए
दुड्हेतोहे आणि मग्न याहाते आवनकार
इच्छा इय मेहे मत करिवेन। आद्य एथनकार
माघेत पुन्नुत याते देवीमीयाय पुन्हान कुटिल
आववान पूर्वक जापनमिति ।—

द्वाजा अन्य द्वाजाके ।—

मुक्तिस्थिति पुन्य याहार आजा इडेते ।
पुराय कुटिया डाई ठरन पुणीते ।
दिमाविमा मूर्ति नदूक ये ऊन कुटिल ।

ବିମ୍ବ ଶାନ୍ତି ପୃଥିବୀର ମଧ୍ୟେ ପୁଣ୍ଡାଳିଲ ।

ତାର ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟରେ ନତ ହଇଯା ନମ୍ବୁ କୁଣ୍ଡ ।

ତ୍ରାନ ଦିବରବାକୁଣ୍ଡ ପୁଣ୍କାଳ କୁଣ୍ଡ ।

ହିନ୍ଦୁ ମୂର୍ଖିତେ ଦୁଃଖନ କ୍ଷତ୍ରିୟ ବୈଶା ଶମ୍ଭୁ ଏହି
ଚାରି ବନ୍ ଆଦି ପରେ ଇହା ହିତେ କୁତେକୁ
ଆତି ଓହୁର ହଇୟାଇ । ଅଜନ ପଞ୍ଚମତେ
ଶାକ ଈଶବ ରୈଷବ ଶୌର ଗାନନ୍ଦ୍ୟ କ୍ରୂତ ଆଛେ
କଳ୍ପ କଳ୍ପାକୁରେ ଏହି ମଯନ୍ତି ଅଜନ ଉତ୍ସ ପଥ
ଏହି ବେଦ ଓ ଶାନ୍ତି ବେଦୋକୁ ମଯନ୍ତି ବିମ୍ବ
ତତ୍ତ୍ଵିନ୍ଦ୍ର ଅଧିମା । ବେଦ ପୁନାର୍ତ୍ତା ବିମ୍ବାହବିମ୍ବ
ନୁଦ୍ଵିନ୍ଦ୍ରଯଃ ଏତାବନ୍ନାତ୍ । ଇହା ଆସନ୍ତା
ଆନି ଏବଂ ଏହି ଯତ ଆଠରନ କୁରା ଯାଇତେଇ ।
କିଛୁ କାଳ ଗାତ ହଇଲ ପଞ୍ଚମ ମମୁଦୁ ତୀରେ ଏହି
ଜନ ପାପିତୁ ଯାଇଯାଇ ନାମେ ଓହୁର ହଇୟା
ତାହାର ନିଜକୃତ ଶାନ୍ତି ପୁଣ୍କାଳ କୁରିଯା କୁଏକ
ଜନ ବଲବାନ ନଷ୍ଟ ଲୋକ ଏକ ମନୁନା ହଇୟା
ଆନେକ ଲୋକେର ଆତି ଦ୍ଵୀପ କୁରିଲ । ଏବଂ

ताहारिगीहे हिन्दु विश्व पैथेके विपर्यय
 गति कराइया गजलगाने करिल इहा
 वातिरेके एकाने अत्य विश्व आदि किंजु
 पुठार छिल ना। हिन्दु विश्व ब्रूङ्गन उपतम्यन
 हइले त्रिमक्षा कालेते करिवेके उजन
 योजन इत्यादि करिया समस्त जन्मान्य
 लोकके मत पैथे गति कराइवेके एवं पाणि
 यज्ञ दानादि करिवेके वेद ओ जन्मान्य शास्त्र
 अद्वियत विवेक। क्षत्रिय राजा आनेत
 वाचकरने आदि राजा शासन करिवेके
 एवं नीउ शास्त्रानुसारे पुत्रा लोकेते पुति
 पालन करिया सर्वाधिक राजा इया विपू
 मेवा ओ देवार्थना पुत्रिया इत्यादि करिवेके।
 दैश्य कृषि कृष्ण शूद्र द्विज मेवा ताहारदेव
 पूर्वान किया एवं आदि उजन द्विज राज्यानु
 सारे करिवेके ब्रूङ्गन भोजन यथोश्चित्त
 कराइवेके इहार विपर्यय ना हय ताहा

ହିଲେଇ ପାପ । ଏହିତେ ଏତ କାଳ ଗାଁ
ହିତେଜେ ଏଥିନ କରଣ ଦିବସ ହେଲ ଓ ତାର
ଦେଶୀୟ କରଣ ତାନ ପୁଣି ଆଗ୍ରହନ କରିଯା
ଯମିଲ ସମାଚାର ନାମେ ପୁଣ୍ୟ ବାନ୍ଦିଲାର ସାମାନ୍ୟ
ଭାଷ୍ୟ ପ୍ରକ୍ରିତ କରିଯା ପୁରୁଷ କରିତେଜେ
କୁହେ ପ୍ରକ୍ରିତ ସମସ୍ତ । ଏ କି ତାହାର ଉଦ୍ଧତ ଘରି
ଓ ଅଞ୍ଚଳେ କିନ୍ତୁ ପୁରୁଷଶାନ ଖାକେ ଲିଖିବେନ
ମତୁବା ଅନୁମନ୍ତାନ କରିଯା ଝାଡ଼ କରିବେନ ଘରି
ଏ ଶାକ୍ତ ନିତାନ୍ତ ତବେ ଆର ସମସ୍ତଙ୍କ ଆପଥାପ
ତାହାର ବିଶେଷ ଜାନିତେ ହିବେକ ଯେ ଲୋକେରୁ
ଆମିରାଜେ ତାହାର ଦିଗିକେ ଦେଖିଲେ ବୁଦ୍ଧା ପାଇଁ
ଇହାରା ଯହାଜନ ତାହାର ମନ୍ଦରେ ନାହିଁ । ଇହାରା
ଶାନ୍ତଶୀଳ ଦୟାଶୀଳ କ୍ଷମ୍ୟବନ୍ତ କମଳ ଅନୁଷ୍ଠାନ
କୁହନ ପରଦୁଃଖେ କୌତୁର ଜୋତେନ୍ଦ୍ରିୟ ଆହିଁ-ମରୁ
ଏଥନ ଲୋକ କୋନ କାଳେ ଆମାର ଏ ପୁଦେଶେ
ଦେଖି ନାହିଁ ଏବଂ ତାହାର ଦେର ଏହି ସାମାନ୍ୟ
କଥା ଆନନ୍ଦରେ ଲୋକ ସମୀଦରେ ଶୁଦ୍ଧ କରେ

अब० कुत्तक लोके गुहन् ओ कुरियांज्ज
 ताहारदेव ओ दियु जानेर लक्ष्मन। ताँन एवं
 आङ्गर्बा येयत ताँसा ताहारा नहे एव०
 ताहारदेव शास्त्र मे जात्यांषा दाखिला
 कथा मृक्तु नहे। इहार यत उन्नप बेटो
 हइल यदि तीवानेहु शक्ति उरे आर मृक्तु
 शास्त्र मृहार ब्रह्मिवेन ए ऊल अनुमक्तान
 ईहार ये किछु जात धारेन लिपिवेन। आरु
 चिरकाल गित हइल आपेनकार जाखलेर
 विवेन निनि बाराय ता जानेते सोऽभित
 जिवाम मधुति नवनाशीर रायेर भाडा कमल
 नयन आमिया मरव क्षोडर निट्ठि जन्माइ
 प्राक्षिल ताहार द्वातु नुगेचर हइया
 धाकिवेकु एवं दिवम मे अपूर्व मृत्ति
 शास्त्रनि मूरद नुक्त शृणिवाते अभिनिवेशित
 जिल इति इत्ये एवं दिवम दैवकर्म ताहार
 आङ्गर्बाय शृणिवा कुरिया अनेक॒ मृगी

ইত্যাদি পঞ্চ ইনন কৃষিয়া আনন্দে পরিপূর্ণ
 ইয়ে। অসাধীয়ে রাত্রিকালে আগমন
 কৃষিতেছিল আদাতন্ত্র কুনন পঞ্চাত কৃষিয়া
 হাতেই মহাব্যাঘু ক্ষমলনয়নকে ; সৎ হাত
 কৃষিল। এই যতে বিৎ শতি পুনী ইত্যা
 কৃষিয়া মে ব্যাঘু মারা পড়িয়াচে ইহাতে আভি
 শোকাতুর ইওয়া গিয়াচে ওপৰে কিন্তু নই
 দৈব লিনির বাবা কুনন যতে ইইতে পারে না
 পারে তাহার স্তৰী অনুমতা ইয়েচে তাহার
 জ্যেষ্ঠ পুণ্য ওপৰুক্ত তাহাকে সমস্তে' পাঠীন
 যাইতেচে আঘাত আকাঙ্ক্ষা তাহাকে তাহার
 নিতার পদে নিষ্কৃত করেন। যাগবৈরু
 মানব চৌধুরী তাহার নিতৃ নিতায়েহের
 মুখ্যাতে মুখ্যাতান্ত্রিত ছিল এখন মে আপনে
 রাজা ভাই পাওনতে আভিবাদ দুর্লভ পুজা
 লেকের ওপর সর্বদা দোক্ষনতা করে
 কৃত ত তাহাতি রাখিয়া দস্তুর্বাস্তিতে পুরস্ত

ভিন্নাবিকায়ের লোকেরদিগুলি পীড়া বশ
যাতে করিতেছে তাহার নিবাড়ন নহিলে এ
পুরুষীয়ে লোক তিষ্ঠিতে পারে না অতএব
তাহাতে যনোয়াণ করিতে ইল ও অফ
লেখ অন্ধবীরী ঘাঁথদীয়ে লোক সম্মান
করিবেন। এখনকার আমির লোক ও
তাহাতে পুরুষ ইল ওখনকার সর্বাংগ
আপেক্ষা জানিবেন শুনিতপুরের তাগিরনি
মল্লিক মহাবীর এবং দুর্জ্য পঞ্চকান্ত এবং
মল্লগুদ্ধেতে বিচক্ষণ বৎসরাবধি এখনকার
মেনা পুরিষ্ঠ ইয়াচে এখন শুন। এল
সে আপনকার সেনাভিতি কোন বিষয়
মনস্তাপিত ইয়া বিবেকী ইয়াচে তাহাত
বিম্ব জ্ঞানেতে পুনরায় তাহাকে স্মরণস্থ
করা পৈল জানিবেন। আবশ্যিক ইয়া
লিখিতে পাঠান ঘাঁথক রাজা মহেন্দ্ৰ
রামের পঞ্চলোক ইওনে দেবেন্দ্ৰোয় কৃতি

ଇହୟ) । ଆପନଙ୍କିବେ ଦେଖନେର କାରଣ କ୍ଷୋଭିତ
 ଆମ୍ବାର ବାମନା ଘରିତୁ ଏ ଅଥଲେ ଆଗିଶନ
 ହୟ ବିଶେଷ ଲିପିଲେ ଆମି ଓ ପୁନର୍ବୟ ଆପନ
 କାର ମାନ୍ଦିରଥ୍ ଯାହାମୁଦ୍ର ଗତି କୁରିବ ତାହାତେ
 ଦୂଇ ହବେକ । ପୁଅ ଏହି ଦ୍ଵିତୀୟ ଗୋକୁଳାନନ୍ଦ
 ମିଠ୍ଟ ସେ ମୟୁତି ଆପନ ପୁତ୍ରାପେ ମହେଶ୍ୱରୀ
 ପୁର ଅଧିକାର କୁରିଯା ପରମ ମୁଖୀ ଇହ୍ୟାଜେ
 ମେ ଆମ୍ବାର ନିତାନ୍ତ ଅନ୍ତରମ୍ଭ ମେ ଓ ଏ ମୌଳେ
 ଓପରିତ କ୍ଷିତିଭାବାନ୍ତମ କୁଞ୍ଜ ଇହ୍ୟାଜେ ମେ ମୂର୍ଖେ
 ଗୋହାଗୋରାନ୍ତି ପୁରାଜେତୁ ମତ ଇହ୍ୟାଜେ
 ତାହାର ବିବନ ଅବଧିନ କୁରନ । ନାଥପୁରାବିନ୍
 ଯଦୁମେନ ରାଜାର କୁମାର ଗୋହାଗୋରାନ୍ତି ଓ
 ତାହାର ପାତ୍ରପୁତ୍ର ପୁରେଶ୍ୱର ଏହି ଦୂଇ ଜନେତେ
 ଅଭିଶୟ ମୟୁତି ଏକତ୍ର ଥାରେନ ମଦାଇ ପ୍ରେମୀ,
 ଲୀପେ କାଳକ୍ଷେତ୍ରନ କୁରେନ । ଇତି ଯାହୀ ରାଜୀ
 କୁମାର ଏକ ରାଜ୍ଞେ ମୂର୍ଖ ଦେଖେନ ଢୀର୍ହାଟୀର୍

नीलद्विज महाराजार चन्द्रोदली नामा परम
 मुस्तकी कन्यार महित डाहार बिबाह होइতেছে
 किया सकोनन ना होइते निदृष्ट भवि होइল।
 मेहे अनुशोष्ठे पागिल बड়ই जান हও होइया
 पुत्राते लोकेहरदেহे ओंपर ओंदेह रुबिते
 पुरुष। इजार एकुहे पुण्य आर नाहे अत्यर
 पुण्याथे बड়ই मनस्तापित पुण्य मध्या प्राणे
 श्वराके डाक्षिया बलिल पुण्य तोर्धार मध्यार
 बिद्याय आग्नि नितान्त शोकादृत इहार
 ओंनाय घदि तोया दिया किछु होइते पांते
 कहिया किछु काले ये कि काले एषत गिति
 तोयार महित नितान्त मध्यीति जुग्मि याद
 कोশल रुबिया बिबरन जीपन होइते पारह
 एবং ইহার পুত্রিকার তোয়া হোইতে হয় এ
 আগ্নার নিতান্ত সাহার্যাত। পাত্রপুণ্য রাজ
 দুর্মাত্রের নিকটে মস্তি থাকেন কিন্তু আজীব
 হয় না এই মরতে ক্ষমক দিবস যায় এক দিন

ପାତ୍ରପୁଣ୍ଡି ରାଜପୁଣ୍ଡିର ଭାବେର ବାତାୟ ଦେଖିଯା
 ଯହୁ ପୂର୍ବକ ଜିଜାମା କରିଲେନ ମଧ୍ୟେ ଯହା
 ରାଜ ଆଶି ଆପିନଙ୍କାର ଚିହ୍ନିତ ଭ୍ରତ ଅତ୍ସବେ
 ଦୀନକେ ଆଜା ହେଠଳେ ଯେ ଇହାର ବିବରନ କି ।
 ରାଜପୁଣ୍ଡି ମହନ୍ତ ପୁଣ୍ୟ କରିଲେ ପାତ୍ରପୁଣ୍ଡି ତାହା
 କେ ମୁଦ୍ରଣ୍ୟ ପୁଲୋକୁତ୍ତ କରିଯା ଆଶ୍ୱାସ କରିଛ
 ଭାବନା କି ଆଶି ଜାନି ଚାନ୍ଦହାଟୀର ନୀଳଦିନ
 ରାଜାକେ ଏ କାହିଁ ଉଥା ମହାଜ ମାହିନ କରିବ
 ତୁମି ମିର ହୋ । ତାହାର ଆଶ୍ୱାସେ ରାଜକୁମାର
 ପୁନରାୟ ପୂର୍ବ ମେତ ହେଲ । ରାଜୀ ପାତ୍ର
 ପୁଣ୍ଡିକେ ବିସ୍ତାରିତ ଦାନାଦି ଦିଯା ମନ୍ତ୍ରକୁ
 ଲେନ ପରେ ରାଜକୁମାରଙ୍କେ ଲାଇଯା ପାତ୍ରପୁଣ୍ଡି
 କୁନ୍ୟାର ଓଦ୍ଦେଶେ ଚାନ୍ଦହାଟୀ ଗତି କରିଯା
 ଶୁନିଲେନ ନୀଳଦିନ କୁମାରୀ ଯୁବତି କୁନ୍ୟା କିନ୍ତୁ
 ମେ ଏକ ମୁହଁତ୍ତ ପୁଣୀର ମଧ୍ୟେ ପାକେ ପୁତିଜା
 ପୁରୁଷେର ମୁଖ ଦର୍ଶନ କରେ ନା । ଇହାର ତୁମ୍ଭେ
 ପାଇନାଥେ ପାତ୍ରପୁଣ୍ଡି ବିବେଚନା କରିଯା ରାଜୀର

यालिनीरु वाटीते वासा करिया रहिलेन ।
 विश्वरु ठोका कड़ि दिया यालिनीके वज्र
 वशीहुता करिलेन यालिनी इहरामेर आजा
 वह । पात्रपृथ मालिनीके कहिलेन तुम्हि पदि
 याजकन्यार पुरुषादर्शनेन ठोका कहिते
 पारह उवे तोगाके महम्म मुद्रा पुद्रान
 करिब । यालिनीर महित याजकन्यार
 पुनर्य आजे एक दिन विश्वरु यत्क पूर्वक
 जिजामा करिल ठोकुरहि आगाके निताङ्ग
 आननकारु दोसी आनिया भालवाम आयि
 किछु जिजामा करिते ठाहि किन्तु शंका
 हय पदितु ना रहेन उवे निताङ्ग क्षोड
 इहेवेक । याज कन्या कहिलेन क्षोड
 पाइवा ना तुम्हि याहा जिजामा करिया
 आहा निताङ्ग आयि कहिव तोगाके ताहार
 मादेह करिओ ना निःशक्ति रहे जिजामा
 कहेह । यालिनी कहिल ठोकुरहि किगरभ

आपैति पूरुषेर मूर्ख दशन कठेन ला
 इहार कविन कि जाजी करन द्रोजकनार
 किञ्चित विषादित इयार क्षिलेन शुत ए
 आशार आकथनीर विवरन किन्तु वाक्य
 पीनापे' कहिव सावहान राहाके क्षिओ
 ना आगि आतिम्भदा जन्माजि पूरुद' जलो
 आगि रुपोती छिलाम अमूक बने आर्यार
 देह वाना किन्तु आर्यार तिनषि अति ज्ञोटे
 दा क आर्यहा दूरे जले मेह बने वास
 नषि मेह गाने ठडि वाहारदिगीके आहार
 देह मेह रुले 'ग्रामीय लोकरा मे बने
 आउन दिया गेल आउन आर्यारदेर वासार
 निकटे अहिल आगि राहा कोले करिया
 क्षियाजि आर्यार म्भाशी ओ ताहारि निकटे
 बसिया जिल आगि कान्दिते । ताहारे
 क्षिलाम रुपोत हे एथन कि करा याइवक्तु
 आगि निकटे इहेन आमिया राहा ओजिते

ପାଇଁ ନା କି ହବେକ କଣ୍ଠୋଡ଼ ବଲିଲ ଯଦି ଅଗ୍ନି
 ଆହିସେ ତବେ ବାହୁଦେର ମହିତ ଆମରା ଓ
 ପୁତ୍ରିଆ ଯଦିବ ଏହି ପନ । .. କିଛୁ କାଳ ପରେ
 ଆଉଳ ଲିଙ୍କଟେ ଆମିବା ଯାତ୍ରେଇ କଣ୍ଠୋଡ଼
 ଏଷତ ନିର୍ଦ୍ଦୟ ଓଡ଼ିଆ ପ୍ରକଳ୍ପ କରିଲ ଆମ
 ବାହୁଦେର ମହିତ ପୁତ୍ରିଆ ଯରନୀୟ । ଅତ୍ୟବ
 ଆର ପୁରୁଷେର ମୂଖ ଦର୍ଶନ କରିବ ନା ଏହି
 ଆମାର ପୁତ୍ରଜୀ । ଏହି ମରୁ ଦିବବନ ଯାଲିନୀରେ
 ଥାରୀୟ ପାତ୍ରପୁଣ୍ୟ ଶୁଦ୍ଧ କରିଯା ତାହାକେ ଶହ୍ରମୁ
 ମୁଦ୍ରାୟ ତୋଷ କରିଯା ଆର କୃତ ବାନ୍ଧବ
 ଠାକୁର ରାଧିଯା ମର୍ଦତ୍ତ ଗାନ କରିଯା ଭୁମନ
 କରେନ ରାଜପୁଣ୍ୟ ଗାନ ବିମ୍ବନ ବଡ ପାଇବୁ
 ଇହାତେ ତାହାରଦେବ ଗାନେବ ସ୍ଵାଧ୍ୟା ବାଞ୍ଚି
 ହଇଲ ମର୍ଦତ୍ତ ଗାୟକଣିନ ମୟନ୍ତିହ ଆନ୍ଦ୍ର ସ୍ଥାନ
 ରାନୀରଦେବ ଗାନ ଶୁନନେ ଇହା ହଇଲ ତାହାତେ
 ରାଜାର ଆଜ୍ଞା ହଇଲ ରାଜ କନ୍ୟାର ନୂଦି ମଧ୍ୟେ
 କିମ ହଇଲେ ମରୁ ଶୁଦ୍ଧ କରିତେ ପାଦିବେଳ

ତାହାଇ ହେଲ । ଗୀଯକୁ ରାଜପୁତ୍ର ପାତ୍ରର
 ପୁଷ୍ଟର ଓପଦେଶେ ଆମନ ଚନ୍ଦ୍ର ବହୁର ପଦ୍ଧି
 ଦିଯା ଆହୁଦନ କରିଯା ଅନୁଃପୂର ପୁରେ
 କରିଲେନ ଗାନ ହଡ଼ି ଲାଗିଲ କିନ୍ତୁ ଶୂଳ
 ଗୀଯକେର ଚନ୍ଦ୍ର ଆହୁଦନ ବିବରନ ରାନ୍ଧିରା
 ଜିଜୀମା କରିଲେନ । ରାଜକୁମାର ଗୀଯକୁ
 ପୁତ୍ରାତ୍ମକ କରିଲେନ । ଠାକୁରାନ୍ଧିରା ଏ ଆଶାର
 ଅନୁଧନୀୟ ବିଷୟ ତୋଯରା ଜିଜୀମା କରିଲା
 ଅତ୍ସବ ନିବେଦନ କରି ଆମି ଜାତିମାର
 ଅନ୍ତର୍ମାଣି ପୁର୍ବ ଜନ୍ମ ଆମି କପୋତ ପକ୍ଷୀ
 ଛିଲାଯ ଆଶୁକ ବନେ ଆଶାରଦେର ବାମା
 ଆଶାର ତିନଟି ଅତି ଶୈଶବ ବାହା ରାଙ୍ଗାଲେଙ୍ଗା
 ବନେ ଆତିର ଦିଲ ପରେ ଘଥନ ଆଇନ ନିକଟେ
 ହେଲ ତୁଥନ ଆମି ବାହା ପୁଲିନ କୋଳେ
 କରିଯା କାନ୍ଦିତେ କାନ୍ଦିତେ ଆଶାର କପୋତୀ
 କେ କହିଲାଯ ଶୁନାହେ ଏଥନ କି ହେବେଳେ
 ତାହାତେ ମେ ବଲିନ ବ୍ୟାଶରା ବାହାରଦେର ମହିତ

ପୁତ୍ରିଯା ମରିବ ପରେ ଆନଳ ନିକଟେ ଆଇଲେ
 ଦେଖ କୁପୋଡ଼ି ଏହାତ ନିର୍ଦ୍ଦୟ । ଓଡ଼ିଯାପୁରୁଷାନ
 କରିଲ ଆଶି ରାଜ୍ଞୀର ମହିତ ପୁତ୍ରିଯା ମରିଲାମ ।
 ଏହି କୁଥା କହିବା ଯାତ୍ରେ ରାଜକୂଳ୍ୟ ସର ହେତେ
 ବାହିର ହେଯା କହିତେ ଲାଗିଲେନ ମେ ତୁମ୍ଭି
 କେନ ମେତ ଆଶି ଗୀଘକ ବଳେ କହ ତୁମିତ
 ଓଡ଼ିଯା ଗେଲେ ଆଶି ଏହି ଯତେ ଦୁଇ ଅନେକ
 ବଢମା ହେତେ । ରାଜ୍ଞୀର କନ୍ତାଙ୍କେ କହିଲେନ
 ଏ ତୋମାର ପୁରୁଷ ଉନ୍ମୟ ମୁଣ୍ଡି ଅତ୍ୱର ଏଥିନ
 ଓ ତୁମ୍ଭି ବିବାହ କର । ତାହାଙ୍କେ ମେହି ଯତ
 ହେଲ ଏ ଓ ମେହି ଯତ ମୁଦ୍ରା କ୍ଷିଣି ହେଯାଛେ
 ତାହାଙ୍କେ ଦେଖିତେ ହେବେକ । ଏକତ୍ର ବିବେଚନ
 ପୁରୁଷଙ୍କ ଘାହା ତୟ କରା ଯାଇବେକ ନିର୍ଦ୍ଦେନ
 ଯିତି ।—

રાજી અન્ય રાજીએ ।—

અત રાજર જીન યાછે તિંહમણિલ ।
 કાંતદે શરન ભાર પાદ પદ્મ તિલ ।
 તાંત્રિ વદ્ધ પુતુઽત્ર પત્ર લોધી યાય ।
 હદ્વત્તી હય ઘેન ના હય સંશય ।

પ્રીણ વિવરન યથા શાસ્ત્ર ઓ દેશે પુણીશ હણે
 તેજે એક રૂપા શુદ્ધને આશાર મતાં હાવદીય
 લોક યાનદે પુર્યાદિત એજન ઓ ઉતોદ્વિષ ।
 એપન ડોયોરદેર ઓ દેશીય લોક ત્રાન
 હંનેર હેતુ ઓચ્ચિત ઇહ હિતે આર
 અધિક આલ્લાદ ક્રિ શુન માનુષ મમસુહે
 એક દીક હિતે ઓદુર ઇહાતે મરુલેટે ભાઇ
 ભાઇ એદિ ભૂતૃગિનેર મદ્યે કાંતાર દુઃખ

ହି ମୁଖ ହ୍ୟ ତାହାତେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଭ୍ରାତୃଦିଗେର
 ଇଷ୍ଟ ହି ବିଶ୍ଵାସ ଅବଧାନ କର ଆଜ୍ଞା ବିବରନ
 ନିବେଦନ କରିବ ଏ ଦେଶ ଏତେ ହିନ୍ଦୁଶାନେର ଏହି
 ଆଖଳ ଇହାର ନାମ ଯାଲଓଯା ରାଜ୍ୟ ଏଥାନେও
 ପୂର୍ବେର ପୁତ୍ରିଯା ପୂଜା ଏବଂ ଧାରା ଏହି ଦାନ
 ସିଂହ ଇତ୍ୟାଦି ଏହି ମତ ଜିଲ୍ ପରେ ପ୍ରୀତି
 ବିବରନ ଯଦିଲ ମହାଠାର ଆଶ୍ରମନ ମହାନ୍ତି
 ଅନ୍ତିତ୍ୟ ପୁରକୁ ଶାନ୍ତି ଲୋପାନ୍ତା ହେଯା ଏଥିନ
 ଏ ଦେଶେ ଯେତେ ବିବରନ ପୁରାଣ ହେଯାକେ
 ଏଥିନ ମହାନ୍ତି ଦନ ଏହିତ ବାହାର ମହିତ କାହାର
 ଭିନ୍ନ ଭାବେର ଲେଖ ନାହିଁ ମେ ଶାନ୍ତି ବିବରନ
 ଆମି ଆଜାନୁକରନ ନିବେଦନ କରିତେଛି ।
 ଉପାଧାନ ସୁଧି କରିଯା ପୁର୍ବେ ଯାନୁଷକେ
 ଶାନ୍ତିନ କରିଯା ଉଦନୋଦ୍ୟାନେ ଶାନ ଦିଲେନ
 ମେ ପୁରଷ ତାହାର ନାମ ଆଦ୍ୟ ଆର ଏହି ଜଳ
 ଚ୍ଛି ଜନ୍ମାଇଯା ଆଦ୍ୟର ଚ୍ଛି କରିଯା ଦିଲେନ
 ତାହାର ନାମ କାହାଯା । ଏହି ଦୂଇ ଜଳ ମେ

ଓଦ୍ୟାନେ କହୁଛି ପାଇଲ୍ ମଯ୍ୟାନ ଆରିପ୍ତାତୀର୍ଥ
 ଦୂର ଦାହାର ଅବିଶ୍ଵାସିତନ ହଇଲ ଅହଙ୍କାରାପ୍
 ତାହାର ଇଚ୍ଛା ଉତ୍ସରେ ମୃଦ୍ଧି ନାହିଁ କରେ ଏହି
 ମନ୍ଦଳ ଅନ୍ତରେ ବିବେଚନା କରିଯା ମର୍ମର
 ଆଶାର ହେଯା ମେହି ଓଦ୍ୟାନେ ଯାଇଯା ଦେଖିଲ
 କ୍ଷାତ୍ରୀ ଏକାନ୍ତରେ ତାହାର ମଞ୍ଜୁଷା କରିଯା
 ଜିଜ୍ଞାସା କରିଲ ତୋଶରା କି ଏ ଓଦ୍ୟାନେର
 କହୁଛି ପାଇୟାଜ । କ୍ଷାତ୍ରୀ ପୁତ୍ରାତର କରିଯା
 କହିଲେନ ବଟେ ଆଶରା ଏ ବନେର କର୍ତ୍ତା
 ହେଯାନ୍ତି । ଆଶରା ଏ ମନ୍ଦଳ ଦୂରେ ଫଳ
 ଯାଇତେ ପାରି କେବଳ ଏହି ଯଦୀଜ ମାନେର ଦୂରେ
 ଗାଢ଼େର ଫଳ ଯାଇତେ ବାବୁନ କରିଯା କହିଲେନ
 ଯଦି ତୋଶରା ଇହାର ଫଳ ଯାଇବା ତବେ ନିତାନ୍ତ
 ଯରିବା । ଇହାତେ ମଧ୍ୟ ରୂପେ ମଯ୍ୟାନ ହାସିଯା
 କହିଲ ତୋଶରା ତିର୍ଦେଖି ଫଳ ଯାଇଲେ ଯରିବା
 ଲା ଉତ୍ସର କହିଲେନ ମେ ପୁତ୍ରାରିନା ବଠନ ଯଦି
 ତୋରା ଏ ଗାଢ଼େର ଫଳ ଯାଇବି ତବେ ତୋରା

ଈଶ୍ୱରର ଯତ ଫାନ୍ଦାନ ହୁଇଥି ଏତୁଥେ ଭଗିବାନ
ପୁତ୍ରାବଳୀ କୁରିଯା ଯାନା କୁରିଯାଇନ ତୁମି ଓ
ବୃକ୍ଷର ଫଳ ଆନିଯା ପାଇଁ ଦେଖି ପାଇଯା ଦେଖ
କେମନ ଯର । ତାହାର ସଂକୋ ମେ ନାରୀ ପାଇଯା
ଫଳ ଆନିଯା କୁରିଲ କିଛୁ ଆ ନି ପାଇଲ ଏବଂ
କିଛୁ ତାହାର ମୁଖୀ ଆଦିମଙ୍କେ ଦିଲ ଏବଂ
ମେ ଓ ପାଇଲ ଇହାତେ ତାହାର ଭଗିବାନେର
ଆଜୀ ଭରି କୁରିଲ । ପରେ ଈଶ୍ୱର ଉଦ୍‌ବ୍ୟାନ
ଆମିଯା ଆଦିମୀ ବଲିଯା ତାକୁଲେ ତାହାର
ବୃକ୍ଷର ଆବତାଳେ ଧାରିଯା କାହିଲ ଭଗିବାନ
ଆମରୀ ଏପାଇଁ ଆଜି ଆମାରୀ ଶୁଣନ୍ତି
ତୋମାର ମନ୍ତ୍ରାବ୍ୟ ଆମିତେ ଆମାରଦେର ଲଙ୍ଘା
ହୁଁ । ଈଶ୍ୱର ବଲିଲେନ କେ ରଲିଲ ତୋର
ଦ୍ଵିଗତେ ଶୁଣନ୍ତି ତୁମି ତୋରୀ ମେ ବୃକ୍ଷର ଫଳ
ପାଇଯାଇମ ପାହା ଆମି ଯାନା କୁରିଯାଇଲାମ
ପାଇତେ ତୋରଦିଗିକେ ଆଦିମ କାହିଲ ହଁ ପୁନ୍ତୁ
ତୋମାର ଦ୍ୱାରା ନାରୀ ଦିଲ ଆମାକେ ଏବଂ ଆମି

ତାହା ପାଇଁଯାଇ ପରେ ତିନି ଜିଜାମା କରିଲେ କାହାରୀଙ୍କେ କହ କିମ୍ବା ତୁ ଏ କାହା କରିଲି
 ତାହାରୀ ସମ୍ମାନ ଏହି ମର୍ମାଦେଶେ ଆମ୍ବି
 ଗାଇଲମ୍ ଏବଂ ଫାଓଇଲମ୍ ଆମାର ମୂର୍ମୀଙ୍କେ
 ମେହି ଇହାତେ ଦୋଷାଦ୍ୱାତି ହଇଲ ଆଦି ଏବଂ
 କୁଣ୍ଡା ତାହାର ମନ୍ତ୍ରାଳ ମର୍ମକୁ ତାହାର
 ପାଠେ ପାରୀ । , ଉଚ୍ଚର ନିୟମ କରିଯାଇଲେ
 ତାହା କରିଲେ ତାହାର ଶାସ୍ତ୍ରିକ୍ଷାନ ନରକ ନିଷ୍ଠାନୀ
 ହଇଲେ ମୁଖଭୋଗ ମୁଗ୍ଗ କିନ୍ତୁ ଆଦିଯେହ ତାହାପେ
 ମାନୁଷ ମୟମୁକ୍ତି ପାରିଛି ହଇଲ ମାନୁଷେର ଓଦ୍‌ଧାର
 ପୁରୁଷ ମତେ ହଇତେ ପାରେ ନା ଅଯୋଧ୍ୟ ଆଜା
 ଏହି ନିଷ୍ଠାତି ଭଗବାନେର ବ୍ୟତ୍ୟ ହଇତେ ପାରେ
 ନା ଜନ୍ମନା ଓ ମୁର୍ଗେର ମୁଖଭୋଗ ମର୍ମକୁ
 ଅନନ୍ତ ଯଦୃପି ଭଗବାନ ଆପନି ମେ ଜନ୍ମନା
 ମାନୁଷେର ଓପରୁ ପଢ଼ିଲେ ଅନନ୍ତ କାଳେ ତାହାର
 କୀମ୍ଯା ହଇତେ ପାରେ ନା । ଅତେବ ଦେଖିଲେନ
 ତାହାରୁ ଆର ନିଷ୍ଠାତି ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ଯଦି

ପାତେର ମଶାନ ପୁଣ୍ୟକ୍ଷିତ୍ୟ ହସ୍ତ ଉବେ ପାନ ଗଣେ
 ତାହା ମୃଦ୍ଦିତ୍ୟ ମଦୁର କୋପାୟ ଓସ୍ତର ନିଷେଠି
 ପାନ ତାହାର ମଶାନ ଅନନ୍ତ ଜଗିତ ହୈଲେଇବା
 ହୈବେ କ୍ରେମନେ ଇତି ଯାଦୀୟ ଚଗିବାନେର ଡେଜୋ
 ଯୟ ଶବ୍ଦର ହେତେ ଦିଲୀୟ ତେଜ ବାହିର ହେଯା
 କୁହିଲେନ ଆଶି ପୃଥିବୀର ଜନ୍ମାବ ଏବଂ ପାତେର
 ଅନୁନା ଦେହେ ବାଢନ କରିଯା ପାତେର ପୁଣ୍ୟକ୍ଷିତ୍ୟ
 ହେବା । ମେଇ ଯେତୁ ପୁଣ୍ୟ ତାହାର ଅନ୍ତାର
 ବିବନ ପୂର୍ବେ ଏତ ଭବିଷ୍ୟତ ଦକ୍ଷ ହୈଲେନ
 ପୃଥିବୀରେ ପୁଣ୍ୟ ମହଲେହେ ପ୍ରୀତି ବିବନ କରିଯା
 ଜେନ ତାହାରଦେର ବାବ୍ୟ ପୁତ୍ରିପାଳନାଥେ ଯହା
 ପୁତ୍ର ଜାତାଧିନାଥ ପୃଥିବୀରେ ଜନ୍ମିଯା ମୌତେ
 ଦୀପର ଶାନ୍ତି ହିତୋପଦେଶ କୁହିଲେନ । ଏବଂ
 ବଦ୍ୟତ ଚମ୍ପକାର କାର୍ଯ୍ୟ କୁହିଲେନ ପୃଥିବୀରେ
 କାତେକୁ ଶବ ପୁଣ ପାଇଲ ତାହାର ଆଜ୍ୟା
 ଏବଂ ମେଇ ଆଜ୍ଞର ଚକ୍ର ଦାନ ଏବଂ ବଶିରେର
 ପୁତ୍ରମୂକେର ବାବ୍ୟ ଏହି ମତ ଅନେକୁ ଅମୁଖ

ତିନି ନିବାର୍ତ୍ତ କରିଲେନ କେବଳ ତାହାର
 ଆଜ୍ଞାୟ । ଏବଂ ନାନୀ ଯତ ଦେଶ ପାପିରଦେଶ
 କ୍ରାନ୍ତାଥେ ନିଜ ଦେହ ବୀରଜ କରିଯା ତରଷ୍ଟାତ
 ଶାକ୍ୟ ଅନୁଷ୍ଠାନି ମାରା ଗେଲେନ ଏବଂ ପୁନର୍ବର୍ଦ୍ଦି
 ତିନ ଦିମାନ୍ତରେ ଉତ୍ଥାନ କରିଯା ଚଲିଶ ଦିବମ
 ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପୃଥିବୀରେ ଅବଶ୍ଵିତି କରିଯା ମାନେ
 ପୁନର୍ବର୍ଦ୍ଦି ଉତ୍ତରଦେଶ କରିଲେନ । ପରେ ତାହାର
 ଶିଷ୍ୟୋଦିଗଙ୍କେ ଉତ୍ତରଦେଶ କରିତେ ନିଷ୍ଠୁର
 କରିଯା ଏଥିନ ତିନି ମୁଖେ ଭଗିବାନେର ଦକ୍ଷିଣ
 ଭାଗେ ଆଜ୍ଞନ ଯେ ତାନୀ ତାହାର ଭକ୍ତ ଆମ୍ବା
 କରେ ତାହାର ନାମ ମେହେ ଉଦ୍‌ଧାର ହବେକ ।
 ତାହାର ପାପେର ଉତ୍ତରା ପ୍ରୀତି ଲଇୟାଇନ ଏବଂ
 ଦିମ୍ବ ପ୍ରାପ୍ତ ହଇଲ ପ୍ରୀତି ଦିଯା ଇହାର ବିସ୍ତାର
 ଦିବରନ ଯହାଦିମ୍ବ ଶାନ୍ତି ସମ୍ରକ୍ଷ ମଧ୍ୟାଠାଙ୍କ ଯବ୍ଦୀ
 ଜୀବ ହେବେନ ଅତ୍ସବ ପ୍ରୀତିଇ ମଧ୍ୟନ୍ତ ଦେଶ
 ପୁନର୍ବର୍କାଳେ ଅନ୍ତକାରମୟ ଛିଲ ଏଥିନ ଯହାଶନ୍ତି
 ପ୍ରକାଶ ହେବେନେତେ ଲୋକେରଦେଶ ଜାନ ଲେବୁ

पुरुषन् हेया विवेचना इडेयांजे । एवं
 लोकेन्द्रदेव आनन्द आनन्द दिवा जान
 विश्विष्ट इडेयांजे अउपह शास्त्र एहे त्रानेय
 एहे अनुयायि इडेये पारिवे ओ अस्तेन ईशा
 पुरुषांश्च इडेयांजे इडेये अस्तिक आनन्दित
 इडेलाम । ईशारु अस्तिक आरु उग्री छि
 कमलनयनेर वियोगे पुरुषत समाचार
 पाइवा यात्रेहे शोकान्तर्त इओ गेल मे तुळ
 विषय सकलेरि मेहे पथ इडेवक उहा
 किञ्चनहे चूळथ एहे उहारु परु ज्ञाना
 असीया इहेन श्रीष्ट द्युतिरेक लोकेन्द्र उक्तांति
 नाई भावतीन आक्षिवेन उहारु नुट्टेर विषय
 आनन्दांत्र विवेचना अनुयायि रुदा यहिरेक
 शानद ठोरीरि दिवरन पूर्वद शुद्ध ईया
 जिल एहे शत बढे जम्बुति मे आनन्दि
 एहाने आमिरा नौदानत इडेयांजे एवं दृष्ट
 दावमा भक्त उग्री द्वियांजे उहारु कुर्प्पां

ତୁମେ ଏପାନକାର ଅଛଲେ ତାହାର ଗୀର୍ଜାକ୍ଷାଣ
ଆମି ଓ ବିବେଚନା କରିଲାମ ଦୁଷ୍ଟ ହୋନ
ଲୋକ ନିଜ ମୂର୍ଖାବ ତାଗ କରିଯା ଶିକ୍ଷିତା
ଚରନ କରେ ତବେ ତାହାର ତାହାକେ ଦୟା
କରେନ । ଆମରା ହୋନ ବସୁ ଶାନ୍ତି ଆମର
ଦେବ ଓଠି ଭଗବାନେର ଆଜାନୁକ୍ରମେ କାର୍ଯ୍ୟ
କରିତେ ତାହାତେ ମେ ପୂର୍ବବଦ୍ଧି ଆପାନକାର
କୁଷ୍ଫି ନିବିଷ୍ଟ ଅତ୍ୱବ ତାହାକେ ଅଭ୍ୟ ଦାନ
କରିଯାଇଛି ମେ ଏପାନକାର ସୌମତିଦାନେର
ଯତ୍ତାଳୀ ନିବିଷ୍ଟ ଜୀବିତରେ ନାଗରନ୍ତି ଶଳ୍ଲିକ
ତିରକାଳ ଇଲ କୋପାଁ ଗିଯାଇଁ ଅନୁମଜ୍ଜାନ
ଛିଲ ନା କିଷ୍ଟେର ଲକ୍ଷନ ପୂର୍ବେ ଇଯାଜିଲ
ଆନନ୍ଦକାର ଓହାନେ ଓନ୍ମିତ ଇଯାଜର ଭାଲୁଙ୍କ
ଆବଶ୍ୟକ ହେଲେ ଲେଖା ପାଇବେକ । ଗୋକୁଳା
ନନ୍ଦ ମିଶ୍ରର ବିବରନେ ଆଳଚର୍ଯ୍ୟ ବେଦି ଇଲ
ତାହାକେ ଦେଖା ଆବଶ୍ୟକ ଆର ତିରକାଳେର

ପରେ ଆପନକାର ମାର୍କଟି ଏ ଆନନ୍ଦ ମହାଠୀର
ଅତ୍ୟଥ ଏହିତ ମହଞ୍ଚ ଯାଯାନ୍ତୁର ସାଜନ ହେଲ
ଆପନକାର ଆକୁଣ୍ଡି ପୂର୍ବ କାରନ ନିବେଦନ
ମିତି ।—

ରାଜୀ ଅନ୍ୟ ରାଜୀଙ୍କେ ।—

ଅଂମାର ମୃଜନ କର୍ତ୍ତା ଅଗିତ ଜନେର ଭର୍ତ୍ତା
ହର୍ତ୍ତା କର୍ତ୍ତା ଯେଇ ମହାଶୟା
ଯାହାର ଆକୁଣ୍ଡିକାର ହୟ ବୁଦ୍ଧି ଅଗୋଢ଼ର
ଜୀବ ନେତ୍ରେ ଯେ ଦର୍ଶନ ହୟ ।
ବାହ୍ୟ ଶକ୍ତି କୈତେ ନାରେ ବୁଝିତେ ତାକେବା ପାରେ
ଅତ ଶିରୁ ନାରେ କୁର୍ଦ୍ଦିଚିନ
ଆର କେ ଜାଗିତେ ଶକ୍ତ ତାର କଷ କରେ ବ୍ୟାକ
ନର ବୁଦ୍ଧି କିମେତେ ଗିନନ

ଓଷ୍ଠେଶେତେ ନୟକୁଳ କୁରିଯା ଚରନେ ଡାହାର
ଶତିନତି ଘଲେ ଘନ
ମେଇ ମେ ଆପଦହାରୀ ତାର ପାଦ ପଦ୍ମମରୀ
ପ୍ରେମ ଲିପି କୈଳ ଆରମ୍ଭନ ।

ବ୍ୟାପକ କାଳ ଗତ ହେଲ ଏଥାନକାର ଗତିକୁ
ଆପନାଥେ ଶ୍ରୀର ମିଠାକେ ପ୍ରେରିତେ ଅନୁଶ୍ରତି
ହେଯାଜିଲ ଉତ୍ସାହୀ ନାଗପୁରହାରୀଶ ଦ୍ୱାରକା
ନୀଥ ହୋ କଟକ ପୌଛନୀ କୁରିଯାଇଁ କଟକେର
ବୃକ୍ଷ ଅଧିକାର କରନେଇ ପୁଣେ ମୂର୍ମୟାର
ଛଳୀଯ ଶାତାଲିକ ହୃଦୀ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପୌଶିଲେ
ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ପାଇୟା ଗେଲ ଡାହାତେ ବ୍ୟାଙ୍ଗ ଚିତ୍ତ
ଜିଲ । ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ପାଇବା ମାତ୍ରେଇ ତିନ ଲକ୍ଷ
ମେନା ମଞ୍ଜା ହେଯା କଟକେର ପଥେ ପୌଛାଟୀ
ପୌଶିଲେ ଦ୍ୱାରକାନୀଥ ଏଥାନକାର ମେନାର
କୋଲାଇଲେ କୁହ ହେଯା ନିଜାଲୟ ବାହୁଡ଼ିତେ
ରିଲେନ ଦୈର ଗତିକ ଦେଖ ଏଥାନକାର ଏକ
ମେନାପତି ଓ ଏକ ଲକ୍ଷ ତୁରଗୀରୁ ମେଲା ପୁତି
ବ୍ୟାଙ୍ଗ ଆମାର ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ବେଷ୍ଟନ କରେ

ताहारदेर देखा हईले ताहारा हाँड़का
नाथेर मेनारदिग्जाके परास्त करिया। इन्हें
आँखमन करिया आनियाच्छे। ताहार
अस्त्रिकार तगिनुर ओ आशान्य राजा नहे
ताहाते नहमि। इ हाँडपालके कुर्ता करिया
पाठीन गोन हाँडपाल आँनकार देश दिया
याइरेके मेहे गाँते शिवि ओ अन्तारु ओ
गाँने निरुपित इहेलेन। फटे याइवे ताहार
निरापेन हय नहि पंजात लेपा याइवेक।
पूर्वेद शुना गियाजिल कुकीनुर अस्त्रिपिति
विक्कन राजाये पूर्वहकाले एटेपाने भाकिया
दिनबान इहेयाजिल एपन आँनकारु आलम्य
कुरिव कुकीनुर करउन करिया राजा नाघ
करियाच्छे। एपन में किंशित दिन मङ्गा
कुरिल मेना झाँपिया बाँडाक्सीडादि शहा
जोधे पात्रि लोकेरुदेव पथेद बाटा इहेया
अहल लोकके लड्ड करियां लग न२० दिन्दु

କାନ୍ତିଲ କାହାରେ ତୋଗି ରହେ ନା । ॥ ଏବିଷୟ
ଆମିନି ଶୁଣିଯା ଥାକିବେଳ ଉଥୀଠ ଇହାର ଦୟତ
କରଦେଲା ନା ଇହାର କାରନ କି । ॥ ମେ ଜୀଧେର
ପିତାଯାତର ଦୂର ଆମନକାର ଅସିକାର ନତୁବା
ଏଥାନ ଦିଯା ତାହାର ମଧ୍ୟେଚି ଇଓନେର
ଆଟକ ହୟ ନା କିନ୍ତୁ ଆମିନି ଏଥାନକାର
ମୁହଁଦ ଆମନକାର ଅସିକାରେର ମେନା ପାଠିଲ
ଆପନାକାର ଅନୁମତି ଭିନ୍ନ ହଇତେ ପାଇଁ ନା ।
ଏ କାରନ ଅନୁଚିତ କିଯା ଏଥାନ ଦିଯା କମ୍ପାଚିତ
ହଇତେ ପାଇଁ ନା ଯଦି ଅନୁମତି ହୟ ଲିପିବେଳ
ଡାହାର ପୁତିକାରାପେ 'ଆଶ୍ଵେଶର କରା ଘାଇବେଳା
ନତୁବା ଘାହା ହୟ ଆମିନି କରିବେଳ ଯଦିଓ
କେବଳ ଆମିନା ଦିଯା ଅମାଦିଯ ହୟ ଲିପିଲେ
ଅହାଘଡାପେ ' ଏଥାନକାର ମେନାପତିଗିନେଇ ।
ଆମ୍ବୁଦ୍ଧାରୀ ଇହେବେଳ ଡାହାତେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ହବେଲୁ
ନା । ॥ ଏ ଆମାର ଅବଶ୍ୟ କୁଞ୍ଚ୍ୟ କେନନା ମେ
ଆମାରଦେଇ ଦେବମୂଳୀ ଡାହାର ଘାଗିର ବାଦିଲ

येका ताहार दयन आकुत्तर्या नहे. अनुश्चिति
अनुकूलमे करा घाइवेक। मिं-हनुराधिलाली
पूर्वापर अपानकार आशुत आनित्त एपन
ताहार गितायांत राज पूर्वरुदेर एपाने
सदसर्वदा इहार विशेष कि। राज पूर्वरा
अपानकार नितान्त बहिरन्ति ए आज्ञा. लाक
इहाते आज्ञातार बैदग्नुता हय किन्तु एपान
कार अल्लंकरण एटे सामान्य विषयाते मध्या
योग्य करे ना कि आनि दैव. गितिकर्मे
ताहार बैदग्नुन हय डाबै विवाद अतव
मिं-हनुरीके बाबून करिवेन एमत आर ना
हर। यदितु तिनि आपानकार अपाने
महजत्तावे पूर्व मत ना थाफेत आनिते
पाहिले ताहार मध्यांचित रविया नद्याशुत
करनेर अटेकु कि। ताहार कि शक्ति
एपानकार अहित प्रतियोगिता करिते एमत
सक्तुर तोन फारे नहे घासु हय पञ्चात तुरा

ଇହିବେଳ । ପ୍ରିତିରୁଟେର ବନ ର ମତ ଇହେଯାଇଁ
କେ ଏହି କରିଲ ବିଶେଷ ଜାନି ନା ଯଦି ଆପଣ
କାହାର ଅଙ୍ଗଲେବୁ ଲୋକେ କରିଯାଏ ଥାକେ ଡାଳ
ଆମାର ଇହ୍ନା ଜାନିତେ ଠାଇ । ପୂର୍ବରକ୍ଷାର
ବିବରନ ଶୁଣ ଆଜେ ପୂର୍ବରକ୍ଷାଲେ କୌଳକେତୁ
ନାମେ ସାଧି ଅତି ଦରିଦ୍ର ଓ ଶ୍ଵର ଇହ୍ନାକୁ
ଯହାୟାଣା ଭୀବତୀର ଦୟାତେ ବିନ ତ୍ରୁଟି ଇହେଯା
ଏ ପ୍ରାନେର ରାଜା ଇହେଯାଛିଲ । ମେ କୁତକୁଳ
ତାହାର ନିଶ୍ଚୟ ଜାନ୍ମ ଯାଏ ନା ମାତ୍ର ବନମୁଦ୍ରିଷ୍ଟ୍ୟ
ଲୋକେ କହେ ଇହାରି ଘବେବେ କୌଳକେତୁରୁ ପୂର୍ବ
ଆଇଁ । ତାହାର ବିବରନ ଯଦି କିଛୁ ପୁରୁଷ
ଇହେଯା ଥାକେ ଏଥାନେ ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ଇହିଲେ ଦେଖନେବୁ
ଇହ୍ନା ଇହିତେ ପାଇଁ ଏକାବନ ଦେବାରାବିନା ଏବଂ
ଦୈଵ ଆନୁମାନିତ୍ୟାତେ ଏଥାନକାର ଅନୁଷ୍ଠାନିକରନ
ନିତାନ୍ତ ପୁରୁଷ ଆପଣି ଓ ଏ ଅଙ୍ଗଲେ ଯନ୍ମା
ଯୋଗୀ କରନେ ଉବେ ଯାଇଯା ଦୁଷ୍ଟଦ୍ୟ ଇଯ । ବିଦେ
ଚନ୍ଦ୍ର କରିଲେ ଜାନ୍ମ ଯାଏ ବିଷୟ କି ଯଦି ପୂର୍ବ

बृहत्त उवे आहार ओ म्हाने अनुकूलान्वित
 अतप्रव एपानकार मेनापितिरा मे म्हाने
 अवश्चिति कुर्विले विवरन जात हयेन अतप्रव
 ताहार कि गतिक जापनाथे^१ अ०वाद
 दिवेन। गीजम्बङ्ग इस्यु कुप्रकु दिवम हइल
 एपाने आमियांचे ताहार एतद् दर्शन कैन
 ताहार निता ओ पिताशह अवर्दकालेइ ओ
 एपानकार पुडिलाना मे दिवशान्वित हइया
 आमिया एपाने शरव लहेयांचे आपानकार
 ए म्हान भिन्नकोटि नहे अतप्रव ताहात वड
 त्रुट्ट करि नाहे ताहार निश्चित लेखा घाइ
 तेजे देखदेव राज गोश्यारी कुप्रकु व०मर
 गीत हइल कौणक दर्शने गियांजिलेन एवं
 ताहार पर ताहार भ्राता ओ मेहे पर्थे गत
 कुर्याया आगीय पर्यष्ठ पौश्लेन ए मराठार
 पूर्वे पाओया गियांजिल पर्ये शुना गियांजिल
 ये ताहार भ्राता पूर्वतद् कुर्याया तोयांर

ଅପାଳେ ଉପଦ୍ରିତ ହେଲୁଣ୍ଡା ମର୍ତ୍ତ୍ୟ ନିବିଷ୍ଟ
ଆଜ୍ଞାନ । କିନ୍ତୁ ଏ ମର୍କଳ ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ଅତି
ଆମ୍ବା ଜନ୍ମେ ନାହିଁ ଏଯତ ହବେ କେନ ଡାଇର
ପୁରୁଷ ପୁରୁଷାନୁକର୍ମୟ ଏପାଳକାର ପାଲିତ ଏବଂ
ଏପାଳକାର ମେବିତ ଡାଇରତେ ଏପାଳ ହେତେ
ନଷ୍ଟତା କରିଯାଇଛି ଏପାଳକାର ଅନୁଯାତି
ବ୍ୟାତିରେକୁ କୁଦାଚ ଆପାଳକାର ମଞ୍ଚଦ ନହେ
ଡାଇରକେ ମର୍ତ୍ତ୍ୟମନ କରିତେ ଯାହା ହେବନ୍ତ ଘର୍ତ୍ତି
ଡାଇରଦେର ବିବରନ ପୁଠାର ହେଲା ଥାକେ
ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ପାଇଲେ ଏପାଳକାର ଲୋକ ଯାଇଯା
ଡାଇରଦିଗିକେ ଆନୟନ କରିବେକୁ ନିବେଦନ
ମିତି ।—————

राजा अन्य राजाके ।—

मर्व ब्रह्म कुर्ता पेहे ब्रह्म अविकारी
ताहार भूजन हय दिवम् अवर्गी ।
ब्रह्म यत आजे तार कुर्त हय
जगतेर मर्वी मेहे मर्व शक्तिय ।
ताहार ठरने नति करि प्राने प्रत
प्रत्युत्तर लिनि एहे कुरिल लेपन ।

द्वारुकानापि द्वारु अपाने आक्रित
हइयाचेन मे ताल इट्राचे प्रकारन मे
नागनुर अक्षलेर पाददीय लोक कि निजा
विकार कि भिन्नाविकार मक्कलेटि पीड़ा
दायक छिल । ताहार राजे द्वारपालके
कुर्ता निषुक्त कुरियाचेन मे ताल बटे कुन्तु
द्वारपाल ओ अक्षलेर जात नहे ताल ताहा
बुद्धा पाइवेके अपाने पौशिले ताहार
प्रेषत् प्रायश् कुर्दा पाइवेके मेघानकार

विवरन आपने ओ जात नहेन द्वारपाल ओ
 उत्तोषिक से मान बड़ कठिन मदा मरवदा
 पाहाड़िया चेष्टाभेद नायिया राजा लुट
 करे ताहार रक्षा वृहत द्वारपाल द्वारकानाथ
 ए विषय बड़े क्षणताम्ब छिल देवकम्ये
 आक्षित इड्यांचे नतुरा ताहार मरान
 दुंदिया राजा हिन्दूमाने केह नाई मेह
 पाहाड़ियांतरेर दाय विद्रुत छिल याहा
 इउक से माने क्षेव द्वारपाल दिया
 निर्वाह इति धारे ता। मेना पुछुर
 आवग्यक एवं उपात्क लोक ताहार वावस्ता
 एथान इतेह इवेक द्वारकानाथेर राजा
 पूर्वे एह राजा निविष्ट छिल किछु काल
 द्वारकानाथ पुरल इड्या मृत्तु इड्या छिल
 आनिवेन। विकर्व विवरन आपने वृक्षि जात
 नहेन कोन दृष्ट लोक याइया एयतै लागीन
 पड़ान किया थाकिवेक। दुष्कर मृत्तार

এই কোন যত্তে আত্মায়বৈ বিবাদ ইয় এই
 তাহার দের শনোভীক্ষ তাহারি বিবেচনা না
 করিয়া যে তাহাতে আমা করে সেও সেই
 যত পুঁঁয়। বিকৃণ যহা বীমুর্খ দাতা ভোক্তা
 সদ্বুতুভী তাহার সদ্বুতুভু জাঞ্চর্য আব্যান
 যাবদীয় ঘান্তী লোকের দিগীকে বাঁজভোগী
 জড়িথা করে অপূর্বন মাধীরন সমস্ত লোকের
 দিগীকে অনুদান করে তাহার দিশু রুষ্ট দিতে
 কেহ পারিবেন না দেবতা তাহার সহায়।
 তবে কি যে তাহার অধিকারে এক ঘাটি
 আজে তাহাতে ঘান্তীরা সবর্ত কালেই কুরদ
 আছেন তাহার বাধন করিলে তাহার বাত্তে
 আর বিষয় কিছু নাই যে লিপিয়াছেন আমি
 তাহার দশন করি কি আপনেন সহজে তাহার
 দশন করেন সে এতে ব্যক্তি নহে সে
 আপনেই সুবীরা লোক তাহাকে হিতান
 দেশের আবশ্যক রক্ত একটা নাই তবে

ହେଲେ ଜୟୀ ଇତନ ତୋଯା ଆମ୍ବାର ଶକ୍ତିର ଦାହିର
 ଆମ୍ବାର ଏହି ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ମନେ ଭୁଷ ହେତେଜେ
 ଆମେନେ ତାହାକେ ଅବ୍ରତ ନହେନ ପୂର୍ବ କାଳେ
 ଅଗ୍ରମୀଯ ରାଜୀ ମରଦା ଇହାର ଏଥାନେ କର
 ଦାସ୍ତକ ହେତେନ ଏହନ ଆମ୍ବାର ତୋଯାର ଓପର
 ତାହାର ଦାସ୍ତା କରେ ନା ଏ ତାହାର ମୌଜନ୍ୟତା
 ନତୁରା ତାହାର ଅମାଦି କି ଆମ୍ବାକୁ ତାହାର
 ଦୟନାପେ ବିବେଚନା କରିଯାଇଛନ ଆମ୍ବାର ଏତ
 ତାହାର ଶତ୍ରୁ ଦ୍ୱାରାପାଲ । ତାହାର ପୁତ୍ରିଯୋଗିତା
 ଆମ୍ବାର ମହିତ ନହେ ଆସି ତାହାର ଆଶ୍ରିତ
 ଏବଂ ଆମ୍ବାର ଏତ ମହମ୍ଭାବସି ପୁରୁତ ତାହାର
 ବିଷୟ କୋନ କମେ କୋନ କଥା କୁଣ୍ଡା ଆମ୍ବାର
 ଦେବ କେବଳ ଜୀଓଲାମ ପୁରୁଷ କରା ନିଃନ୍ତର
 ଥାବିବେନ । ମିଠ ପୁରୁଷିପେର ବିଷୟ ଯାହା
 ଲିଖିଯାଇଛନ ମେ ପୁର୍ଯ୍ୟାନ ତାହାର ଦୟନାର କୁ
 ଚେଷ୍ଟା କରିଲେ ଓ ଏଥାନ ଦିଯା ଆନୁଗୀତ୍ୟ
 ହେତେ ପାଇବେକ । ଓଜନ୍ତାଟ ବନ ଅନେକ

कालेह पतित जरील ताहा एप्टनकार
 लोकेरा मूलामित करिते पुँउ हइयाजे
 आमुदाधिक हइले उना याबेक। ताहार
 शब्दी बिषय कि पञ्चांग जानिते पारिबेन।
 गोलाधिर भ्राता यहा पतित एकारन एप्टन
 कार जाईनकेरदेर आमुर लहेया मतार
 यातायात करेन आमुर आकात्तिक लोकके
 आमुर देवने पुँज पुतिकार दाखला ताहा
 ना करा केन। अडव इहार बिशेषन
 एই ओजराट बने क्षुत आजे कालकेतुर
 अवधिति छिल ताहारि उद्भु जाननापे
 एप्टनकार लोकेरा आजानुधायि बन काटि
 डेजे यदि आप्टनकार इहा हय ए अझले
 आगमन करिले मान माहता जानिते पारि
 बन एप्टनकार ओ इहा छिल उथा याइया
 किजु कान अवधिति करि ताहार बाबा
 हरिष्ठन्दु राजा पुरजिर महित दुर्जनता

આરંધુ કરિયાજેન પૂરજિ દુઃખન તાહાતુ
 આનુગીત્ય આવશ્યક એવો પૂર્વ કાલેર
 પૂરીતિ આજે એપણ કશલરાય મેનાપુરીતિકે
 વિસ્તરે મેના મહિત પ્રેરિત કરિયા સાહા
 યારંધુ હિયાજે। એપાંતકાર પુરીતિજી
 તાહાર પુરીતિકાર કરિતે તાહા ના કરિયા
 અન્યકુ ગતિ કરા એટિવેક ના। આંને
 ઘન્દી ઉજરાંટ બત દેખનેર આવશ્યક થાકે
 એ અફલ દિયા ગતિ કરિલે આંનાર
 પરામર્શ પૂર્વક તાહાર સાહાય કરિતે
 હવેકે। આટેમનેર સુંદર પૂર્વ જાના
 ગેલે એપાંને ઓ મણલે સંજ્ઞયાન થાકે
 જાનિવેન ઇતિ ।—

રાજા ઠાકુરને ।—

રાજભેદ સિંહસન ઓ કુણ તિરોપન
યાંહે રાજ્ય હયાતો સૌધિત
પુત્રું ડકુ શહારલ દાઢે એન રૂળાનલ
વિગુંહેતે અનુભુ ઘેમન ।
વિશ્વેતે ઉંપર શતિ દયાપુષ્ટ હદ્ય અતિ
દાને શાને રૂન દૂર્યોદૈન
દૈર્યદાન ક્ષિતિ સય કોવેતે વિનિષ્ફે પશ
શહારીર રાય જનાન્દીન ।

અનુજ્ઞા લિનિ દૃષ્ટે ઓ આફલે રૂધ્ય રૂમા
પુનિરીતનું વર્ક યાંહાતે પુંજાલોકેર દમતિ
વાથલા ઇઝા પલ્લાનલ્લિ મુશ્ખાનિત ઇય
એવો અન્યાન્ય શાલાદ્યાસ્ક એવો જનનાન્દાદ્યાસ્ક
એવો ગુંગાદ્યાસ્ક, ઇઝાદ્યાદ્યાસ્ક ઇશારદ્યાસ્ક
પુંજાનિનકે દૂર્યોપ દિલ્લા દિન સફ્યું રૂરે ઊંહા

ନା ହୁଏ । କିନ୍ତୁ ଅନୁମାନନ କରିବେଳ ପ୍ରତିକୁ
ମୁଖ ଦୂଷିତ କରିବା ଆର ବିବେଚନା ପୂର୍ବରୁ
ଅନୁମନକାନନ୍ଦମେ ଦୂଷିତ ଲୋକ ମୁଠକ ଦମ୍ଭ
ଚୋର ବାଟିପାତ୍ର ଶିଥ୍ୟାନ୍ଵର ପରହିଁ-ମଙ୍ଗ ଇତ୍ୟାଦି
ଯାଦିଯ ଲୋକ ଆକ୍ଷମନ କରିଯା ଆନିବା
କିନ୍ତୁ ଏକକାଳୀନ ମହାମା ତାହାରଦିଗିରେ ନଷ୍ଟ
କରିବା ନା । ଦେଖିବା ତାହାରଦେଇ ଯଦେ
ଯେ ନିଜାନ୍ତ ଦୂଷିତାରୀ ହୁଏ ତାହାରେ ନିଗାତ୍ସୁକ୍ତ
ରାଶିଦା ଏବଂ ତାହାର ପରିଜନ ଲୋକେରଦିଗିର
ତିର୍ଯ୍ୟାଇ ନିଷ୍ପତ୍ତିର ମଂଗାନ କରିଯା ଦିବା ଦୁଃଖ
ନା ପାଇ । ନିଗାତ୍ ବକ୍ଷିଦୁରଦିଗିରେ ନୀତିଶାସ୍ତ୍ର
ଇତ୍ୟାଦି ଅଭ୍ୟାସ କରାଇତେ ଯାହାର ମତି ନୀତି
ପୁଣିଷ୍ଠ ହୁଏ ତାହାରଦିଗିରେ ପୁନରାୟ ମୁଖେ
ଆର୍ପନ କରିବା । ଅନ୍ୟେରଦିଗିରେ ନୀତାଭ୍ୟାସେ
କରାପନ୍ତି ହେଯା ନହେ ବରଂ ତାହାତେ ଅଛେ
ମରିବେଳ ପ୍ରମତ୍ତ ଲୋକେରଦେଇ ପରିବାରଗାନେଇ

निर्वाह निष्पत्ति र यनयोग करिबा । एवं
 हैले ताहार राजे प्रजा वृक्ष हय ।
 उवनींगरेश्वर उवनम्भिंह राजदीनीते
 आमिराजिल पुराण किछुइ करे नाइ इहार
 अनपदेर प्रजा लोक इहाके शामेना
 इहाते ए जानत म्बहापुर्वक निजासि
 खार ए राजदीनिर भुक्त करिया देय । शुना
 गोल तोयाइ अथाने गियाज यदितु एहे हय
 उवे ताहार आकड़ा पूर्व करिटन अथान
 कार म० दोदेर जपेका करिबा ना । एवं
 ताहाके तोयार कर्त्तव्य शारीर मृद्दा
 करिबा घाहाते ताहार चूर्णत तिर्हाह
 निष्पत्ति हय तोयार अथान मार्णु पुच्छुर
 आज्ञा । नार हटेर राजा नीलशंखेर
 दिवेवर्वर ओपेर दोराज्ञा करे अउव ताहार
 आहायापे चावुड़ उडगीवड़ प्रेरन करिबा
 याहाते ताहार दैवि दयन हय मे एवथानेर

ପୀଠ । ଦିଦିବବ୍ ପୁରୁଷକାଳେ ଏହିପାତଙ୍ଗାଶ୍ର
ଯହାରାଜାଦେର କୁକୁରୀ ନିବିଷ୍ଟ ଭୃତ୍ୟାବତ ମିଳ
ଏଥାନେও ମେହେ ତାବ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ଦୁଷ୍ଟବ୍ୟ ହେଉଛେ
ଆତ୍ମବ ତାହାର ଓପର ଆବଶ୍ୟକ ଦିବେଚନା
କହିବା । ଏବଂସର ଶେଷ ହେଲ ଉପାଚି
ଅଧୀନକାର କର କି ପତ୍ର କିନ୍ତୁ ଆଇମେ ନା
କାରନ କି ତତ୍ତ୍ଵଦିଶ୍ୟ ବମ୍ବନ୍ଦରାଯ୍ ପାଞ୍ଚିକ ମହିତ
ପରିଦାର ପୌନେର ଜନ୍ମେରିତ ହେଲ ମାତ୍ରମେ
ମହିତ କର ବକୀ ମଂପୁତି ଦଶବନ୍ଦ ପ୍ରେରନ
କରିଯା ଗୋଲ ନାହୁଁ । ଏଥାନେ ମପ୍ରତି
ବିପ୍ରାହୁ ଓପରିତ ମିଳୁକୁଳାଦିନ ଯାନର ରାଜା
ବଲବନ୍ଦରାଯେର ଓରର ବଲ କରିଯା ଅସିକୋର ଲୁଟେ
କରିଯାଇଁ ତାହାର ପୁତି ହଳ ଦିତେ ହେବେକୁ
ତାହାର ଆମନ୍ଦକାଳ ଓପରିତ ବୁଝା ପାଇତେଜେ
ନତୁବା କି ଆଖାକ୍ଷମ୍ୟ ଏ ରାଜ୍ୟର ଓପର
ଦୌର୍ଜନ୍ୟତା କରେ ଯାହା ହେବୁ ଏଥାନେ ଏକଜାଇ
ନବଲକ୍ଷ ମେନା ପୁସ୍ତକ ହେବାଇଁ ଏବଂ ତୋର୍ଯ୍ୟରୀ

ମହଲେ ୩ ଆପନ୍ତି ଦଳ ମହିତ ମିଳୁଳୁଳ
ଦେଶ ଗମନ କରିବା ଏଥାନକାର ବାହିତି ପୁଅସ୍ତ
ଆନିବା ଇତି ।—

ଇତି ଠାକୁରଙ୍କେ ।—

ମୂର୍ଦ୍ଵତିଳ୍କ ଶୁଦ୍ଧମତି ପୁଅତେ ଭକ୍ତି ଆତି
ରାଜୀ କୁଣ୍ଡେ ନିଷ୍ଠୁନ୍ଦ୍ର ପୁଅର ପାଲନେ ମୁହଁ
ଅନୁଭୂତ ଅନ ପାଲ ଶତ୍ରୁ ଯଦ୍ୟ ଯେନ କାହିଁ
ପୁରକୁ ତାଗିତା ଅନ ଭକ୍ତରୀୟ ନାରୀୟନ
ଲିଖି ଦୃଷ୍ଟ କରି ନିରକ୍ଷର । ତୋରୀର ଓ ଦେଶ
ଏଥାନକାର ରାଜ୍ୟଗତ ଇତାବଦି ଜ୍ଞମି କୁପନ
ଯାହା ହୁଏ ନାହିଁ ଏବଂ ଆର ଦୃକ୍ଷାଦିର କର ବନ୍ଦ
ହୁଏ ନାହିଁ ଅତେବ ଓ ଆଫଳ ପରିଯାନ କହିତେ
ହେବେକ ଉଦୟ ଚରିଯାନ ରକ୍ତ ତିର୍ଯ୍ୟାନ କହିତେ

ଆରଣ୍ଡ କହିବା । କୁପନ ବର୍ଷା ମଧ୍ୟ ପରିମାଳ
 ଆରଣ୍ଡେର ଫାଲ ନହେ କାହିଁକି ଆରଣ୍ଡ ହେ
 ବେଳେ । ପୁରୁଷୁରେର ଗୋପାଳଗୋଦିନ ତାହାର
 କର୍ତ୍ତା ହଇୟାଇେ ଭୁବନେ ଆଜା ପନ୍ଦ୍ର ପାଇଲେ ଓ
 ଅଛଲେ ଗତି କହିବେଳେ ତୁମ୍ହି ଓହି ଅଧିକ
 ମଧ୍ୟ ମହୀନାଳ ଓ ଶୋଷ ଓ ଦୂଷିକୁ ସାଙ୍କାଳ
 ଥାଏଇବା ତାତିକ ଶାମେର ପୁପମେ ଏକ
 ଦାରେ ମଧ୍ୟରେ ପରିମାଳ ଆରଣ୍ଡ ହେବେଳେ ।
 ଅନୁଷ୍ଠାନିକ ପୁତି ମହମୁ ରଙ୍ଗୁତେ ଏକ ଜନ
 ଆସିଲ ଏକ ଜନ ଲେଖକ ଢାରି ପରାତିକୁ ଦୁଇ
 ରଙ୍ଗୁରୀରି ଢାକର ଏବଂ ହରତି ଦୁଇ ଲୋକ
 ତାହାର ମାତ୍ରେ ଓ ପୁରୀନ ପୁରୀ ଲୋକ ଆପନାରେ
 ତାହାର ଆୟୋଜନେ ଥାକିବା । ବ୍ୟାମ୍ବୁଦ୍ଧର
 ଦୃଷ୍ଟିର ଫାଲ ହଇୟାଇେ ତାହାର ଶ୍ରଦ୍ଧର
 ନିଯମ ହଇୟାଇେ ତିନ ଲକ୍ଷ ମୁଦ୍ରା ତାହାର ପଞ୍ଚାଶ
 ମହମୁ ତୋରାର ଐତିହାସିକ ବିଦ୍ୟା ଗିଯାଇେ ତାହାର
 ବନ୍ଦୀନ ଦୃଷ୍ଟିଗେତ୍ର ଓ ପର ଘରୋପନ୍ୟୁକ୍ତ

ଅର୍ଥାତ୍ କରିଯାଇ ଲାଇବା ଟୋକା ଏଥିନ ଡାଙ୍ଗାର
ହିତେ ଦେଓଯା ପେଲ ଜାନିବା । ଆହାର ଓ
ଆଶଳେର ବିରାମିତି ଲୋକେଇବିଗେହେ ନିଶ୍ଚନ୍ତ୍ଵ
କରିବା ଯେ ବାହାର ଆନ୍ତର ଅଧିକାରୀର
ଦୁଃଖନ ପଣ୍ଡିତ ଲୋକେଇବିଗେହେ ଆତ ଲାଇବା
ନିଶ୍ଚନ୍ତ୍ଵ ଆମିଯା ଅଧିକାରୀ ହେବାନ । କାହା
ପୁରୀଦିର ଯେଇ ପରିଧିତ ପତ୍ର ଡେଣ୍ଟାର ଓ ପାଇଁ
ପାଇଁଇବା । ତୁ ଯି ଆତ ଆଜିହ ଚାହୁଁଏବା
ରାଯିକେ ଘନୁପୂର ପୁର୍ବତି ମଞ୍ଚ ହେବାର କର୍ତ୍ତ୍ଵ
ଦେହା ଗିଯାଇଲ ଏଥିନ କୁଏକ ସମରଗତ ହୁଏ
ମେ ଦେଶେର କର ଏବଂ ଓନୀଯବ ଇତ୍ୟାଦି ଯାହା
ନିଷୟିତ ଆଜେ ନା ପାଠୀନେ ଏଥାନକୀର୍ତ୍ତ ଲୋକ
ବ୍ୟାଙ୍ଗ କରିତେ ଗିଯାଇଲ ଏଥିନ କନ୍ତି ଗୋଟିଏକ
ହିତେଜେ ଯେ ମେ ଅମତ ଯତି ଜେବି ରାଜାର
ମହିତ ଘୋଗ କରିଯା ଏଥାନକୀର୍ତ୍ତ ଆଜା ଅନୁ
କ୍ଷାର ଆବଶ୍ୟକ ହାତିଥିଲା । ତାହାର ଦୟନ

आदर्शाङ्क हिन्दु छेदि राजार महित कलह
 ओमहित आतिवा तिनि आशांत्र ऐश्वर्य बीर्य
 अहीत नहेन अउवर एथानकार चिह्नित
 लोकेरदिग्निके भूलइया एषत आठरन
 कहेन ए ताहार कृत्यांचिते आक्षयन करि
 यांजे इहार निवारनाथे इजुरदाय मेना
 पति लक्ष अश्व महित गियांजे आर१ ममन्त
 राजारदिग्निके मञ्जुघान हइते पत्र गियांजे
 रुठक१ आमियांजे वकी आमितांजे अद्य
 कल्य आमिरे तुग्य ओपानकार मेना मञ्जु
 हइया ए पत्थे गति करिवा विलम्ब ना इय।
 वामनपूरेर चम्पास्त्रि प म० हक्के म० वाद
 दिवा मे पून् मञ्जुते आइसे। छेदि
 राजार कृत्य ताहाके देया घाइबेक
 गोमती नदीर पूल बज्जेर कार्ये पूर्वे
 मकपदामरात्रि नियुक्त जिल ताहार पत्र
 लोक हइले कृष्णमूर्द्ध नदापन इयांजे।

शुभिलाले तोमार अपानकार इन्हें लोक
 उहाँके माने ना एवं आज्ञानुयायि आर
 प्रकृत कीर्त्तने पुत्र वरे ना ए अति
 अनुच्छृङ्खला देताइया दिवा ए शत ना रुद्रे ।
 ए विषय आपने ओ मारदीन इवेन ना हय
 इहार अनुयोगी आपानकार उपर पड़े ए
 प्रकृता दृश्य विषय केनना अपानकार पुलेर
 विषय ठुक्कि इयां नियम इयां गियांज्जे
 याहाँ तुहिते पुनर्भव इवेक्ष ए सकल
 धरात प्रति उहाँरि उपर देना इवेद अपान
 कार पुल वज्ज ना इले किम्बा वासिते कौंडा
 थाके पड़े उक्तिया नेने ए अस्तले ममनु
 देश तुविता पाय उहाँते उआँद्रेन
 कोठि टोवा क्षिति विवेचना रुद्रिदेन इति ।

ରାଜୀ ଠାକୁରଙ୍କେ ।—

ଘରୀର ଘରୀର ବୈରି ଦର୍ଶନ ହାରୀ
 ପୁତୁ ପ୍ରିୟ ତିତେନ୍ଦ୍ରିୟ ମର୍ବର୍ତ୍ତିଳ ଦୀର୍ଘା ।
 ଆଜୀ ପତ୍ର ଦୂଷିତ ଯାତ୍ର କରିବା ଓପାଇ
 ଯେନ ଯତ ଦୁଷ୍ଟ ଚିତ ହୟ ପରାଜୟ ।

କିଞ୍ଚିତ କାଳ ହେଲ ଏଥାନକାର ଜୀବନ
 ଭିଧ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତାଥ ବାରାନ୍ଦୀ ଅଗିମନ
 କରିଯାଇଲ ମେ ମୂଳେ ବିଶେଷର କର୍ତ୍ତା
 କାଶି ଯୋକୁରୀଯ ମଦ୍ୟ ମହାମୂଳୀ ଶାନ୍ତି
 ପୁରୀରେ ପାଓଯା ଯାଏ ଯେ ମେ ମାନ ଗମନେ
 ତେଇ ପାନୀଗନେର ପାପେର ବିମୋଚନ ହୁଏ
 ଶାନ୍ତିକୁ କିମ୍ବା କରିବେ କି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାହାର
 ଗନନା କି ତାହା ଅନ୍ତର ଗନ୍ୟେ ମଦ୍ୟ ବିପ୍ରାତ

ये शाने आङ्किकोटि ऊर्ध्वे अस्तित्वे ओ
 त्रिश्चकोटि देवतार वास मैन। ए
 सबले आपनै मूष्ट इच्छा ओ मुक्ति आकृत्ति
 अवहिति करितज्जन शास्त्र वल बोगा
 पृथिवीर शर्वा नहे दाशी मूकिदा उत्तमाश
 पूरी अवीरमातूल उच्चे दुश्माओ बोगी
 भेद करिया ताहार ज्योति से निता वाण
 ये शाने मूनिकर्त्ता उत्तर वाहिनी हृषि गंगा
 शास्त्रोक्त महा पूर्वजन्म ए इन लोक
 लोकेर शने दूष्ट वदाचित्त फ्रमे हाना।
 सर्व नाना मैन ओ देव दृश्यन ऊर्ध्वांश्चित्तने
 इटन करितज्ज गक्तिरे मूनिकर्त्तार
 शाटि प्रत्यक्षि शाने घाति लोक शान पूर्ता
 उर्वन इत्यग्नि करिया वेदवृनि करितज्ज
 एहि यत्ते सर्वत्र लोकेरदेर अमीशात्म
 आयि ओ मैस्त्र्य शानै गतायाति करिया
 शास्त्रोक्त पूर्ण मरुय ओ दर्शनीय आनन्द

ପର୍ଯ୍ୟାଟନ କରିଯାଇ ଯହାନଙ୍କେ ପୁଲୋକିତ ହେତୁ
 ଛିଲାଏ ଇତିହାସୀ ମୁନିପୁରେ ଗାଡ଼ର ଅଧିନ
 ହଦିବଳ୍ଲତାୟେର ନିବେଦନ ଲିଖି ହାତା ତାନା
 ଗୋଲ ଗୋଶ୍ଚନ୍ତି ଦେଶେର ନରପତି ନବକିମୋହନ
 ପୁରୁଷୁନ୍ଦ ଜାନିଯାଇନ୍ତି ମାଜନୀ କରିତେଛେନ
 ହିନ୍ଦୁମୁହାନେର ଓପର ବଳ କରିବନ । ସମୟା
 ନୁକ୍ତ ଦୂରଦୂର୍ଦ୍ଵିତୀୟ ତାହାକେ ଘଟନା ହେଯାଇଁ
 ପୁର୍ବର୍ଷକୋ । ତାହାର ଦିନ୍ଦୟବ ହେଯାଇଁ ଯେ ହୋଲେ
 ଗନ୍ଧାରିର ରାଜ୍ୟ ତାହାକେ ଯାତ୍ୟଚୂତ କରିଯା
 କାହାମାରେ ନିଗୃତ ବନ୍ଧନେ ରାଜ୍ୟାଛିଲ ତାହାତେ
 କ୍ଷୁତ ଆଜେ ଏଥାନକାର ଯହାରାଜ ଆନେନି ଓହାର
 ମାହ୍ୟାପ ମେନା ମଜ୍ଜା ହେଯା ଗନ୍ଧାରିରଙ୍କେ
 ମହାର କରିଲେନ ମେହେ ଅବସି ମେ ରାଜ୍ୟ
 ନିଆଶିକାର ଭୂକୁ ତାହାତେ ଇହାକେ ମୁକୁ
 କରିଯା ଆପନ ରାଜ୍ୟ ପୁନର୍ବୟ ତିପୁକୁ କରିଯା
 ଛେନ ଏ ଓ ଏଥାନକାର ଏକ ଜନ ପୁର୍ବାଦୁ ଯଦୀ
 ଗିବନା ଛିଲ କହ ପୁରୀନ ଓ ମେହେ ଯତ କରିତ

मे यांचक्काल गिरु होइले परंतु आशार
 समय हेतु उद्दनुक्तप्त आठरवने आठाटी जल
 एप्ने हटोऱ्या ए माहिम ए कोपा होइते
 पाईल कि पराक्रमे इहार एतेक माहिम
 होइयाचे आना गेल ना । बुधि ताहार
 सहाय ओ वा अन्य केहे होइया पांकिवेक
 नतुक्का एतत आठरवने महसा विषय कि ।
 याहा हुक्क ताहार दग्धन कृत्या होइयाचे
 अत्यव तुम्हि निझी परिवार मेता माजनी
 कृतिया ताहाके ममहायाते मंहार कृतिया
 गोश्चर्द देश कृत्याल कृतिवा आमि ओ ए कृप्या
 माकेनम कृतिया दक्षिण ममुद्र तीरय
 यावदीय दुष्टके निवत्त कृतिया ममुद्रनाथेन
 ओ अफ्टले गति कृतिव आनिवा इति ।

ରାଜୀ ଠାକୁରଙ୍କେ ।—

ଶୁଦ୍ଧ ମିତି ଶହୀଯତି ପୁଣ୍ୟ ଅନୁଭବ ।

ଦ୍ୱାରାଶୀଳ ସିମ୍ବଶୀଳ ଦସ୍ତା ଅଭିଷିକ୍ତ ।

ବିବେଚକ କୁଞ୍ଜଶାନ ଶହୀରୀୟ ଚନ୍ଦ୍ରଭାନ । ଆଜୀ
ପତ୍ର ପୁଣି ଶନୋନିବିଷ୍ଟ କରିବା ବିବେଚନା
କରିଯାଇ ରାଜନୃଦାତିଙ୍କ ଇରିଶକୁ ଦ୍ୱାରାବରି
ଗ୍ରାହନେ ଆଦିମିତି କରିଯାଇ ପୁଣ୍ୟ କରିଲ
ଆଏନ୍ତି ଈହାର ବିଷୟ ମନୋଯୋଗ କରଇ ନା
ଈହାତେ ନାଗପୁର ଅଧିକାରୀ ଶାହରଙ୍ଗାର ରାଜୀର
ମେଗା ମେଓ ବିରୋଧେ ମଦା ମୟର୍ବଦ୍ୟ ଓ ପ୍ରଦୂର
କରେ ତାହାର ବାରନ କେବଳ ଈହା ଦିଯା ହିତେ
ପାଇର ନା କହିଲ ଶାହରଙ୍ଗାର ଈହାର ରାଜୀ କତକ୍ରୁ
ଅଧିକାର କରିଯାଇଛେ ମେ କେବଳ ଈହାର ରାଜୀ
ମହେ ଏତ କେବଳ ମଦ୍ୟ ବୃତ୍ତି ଆପନି ତାହାର
ଅବଗ୍ରହ ନହେନ ନମତ ନହେ ତଥାହ ଆଲମ୍ୟ

ଇହାର ଭାବର ହୁଅ ଯୁଦ୍ଧର ଅମୋତ୍ତର ଘରୀବନ୍ତ
 ତମିତିଂ ଏକଲାବତି ପୁରୁଷାତରଳ ପରିତ୍ୟାଗ
 କରିଯା ଆ ଥିଲି କିନ୍ତୁ କିମ୍ବା ମନୋଯୋଗ
 କରିବା ଶୁଣି ନା ହୁଯା । ତୁମେ ଯଦି ବର୍ଣ୍ଣିରେ
 ମୁଖ୍ୟମ ପାନାତେ ନିରସ ନା ହୁଯ ତୁରେ ଜାନିବେ
 ନିତୀତ ତାହାରଦେର ଶୈଶ ଦଶ ଓହିତ
 ଆହୁରାର ମହେ ତାହାରା ଯତ ଆଜ୍ଞନ ତେଥାର
 ନିରେମନାନୁମାରେ ତାହାରଦେର ଦମଳାର୍ଥେ ବିଦେ
 ଠାଳୀ କରା ଯାଇବେଳେ ଭାବନା କରିବା ନା । ଦୃଢ଼
 ବ୍ୟାଜା ଓ ଯାହା ଆହୁରାର ଚିତ୍ତେର ଡାଙ୍ଗେର
 ତାହାର ଅପରିଦୟନାଯ ପୁଅଗତ ଓପଦେଶ କରା
 ଗଲେ ତଥାତ ସହେ ନା ଆହିଲେ ବିଜୟିନୀ ମନେ
 ଉତ୍ସବରୀଦଳ ଗିରିଜା କରିଯା ଅନ୍ୟାନ୍ୟିତ କରିଲେ
 ପ୍ରାଣିନେ ତାହାର ତୋଳ ପୂର୍ବକେ ନିପୁଣ କରିଯା
 ଛିଲ ନିଯମିତ କବୁଦ୍ଧ ଆଜ୍ଞନ ଇହାରଦିଗିକେ ଏ
 ମେହି ଯତ ନା କରିଲେ ଓହିତ ହାବେଳୁ ନା । ମେହି
 କୌଣସିଲ ହିଚିତ୍ର କ୍ଷୟ ତାହାର କର୍ମାନୁଷ୍ୟାର୍ଥି ଜଳ

ଏଇକବେ କୁର୍ରା ପାଇତୁ ହିନ୍ଦୁ ମାଇଶ୍ଵରୀ ରାଜୋର
 ରାଜୀ ଅନୁତ୍ମ ନୀଳଦ୍ଵୀପ କୁର୍ରାକୁ ବିନ୍ଦୁ ପ୍ରକୃତ
 ଇହୟାଇଁ ତାହାରଦେର ମହିତ ପୁଣ୍ୟାନୁଷ୍ଠାନେ
 ଏଥାନକାର ମହୁର ଏବଂ ମୌହାର୍ଜା ଇମାନିକୁ
 ନୀନା ଯତ ଓପାଇନ ପୁଦାନେତେ ଏଥାନକାର
 ମହାଲେଇ ଅନୁଗ୍ରହ ତାହାର ମାହାଧ୍ୟାର୍ଥ ବିବେ
 ଚନ୍ଦ୍ର କୁର୍ରା ଗିଯାଇଁ ମାଶକୁ ଓ ଆମେକ ପଞ୍ଚ ଗତ
 ଇହୟାଇଁ ପୁନରାଗମନ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ କରା ପାବେକୁ
 ଏହି ଇଛା ତବେ ଯଦି ମାଇରାପ୍ରେରଦେର ଦିନ୍ଯା
 ଜୀବ ହୟ ପୁତ୍ର ପୁସ୍ତନ ଇତି ଓ ମୁଖ୍ୟି ଦିନ୍ଯା
 ଗତ କାଳେର ଦୁର୍ଜ୍ଞନାତେ ଲଙ୍ଘାବିତ ଇହୟା
 ପରତଳେ ଶରନାଗତ ହୟ ଏବଂ ନିଯୁମିତ କୁର୍ର
 ନିଯୋଜନ କରେ ତବେ କିମ୍ବା ବଳୀ ଯାଏ ନାଁ
 ନାଥପୁନରଶତି ତୋଷାକେ ଦେଖିଅତ ବାହୁ କୁର୍ରେ
 କୁହେ ମେ ତୋଷାର ଶିତ୍ରବାନ୍ଧବ ଏବଂ ତୋଷାକୁ
 ମହିତ ଓ ପୁନର ଆଇଁ ଏଥାନେ ଏ ପୁନର
 ପୁରାଣ କରି ଚିରକାଳୀବଦି ମେ ଏଥାନେ

कार्यालयमें से पूर्ववर्ती पासितों करिया गया
 पुनर्जु अग्रगति देवके नामानियां पूरी छुट्ट
 करियाचिल ताहार शोधाप्ति वर्षद्वं पास्ति
 पाइजेत्ते । पूर्ववर्त वड़ दूष्ट अमृत छिल
 एथन ताहार आलोप्ते आशयते दूरा याय
 बुद्धि देवता इहाके पुमन इहेया २ किवेन
 नतुरा पूर्वकार दूर्तिता त्रुटि इहार विषय
 कि यदि तोयार आइमन मारिताक्षये ए
 अस्तले हय इहार विवेचना करिवा ताहार
 इहा इहाके आरवार निज पदे अपन कठा
 याय किन्तु तोयारदेर अनुरद्धि तोयदी
 आहाय करिले इहेते पाठे एवं अनुरद्धेर
 ए कर्तव्य बडेय यद्यपिसाति तोयारदेर
 अहवान हय उथात इहार आर विपद वड
 इहेते पाठिवे ना । किन्तु विपदेह वक्तुके
 चेना याय हारपालवासी दिग्मूर राजा
 अक्षयात्म दर्शने ए पर्थे याइजेत्ते एवं

ଏଥାନକାର ଅମେହେ ଓ ମେଇ ମହାତ୍ମିବାହୀନେ
ଯାଇଲେଜେ ଇହାରଦେଶ ଆନୁଗୀତ୍ୟ ଯେ ଓତିତ
କବିବା ମଧ୍ୟନ୍ତ୍ରଜ ଲୋକ ଯେନ ଓ ଅପେ' ବହିରୁ
ଆଦଶ୍ୟକ ହୟ ଆନୁକୁଳେ କୁଟି ନ ହୟ ।
ଦିଗନ୍ତର ଏଥାନଦାର ଅତ୍ୟାନ୍ତ ଶରବାଗାତ ଏବଂ
ଓନ୍ତକାହିଁ ଚିରକାଳ ହଇଲ ଏହୁ କାଳେ ଆମି
ଓରାମୀନ ବେଶେ ଦ୍ୱାରକା ଦର୍ଶନେ ଯାଇତେଜିଲାମ୍ୟ
ଡାହାତେ ଇହାର ଆଶ୍ଚର୍ମେ ଅତିପି ହଇଲେ ଏ
ଅନୁମାନେ ଆମାକେ ଜୀତ ହଇଯା ପୁନ୍ର୍ମଜ୍ଞାତେ
ଆମାର ସହିତ ଯାଇଯା କୃଷ୍ଣ ମକୋଳନ କରାଇଯା
ବୁଜିଦିନି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆମିଯାଜିଲ । ଅତେବ
ଡାହାର ପୁତ୍ରାପଙ୍କାର ଆପନି କରେନ । ଇତି
ମାତ୍ରୀ ଯଦିତୁ ହିନ୍ଦୁମୂଳନେର ମିଠାମନମ୍ଭ ଆମି
କା ଥାକି ମାତ୍ରାଦ ଅନୁମଜ୍ଞାନେ ଆପନି ଦ୍ୱାରା
ପାଲକେ ମାତ୍ର ଲାଇଯା ମେଇଧାନେ ପୌଣିବା
ନତୁବା ହିନ୍ଦୁମୂଳନେ ପୁନର୍ବର୍ଦ୍ଦୟ ଘରିଯା ଆମିଯା

‘मायाकुटापे’ किछुकाल भाने हिम्म रहित
 रात्रि करे उवे ताहा रात्रि रात्रि
 पूर्वे गड परिष्ठारु रहिते मैसेन्य राम
 रहिवेह आठक हवेह न। मरुल कार्य
 प्रनिवास पुर्वक किवा। इति ।—

राजा ठाकुरके ।—

हितकारी अदोषारी शुचि यहा दीर
 डाले बले अबर चाले अद्यु शरीर ।
 प्रकृत कार्य अति शीर्य अबल शद्य
 पर्वाक्षय असम नवरात्रि राय ।
 आजा लिखि दृष्टि रहि कार्य आठडिका
 रहाचित ताहा आनुचित ना किवा ।

'आप विवरनके विशेष तोषार ओ अफलेह
 महार्या मंहा पीठ ज्ञालाम्बुध मे आति ठस्तकृत
 मूलत शुनिलाम्ब मेप्रानकार सेवादि एप्त
 पूर्वमत हय ना तोषार वज एकटा मनो
 योग्यमे विषय पूर्ति नाइ ए वजहे विवर
 कृपा आयि बुद्धि तुम्हि ताहाते जात नह
 जातवर मे विवरन लेपितेछि मनोयोगी
 कृदिवा। महादेव विवाह करेन दक्षर दूहिता
 महाशक्ति अवतीर्ण दक्षर गृहे ताहार
 नाम्य मती। दक्ष महावाक्ति पूजार्ति दुर्मार
 मानम पूर्ण शब ताहार यामाता वटे किन्तु
 इनि अनादि कृत कोटि दुर्मार इहार
 आज्ञावह ताहाते दक्ष कोन व्यक्ति ताहार
 पूर्वमादिनाम्बद्य महाशक्ति भगवती ताहार
 कृन्या कृपे अवतीर्ण इलेन मेरे कृपा
 महाशक्ति तिनि महादेवर शक्ति। महादेव
 दक्षाक शक्तर तावे पूर्णम दरेन ना इहाते

दक्ष यहाँदेवरु पुति आत्मिति कृपन नहैन
 एवं कोपिति एवं कृपन कुमारी बाला
 यहाँदेवरु विश्वरीते रहेन् एই यजुर्वला कृष्ण
 कृलगति हय । एक मध्यस्थिति यहाँमूलि
 यज्ञे द्विजुन नियन्त्रुन इत्येस ममन्त्र देव
 गणेश आग्नेयन दक्ष पुजापति उत्तापि
 ममस्तु भास्तु एव खाले यहाँदेवरु
 आग्नेयने मक्कलेह ओप्पान करिया अभापत्ता
 करिले पुजापति दक्ष अहक्षारे अहक्षित
 इयेया यहाँदेवरु पुनः ना रहाते ओप्पान
 करिलेत ना एवं आलान् ओ ना करिया
 अना लोकेश महिति शिवलिङ्गाय पुरुष
 मेह इत्येऽप्तकु देष विद्येष एवं शिव
 निर्माण ममा पंडु दक्ष यहा कोपे नितालय
 पाइया आशनि ग्रजारुमु करिलेत विवेचना
 एই ये आशारु यज्ञे यहाँदेवरु नियन्त्रुन
 करिव ना इहात्तेऽप्ताह्नि अनश्वान इवेदक्ष

ऐ याते यज्ञाद्यु करिया समस्त आद्युन
 करिलेन महादेव ताहारि पांशुता ताहारि
 कला महाशक्ति भटी शिवेर मरनी उपाठ
 ताहारि प्रति दृष्टि ना करिया रोषपृक्षे
 समस्ते विस्मृति कला किं पांशुता काहाके ३
 नियन्तुन करिलेन ना । ऐ याते दक्षर यज्ञ
 हइतेजे इति यद्यो भटी पितृगृहे ५६८
 कुनिया ५६९ चित्त हइया अत्यनु काउरा
 भटी निवेदन करितेजे न महादेव प्रतो
 पितृगृहे महो-मव आशारि छित्त एकाङ्ग
 द्याकूल हड्डार्क चियकाल गत हड्डे यरील
 मूत्र करे आशारि मरे आसियांचि परे
 कम्पन पितृगृहे याई नाई ५७० शाता
 पिताके देखि नाई आसि आशारि शातारि
 कला शाता आशारि वडे भाल वांसेन
 आसि ओ मेरे यत आशारि हड्डा पितृगृहे

ଯହିତେ ତୁମି ଆଜ୍ଞା କର ।

ଠରନେ ଦୀର୍ଘିଯା ମାତି ଆଜ୍ଞା କର ଓ ଲିଖି
ପଢ଼ିଗୁହେ ଘାଟେ ପୁଣନାଥ ।

ନିତାର ମନ୍ଦାନ ପାଦ ଡଗ୍ଗିଗାଳେ ମହୁଷିର
ପାଦ୍ୟର ରଙ୍ଗନେ ପାଦ ତାତ ।

ଏ ରୂପା କହିଯା ଯହାଦେବେର ଠରନେ ଦୀର୍ଘିଯା
ମାତିନା କାହିଲେ ଯହାଦେବ ଦିମାର୍ଥ ଚିତ୍ତେ କହିତେ
ଜେନ ଶୁନ ତୋମାର ନିତା ପାହତ ଆଶାକେ ଯାଏନେ
ନା ଦେଖ ମେ ଆଶାକେ ଅଧାନ୍ୟ କବିବାରୁ ନିଶ୍ଚିତ
ଆଶାକେ ନିଶ୍ଚନ୍ଦ୍ରନ କହିଲ ନା ବିଜା ନିଶ୍ଚନ୍ଦ୍ରନେ
ତୁମି ଗୋଲେ ମନ୍ଦାନ ପାଦା ନା ଏବଂ ଆଶାର
ନିଶ୍ଚନ୍ଦ୍ରତେ ତୋମାର ଦୁଃଖ ହେବେର ପରିଚାତ ତାହାର
ବାଇନ ହେବେର ନା । ଆତ୍ମର ଅନିଶ୍ଚିତ ସାନେ
ଯାଉୟା ଓଚିତ ନହେ । ଅତି କହିତେଜେନ ପୁଣ
ନାପ ଆନ୍ତରାର ଯାତ୍ରା ନିତାର ନିଶ୍ଚନ୍ଦ୍ର ଅନି
ଶ୍ଚନ୍ଦ୍ରନେ କି ହୟ ତାହାରଦେହ କାଜେ ପୁଣ କନ୍ଦାର

अस्त्रान् अस्त्रान् हि आशारु पिता आशारु
 कर्त्ता ताल वासन आशि बुद्धि आशारु अस्त्रा-
 न्नान् कठिएव ता मती याउनेरु ओप्पुको
 निताङ्क पिताजा तहिले सती किम्बाशाका
 दोदल करिते यहाकोविते कोविता
 हइया पंद्रहुजे गति करिले यहादेव तन्मि
 यहाकाल मिरमेवकोके आज्ञा करिले
 यहाकाल यहायान् लड्या पञ्चात्तुर्तिजा
 करिया कुत्तु द्रुहे गोल देवी स्मै घोना
 रोहने दक्षयान्यु ओप्पिति पुसती सती
 कृत्याके दृष्टु यात्रेइ प्रेमानन्दे पुलोकित
 हइया गद गद छित्ते याइया कृन्यारु युग्म
 चुम्हन करिया कोते करिया लृत्य करिते लागि
 लेन् एই यत्ते प्रेमान्तु सती ओ यतीको
 पुर्वाय करिया आरे मध्यन्तु उगीनी ओ अशात्य
 गीवके मध्यांघ करिया यज्ञ भाने पितारु निरुष्टे
 हाइया पुर्वाय कठिले दक्ष तोहाहे देखिबा

ମାତ୍ରକେ ହରକାଳେ କୋଣିତ ଇଇଯା ଶିଖ
 ନିରାଯୁ ପ୍ରେସର୍ ହେଲ । କହିଲ କଲୋ । ତୁ ଯି
 କିମ୍ବର୍ତ୍ତ ଏଥାନେ ଆମିଯାଇଁ ତୋମାର ମାତ୍ରୀ
 ସ୍ଵାତ୍ମର ପତି ଶୁଶ୍ରାନ ଯମାନେ ତାହାର ଅବସ୍ଥିତି
 ହାତୁ ମାନା । ଗିଲାଯୁ ମାପ ଲଇଯା ତାହାର ଠେଳା
 ବାଦିଯାର ବେଶ ତୋମାର କୁଞ୍ଚିତ ଯମ ଅତ୍ୟନ୍ତ
 ଏହା ଦୃଢ଼ଳା ତୋମାକେ ଇଇଯାଜେ ଆମି
 ତାହାକେ ନିଶ୍ଚନ୍ତିନ କରିଲାମ ନା । ଏ ଦେବମତୀ
 ଆମି ଦୁର୍କାର ପୁଣ୍ୟ ବାଦିଯାର ନିଶ୍ଚନ୍ତି ଦେବ
 ଅଭ୍ୟ ହେତେ ପାରେ ନା । ମତି କହିଲେନ ପିତା
 ଏହା କୁଞ୍ଚମା ଯହାଦେବେର ପ୍ରତି କହ କେନ ଯହା
 ଦେବ ଦେବଦେବ ଦୁର୍କା ବିଷ୍ଣୁ ଉତ୍ୟାଦି ପାହାର
 ପାହ ଯାଏ । ଶରନାତ୍ମତ ଯେ ଇହ ଯହାବୀର ତ୍ରିପୁରା
 ମୁହଁରକେ ମହାର କରିଲେନ ଯେ ଇହ କାଳକୃତୀ
 ପାନ କରିଯା ମୃଷ୍ଟି ରଙ୍ଗା କରିଲେନ ତାହାକେ
 କୁଞ୍ଚମା ଦାଳୁ ତୋମା ସାତିରେକ କେହ କାହେ ନା
 ତୁ ଯି ଏ ଅନୁଚ୍ଛି କିମ୍ବା କେଳ କର । ନନ୍ଦି

कहिल दक्ष निर्मारु प्रति छलं परिवा' ये
 मुख्यं शिव निर्मा कविला उहा तोशारु
 लार्ण इडेया छागिल बदन इटिवेक्ष एই महल
 दाक्षे दक्ष पूनर्वारु शिव निर्मा कविले
 प्रबुर्त इले सउ महा ज्ञाते कुपीन कविलया
 कहितेछेत निता महलेर ओन्हुजु उँक
 निर्मा शुद्धने लोक निर्माकेर शिव जेद्दल
 कविवेक्ष नहुदा निज पूनि उगागी कविवेक्ष
 किम्बा से द्वान तागी कविवेक्ष आग्नि आपन
 पूनि उगागी कविवेक्ष तोशारु आख्या उन्
 आरु रापिव ना एই कहिया बमन आठिया
 परिया याइया यदीम्हाने बसिया शिव कृष्ण
 द्याने पूनि तागी कविलेत। महारु यदी
 द्यानागीने कोराहु लक्षिले दक्ष उहाड़
 दिगीक्षे याक्षिया थेसिया दिल। नदि दाना
 गीन अमुदाय लइया रोदन कविले शिव

आङ्कांति निवेदन करिया शांत्रुहे शहादवं
 क्रोधाविष्ट भित्तव लोगान्तु इत्तेऽ शहा
 क्रोधावेश राजान्तुर्कान्तल अय इश्या मनुक
 इत्तेऽ प्रण अटो जेमन करिया ग्निलेण्टे
 ताहात्ते शहावीर बीरभद्र उत्तर्म इत्तेलेन
 वीरेव शम्भु गग्नेम् शम्भु लिलेक शहादप
 राज बीर पूर्वे चक्र उत्तरव अदा क्रोधिषुकु
 अन्नावा शांत्रुहे रुद्रपूर्टे निवेदन करिलेन
 देव देव आग्नि क्षि रुम्य करिव। भित्त
 करिलेन दक्षके मृग्हाय रुद्र एव० तष्ठ
 रुद्र ताहात्ते एज आजानुमात्रे बीर भाज
 कोठि दाना महित भक्त्याव इश्या क्षन
 शांत्रुहे दक्षालय उत्तरिया तथात्ते दक्षर
 जेमन करिया एजकुउ भगवन् करिलेन
 एव० राजान्तेन त्रुम्भाव करिया एजकुउ पैदि
 भूर् करिल द्रुक्षनाके वूपित इस्तु दिया
 क्षम्भ इस्तु करिया नाना शत पूर्णाति कर्म्म

କାହାର ଶାର୍ଣ୍ଣ ଓ ପାଇଁ କବେ କାହାର ମନ୍ତ୍ର
 ଜୀବିଯା ଏଲେ ଏହି ଶାର୍ଣ୍ଣ ଅବଶ୍ଵ ମହାଦେବ
 କବିଯା ଯଜନାଶୀଯା ଯାଇଯା ନିବେଦନ କରିଲୁ
 କଲୁଛୁକେବ ଅବିଦୀନେ । ପରେ ମହାଦେବ
 ମତୀ ଅନ୍ତି ଦର୍ଶନାପ୍ତେ ପକ୍ଷେବ ଭବନେ ଓ ପଞ୍ଚିତ
 ହେଯା ମଜୀର ଯୁତିରେ ମନୁକେ କବିଯା ନୁହୁ
 କରିତେ ପୁରୁଷ ଏହି ମତେ ମହାଦେବ ନୁହୋ ପୃଥିବୀ
 ଭାରାକାନ୍ତା ହେଯା ଆଶ ମହିଳୁତା କରିତେ
 ପାରିଲେନ ନା ବ୍ୟକ୍ତ ମଧ୍ୟ ହେଯା ବୁଦ୍ଧାର
 ଗୋଚର ନିବେଦନ କରିଲେ ବୁଦ୍ଧା କହିଲେନ ବିଷ୍ଣୁ
 ବାତିରେକ ଇହାର ଓପାଇଁ ଆଶାଦିଯା କିଛୁ
 ହେତେ ପାଇଁ ନା । ପରେ ବିଷ୍ଣୁର ସୁର କବିଯା
 କହିଲେନ ପୁତ୍ରୋ ପୃଥିବୀ ଆଶ ଭାର ମହିତେ
 ପାରେ ନା ଏହି ମତେ ବୁଦ୍ଧା ବିଷ୍ଣୁ ମେହେ ଯଜ କାଳେ
 ହାତିଯା ଦିବିଦି ପୁରାରେ ମହାଦେବେର କ୍ଷର
 କବିଯା ବିଷ୍ଣୁ ଚକ୍ରତେ ମତୀ ଅନ୍ତି ଜୀବନ
 କରିତେ ସାମ୍ବନ୍ଧାଧିକ ଜୀବନ ହେଯା ପଞ୍ଚ

ইয়ে অভিন্ন হইল। সাহস্রে একাদশ লাগি
ইয়ে একাদশ লাগে পুনর হইল। সেই একাদশ
দ্বাদশ হইল পুঁথুৰু এক। পুণি দ্বাদশ উচ্চারণে
মাইলান্তির এক। কৰ এবং এক। ঐতুল
অবিষ্টান চূড়ান্তি উচ্চ উচ্চারণ বিশেষে
গোচরে অতপৰ প্রয়ত মহাশীল উচ্চারণ সেবা
ঠ্যা পুকৃত যত কৰিবা তাহার উচ্চারণে ওপুন
অতিক্রম কৰিবা না সাবধান ইতি।

হিতীয় বীরাম পুঁথু অবিষ্টা

পুঁথু পুনর পিতোকে এবং নিতৃতুল্য সমস্তকে।

পুঁথু পুজুন্ত শীঘ্ৰক পিতো
মহাশীয় আচৰণ কৰিলেস্তু। সেবনে
শীঘ্ৰক মৌৰ দামসংয পুজুন্ত পারে পুরান্তু।

निवेदनके विशेषज्ञ । अमरादीप्त
महार्षयेर आठवाँदु वीक्षण ए मेवक्षेत्र
प्रहिन पायत्रिह निष्ठाइ परम् आठवं निष्ठा
हैते ज्ञाइमनावसि महार्षयेर कृपा पंत्री पूर्व
वाय पाइया चरित्पि हैयाछि वाटीर
अखलेके पूर्वगतिक कृपाले आज्ञेन समझानु
कै मेइ मर्मिल ए देशेर विभूषि यथोचित
आद्य दूरे वृम्मरावसि हैतेजे गत वृम्म
वर्णा आमिया यावदीय लोक्येर वीन्य इत्यादि
कृष्णर अतिविष्व जनाइयाछे एषत वर्णा ए
देशे कृपन हय नाइ अशिति वृक्ष लोक्येरा
कहे ताहाराओ एषत वर्णा ए पूदेशे आइ
मन समाचार शुरून करेत नाइ अति वृक्ष
तांकार उपर मात आटे हात जल देखीया
अमन्तु लोक मूर्खिवाये तिन मास पर्याप्त
मोक्षारोहे पूर्व इक्षु करियाछे बड़व हैर
क्षम देशाभ्युगी हैया इक्षु पाइयाछे गव

वाहारु का जात्रा अमरकृष्ण देवतानि एवं
 वालीन जाहाज पहाड़ा जाहे जाहाजे
 अपानकांड महल लोकेहर नृषि देवतानि
 गुरु वैश्वदेव विष्णु इय नाहे लोक पूज्य
 अदिशंख राजम देवताने अमरान नाहे
 उनासु कि जाहाजे हितीर ओंकुर बर्गाजे
 यादवीय लोक निश्चल हैयाजे जाहाजे याहाजा
 लोंगार एवं बंलदान जाहाजा प्रभु वृत्ताजे
 पुरुष इहाजे यदिया जाहाज विष्णु छिल
 जाहाजा पुरुष निश्चल क्रिल बक्कि लोकेहरा
 देशे तिथिते पारे ना देश भरी हैल
 एवं दुर्या याइतजे गित वैश्वरेह राज
 स्वर विलि हैल न भराठीव पुतीकृष्ण लिपि
 शौकि रमापानहाजे आजानुयायि कथा यादिवेह
 बाटिते वाय रामनेर अलाटिन हैयाजे
 जाहाजे औषुड़ पुर्जाय अग्ने भास्त्रीय हैल
 जाहाजे आद जाहाजे कि लोकानि अपन विनिते

ନା ପାରିଲେ ପଞ୍ଚାତ୍ମକ ହିଂଟିଲ ଯୁଦ୍ଧ ହୈବେଳ ତାହା
 ଭାବିତେଛି ଅଷ୍ଟଭୂତି ଠାର୍ଡ ଟୋକା ପାଠୀଇତେଛି
 ଲହିଯା ଆତ୍ମରଶ୍ଵର ଯାହା କିଛୁ ହୁ ତାହା
 କହିତେ ଜୋଜା ହୈବେଳ ଅଗ୍ରାକେ ଏହ ବାବୁ
 ବାଟୀ ପୌଲିତେ ଜୋଜା ଲିଖିଯା ଜିଲେନ
 ଦେବତା କରେଲ ତବେ କୁହ ହେ ପୌଲିଯା ଅଚରଣ
 ଦ୍ୱାରା କହିବ ଏହତ ବାବୁଆ ତବେ ବଳା ଯାଏ ନା
 ଭଗିବଦିତ୍ତା ଅନୁକୁ ପୁରୁତ୍ତି ଏଥାମେ ମୁହଁ ଆଜେନ
 କାର୍ଯ୍ୟ କର୍ମ୍ୟ କିଛୁ ବଜ୍ଞାନ କହିଯା ଦିତେ ପାଇବି
 ନାହିଁ ଶାତ୍ରାଇତେଛି ଶ୍ରୀପୁରୁଷ କର୍ତ୍ତା ରୋତା ଯହା
 ଶଯ୍ୟର ଆଗମନ ହେଲେ ଏହ ପୁରୁଖର କହିତେ
 ପାରି ବା । ବିଶେଷ ପଞ୍ଚାତ୍ମକ ନିବେଦନ ଲିଖିବ ।
 ଶ୍ରୀପୁରୁଷକାଳୀମକର ରାତ୍ରିରଦେଇ ବାଟୀତେ ଯହା
 ଭାବୁଡ଼ା ପୁରୁଷ ଆହୁତି ହୈବେଳ ତାହାର ମୁହଁକୁ
 ହଜୁହେ କହିତେଛନ ତାହାତେ ଅନ୍ତରାଳଦେଇ ଓ
 କିମ୍ବିତ ବ୍ୟାୟ ଦୟମନ ଠାଇ ଶ୍ରୀତା ଉତ୍ତାନ୍ତି
 ଦିତେ 'ହୈବେଳ ଏହେ ଆହୁର ବ୍ୟାୟ ଦୟମନ

अब श्रहांशु कुर्ता पाहा आदर्शाक हये कडि
 देल आमाके लिपतादिके आडु किछु आप
 मासितु पाहा हये व्हराडे पाठाइव फलांनपूरव
 अयुक्त नायवाळीच भट्टाचार्य श्रहांशु याहा
 शेयेहु आज्ञा पंक्त लइया एकाने आदा ठारि
 दिवस इहेल वेशियाचेत उहार विषय
 श्रहांशुर पंक्ते एवं ताहार. पुण्यार्थ जद
 गत इयाचि समय आति मन्द एकारन
 समाक समारु खांचित करिते पांचि किन्तु
 इहार पुतुन एकाने इतेय घरितु ना हय उहे
 चन्द्रादित्य फलकि एवं ऐहाराओ अन्य माने
 यांचित्य करिते पांचिदेन ना अउव ए
 निमित्त किजुकाल एकन्तुवरक पुनर्नेन चेष्टा
 करिया पे पर्याण्य हय ताहा करिया भट्टाचार्य
 हे माति मांगिता करिया पाठाइव मे अन्य
 कोन चिन्ता करिवेत ना इहा शीछरावे
 निवेदनयिति ।—

निता प्रदू नितु तुल्य मरुलक्ष्मि ।—

परम पूजनीय श्रीकृष्ण निता शहार्थ ।
श्रीचरन पूर्णलेख । —

मेरुक्षमा पुवाया तिवेदनकु विशेषः ।
शहार्थयेर श्रीचरनाश्चिर्हादैरत्र कुलांनि प्रदू
वाढी होते श्रीकृष्ण दत्तार्थ दाम प्रौनिधा
मेत याय यज्ञनेत्र अनाटेन होयाजे
ताहा पृथ्वै भावनार शत्र्य छिल विशेष
दामेह आइसने अदिक एथान होते
इडोत किछु योत्र हय भग्न प्रक्षय होतेछ
ना किन्तु देउर्णानि उक मरुल विषय
तिवेदन करियाजि निराशाओ हआया पाय ताइ
दिशेष दूरे एहो विदित होते पारिह इहा
श्रीचरने निवेदन लिखितेछि ठाउराइयाजि पनि

अमराने किछु मार्गिता ना हय उत्रानि वर्ज
 पत्र कविश्चात् योग्य आठाइव एषत् इहा। पाठि
 ह्य इय एकात् लिखेन लिपिव आर श्रुत
 कथिद्वयाय एषाने आमिषाजितेन ताहार
 माजीर उभाति इयोजे कहिलन ताहार
 शास्त्र तेन किछु छिल मे मरम्भ ताहार ज्ञात्
 यामीता श्रुत नन्दकिशोर मरकार ओटाइया
 न इया गियोजेन इहार वास्तु ताहार माने
 किहिन्मात्रउ अनुताव हय ताइ लाय ति
 भावे ए मरुल आलोडन करेन जान। पछि
 तेजे तिनि गहारि कविते उदात् इयो
 छिलन ताहाते आमि विक्तरै कहिया मधुति
 कहित रामिष्ठाजि महाश्चायेव निरुष्टे पाइवेन
 तात्त्वाइयोजेन यहांयु चेतो नुरुरु पाहाते
 एवं विचिह्निमा ना हय ए यत् कविते
 आजा होवेह जात्राहन इदाति ताल
 लाह बजे उन आज्ञाहन एवं इयोजेन

याहाते सर्वत्र रक्षा हय प्रियंग आजा
 हइदेक अपानहारु कर्ता आजा दूषणम प्रति
 हइल विश्वामित्र नाहायोहने प्रस्तुवाक्षले
 गियाजेन ताहाते राज रुद्र मध्यनु बहु
 हइयाजे आमरा प्राण दमिता आजि आगृत
 देउयान महाशय प्रत्याहारित विचारु इले
 पहिया थाक्षेन अनोन्य करातित कर्ये पाओया
 ना पाओया उल्ल कोत रुद्र नाई उपस्थित
 कोन विषय रुद्र आगमताप इक्षित
 थाक्षे देउयान महाशयरु काजे दृश दिल
 विद्याय अनुकूल करियाजि परिओ हय उद्दे
 क्षितु कालेरु कारब आग्नि शीठलन निष्टु
 लौलिया निवेदन रुद्रिति ॥ शुनिलाम
 देश्वर अनेकै लोक ॥ गतिप्राप्ति
 आसितेजेन ॥ ताहाइदरु कारन शासा
 इत्यामि अनुमान करिया बाप्तियाजि कै
 आईमेन प्रकाश आग्नाप तिवेदन विधिर

झाँगरगोपीनानद्युमि बहात्मनेत्र देवताके ज्ञान
 मनकिहारे आवायपूर्व शिशाङ्गन उहारु
 पुराणि ये किछु अशुद्ध वस्त्र उहारु ओपुरु
 मशुह विभूषि वज्र क्षणिक रुप बला याएँ
 ला । ये हय श्रवाण आला परिवरु ।
 निवासनशिति ।—

निता एवं नित्युला अशुद्धके ।—

पंद्रुम पूजनीय श्रीगृह अशुद्ध शहार्ष्य श्रीठरब
 कंशलेषु ।—

श्रीठरब तिकटे हइते पुम्हानेत्र पंद्रे ठडुप्पि
 हिताम् ए सामे र्पै शिशा मेंगि एथानकान
 अशुद्ध लोके ऐउन्हादेवर येलायि शिशाचर्ज
 ऐउन्हादेवर विद्वरब एव वैखटद्वा रुद्ध
 पूर्वकाले दिक्षु उपासक दैक्षाद शृथिवीजे

अठि अल्प छिन। इन्द्रियाका वातिल्यका बीबेह
 शुजा तार प्रसरणे आपनेकृष्ण वस्त्रमह एवं
 छारि इडेल नवदीपं पुदिमतदो अउपमायमिश्र
 दुर्मुखवेर उरुम समि दुर्मुखनिर उदये
 अवर्तार इडेलेन ताहार नाय धुडेलेन
 गोदारिचन्द्र। परे एই यत्त बालयकिंताय
 अल्प काल यापन किया। नवदीपेर पुरीन
 भूषाठार्य श्रीवामुदेव मार्यर्भौम्यर ठडु
 ङ्गाटिते पाठेन यथत आरू पत्तुयाँ। ३
 पाठेन उन्निओ मेह यत पाठ करेत वद्दृ।
 हिन्दु भूषाठार्य याहा प्रकृतार अविष्यिते करान
 ताहा उक्तनात अजास्म हय ए यत उक्तपञ्च
 येता। एव० याहा पाठेन यद्यो आइले
 नाहे ताहाओ शुनिया अवगत यथत प्रतिदिव
 आरु दुनराम एव० क्षमादि वाक्य असृत
 उक्तुल्य ईशात् मार्यर्भौम विमयान्तु इस्या
 विवेचना करिलेन ३ बालक दुर्मुख मार्याना

ताहे 'ईहार' उद्देश आवृत्ति किंवा धारित्वकु
उआईश अनेह नाही। एই छिंडोत्ते भट्टाचार्य
आवा मरवदा रैठतात्त्वर प्रति उद्देश धारक
ईहार परिक्षार्थ निश्चित भट्टाचार्य मरवदा
पत्तुजार्थरैठ आजी कृदिलेत ठोऱ्यां एक
उन प्रति दिवम प्रात्ते आगाड प्रात्तिज्ञानेत्तु
अथवा वित्ति रस्ते प्रवृत्ते प्रात्ते आजी घाटे
लहेया याहेतु एই निश्चित धारित्व
उदनकुरे पत्तुजारा प्रति दिवम मेहे निश्चित एक
उन रस्ते ओ प्रात्ते घाटे लहेया यान एই यत्ते
खारि रैठतात्त्वर पांचाड दिन तिति ओ मेहे यत्ते
कृदिलेत भट्टाचार्य गोरक्षिगण जानिया
कृष्ण पर्यंतु जले प्रात्तिज्ञा रस्ते रुदिले
रैठतात्त्वप्रिणे इस्तु दिनाड कृदिले तिति
जले तिति ठाड्रि 'पांचार्णव' कृदिलेत ऊहार
परविक्षेपनेर ज्ञाने प्रवृत्ते प्रवृत्ते प्रति
प्रति 'प्रदर्श उले इतिले इति देविया'

उम्मुठार्य ठगठकृत होवेन तिक्तु उम्मुक्त
 किछुहे दलिलेन ना प्रते ममापाहुत्त
 उम्मुठार्य रुहिलन गोडारि शुन आयारु
 निवेदन एत दिवस तिर्यक्तु तुमि आयारु
 पतुया छिला बटे आजि आवदि आद्य
 आवश्यक ताहे पाठ रुहिते आयारु मानेन
 घाहा हडक आयारु ममच्च पुथि पुरुषु आंद्र
 यदि आवश्यक हय ताहा ममच्च दृष्टि रुह
 इहातेहे ममच्च अभास हवेवेण तुमि फेटो
 ताहा आयारु मूणीठर हइल तुमि मायाना
 यनुया नह ताहा आयारु बन्ध पुदानेन ममप
 पुरुष इहेयाज्ञ । इहा शुनिया गोडारि
 कुण्डित हयो रुहितेज्ञ यहाश्य आयि
 आपेनकार पतुया घाहा आजि रुहिलेन
 ताहाई आयारु रुहुर्ष अउप्रव मेहे दिवस
 इहेते चैतन्य उम्मुठार्य ग्र ममच्च पुरुष
 आपनि आवृत रुहिते अनु खालेहे ममा

ज्ञाहोनीक्षण्य इहेनम् देखते पुरुषा
 इहेण ये गोदानि माशता, यन्मृष्य तदेव
 किंनि कोन आवडारि इवन उंडारि मन्देह
 नाई एই फैपे कुठक काल गाँउ इय इति शब्दा
 अंडाड विधाइ फ्रम्य, एकद विधोगी अन्य
 इहेल रघुङ्गम ओ पंचिल रू-मरु इहेल उारुत
 मूरुरु रुप पुरुष इय नाई इति शब्दा
 केशव तारुती नाम्य एह जन दुषी पंक्तिया
 इहेते आमिरा चैतन्याके गोकुलते ताळिया
 कुहिलत कुह उग्गि निष्ठिक्षु आजह तोपार
 दुश्यि किल्ल शने नाई ये कर्वन तोपार
 आगमनदूर उंहा विस्मृति इस्थान एयत्
 कृथनेर भरे तिनि कुहिलत आग्यि पुरुष
 हउन्देर अमरीकिते तिल्लक्षु आजि एवं
 जीपतकारि आपेक्षकु पैरे पूटे जन नवहीर
 इहेते पुरुषन कुड्डा शान्तिन्दूर याइया आर
 दूष्टे जन अदृत आद्वानितालन्द तिलजल

मनाम गुहन . कहिलन । . अधीन
 रैठन्यद्वय शार्दूल प्रवृत्ति ए
 अमूर्द शुद्धनेत्र नितालु शोकारुडा इडेया,
 छिडा मयूरु शग्नि भंडे रैठना जैदेउ
 प्रवृत्ति नितान्देह आपनारु द्वारा ऐश्वर्ण
 उने जाउ इडेन्ने पे ममारु आळु
 दूर हर नाई इडाते दूटे जनकु कहिलन
 भुआरा आगि बुद्धि तोमारदेव म० मारेव
 शारा आजे अज्ञव तोमहा मनाम गुहन
 कहिले भाल हरि नाम पुकाश कहनेव मूल
 तोमहा ओ तोमारदेव मनानेरा इवेक
 तोमहा पाइया विवाह कर प्रवृत्ति
 अकह पत्र पुर्वक हरि नाम पुकाश करह
 एवत कहिया खेहारदिग्निके रैठन्यदेव द्वय
 गुहन कहिलन खेहारा दूटे जन गुहन्नम्य
 खहिलन । रैठन्यदेव आरू आवेक

लिंग रहीन। अंत पूर्वे अंत लोक नामवाचिक
 क्राप्त वस्त्रिया मशक्त इयि इष्टेन वरेन परं
 लोकेभविष्यते उठि ज्ञानेण इदिग्दु
 पुराणं वरेन वरुण वालं प्रज्ञै वरिष्ठै
 वालै लोक-वरेन इष्टेन इदिनाय पृथिवी
 यात् इष्टेन जापनि ठेज्ञा तीलोजल पाइया
 अहुर्गाम इष्टेन। मैरै ठेज्ञावरेन
 पृथिव्यात् नवपीते जाह्नव ताह्नव यहाँ सर
 वै-सरै इय ताह्नव मशक्त लोक दर्शनापे
 गियाए ताह्नवरेन जापियन वर्यात् आश्रित
 ए माने लिङ्पनक्ष धारिते इष्टेन वार्या
 जापिन। वार्यिक्षु प्राप्तमित खड़िले कि
 इष्टेनक अत्यर लोकवरेन जापियन
 विक्षिक्षि आप्ति जात् वार्यव वीठेन निवेदन
 वर्यिलाय। एवाववाय यावदीता लोक पूर्य
 देवेव। जात् वैष्णव लोक गीतनाता पूर्य नाई।
 पुराणं पार्वता जाह्नव ताह्नवाओ नविमा

आगी दैक्षण्य पथाशुश्री प्रथानिवाह लोहित
 एवं अन दैक्षण्य डाहारा प्रिय महले
 बुक्कानेरा ओडाहारा प्रामाण्य इतादि प्रुद्धन
 क द्वित्तेजन एवम् जहारामृत न दैत्यजन
 दैक्षण्य के अस्त्रांति पुराय द्वित्तेजन डाहाते
 होत द्वित्ते फडन ना इहाते पाहारा।
 अद्याप्ति डाहारुदिग्नके जिक्कासा फडनाय
 ये ए पुरारु अमरित किया फर फेन डोयरा
 बुक्कन शब्दीय डोयरदेव शब्दे कहे
 बुक्कन महलेरु पुरान सबे दैक्षण्येरु उजन
 फर फेन डोयरदेव एव अन बुक्कन छूउ
 नाये दिखु बक्कहले पंहाचात बडियाचिल
 डाहार छिअ अद्यापि आक्करामेरु यादी
 आज्जे एथन डोयरा एत्तु अठवन फड
 फेन इहारु पुज्जुलुरु लाहा द्विष्टु इय
 ना फहन दैक्षण्य उक्कि नहिले अहलि
 दिल डाहारु लाहन एই आति असाति

विजय, रुद्रवान्दुर्वा, हिंडितकि यारि अहे
 महात्मा आनिया पाच्चा, रुद्र छालोपि
 मूलि प्रेष्ठ हिंडितकि पंडायव, हिंडितकि
 विहीनक्त हिंजोपिश्चानितादिः । अतः र
 हिंडितकि वर्णर भेदोभेद रुद्रिवे ना
 एहे एहे आकृत्य एदेशे देखितेति विशेष
 अष्टवण तिकृष्ट पैश्चाया निष्वासत रुद्रिव ।
 इति । —

६५३ लम्हुके । —

पंडायानिषां रुद्रिगः सन् विशेषः ॥
 उवत्तौरुद्र प्राप्तैव अतुलातन् पंडः ॥
 अनेक दिवर्मादवि तोयार अपानकार मर्या
 ठारु पाहि नाई उप्पित्तु ओहिम्म लोक घाता
 याँते यमिलादि मर्याठार लिपिया निष्वासनी
 रुद्रिवा तोरादृदिगेह अस्तिकारेव त्वि

शीरा इर्हिते ताहार विलेष्व विलेष्व
 लिपिरा मुशासित ये पुकारे इय ताहा
 कहिबा ताहाते ये बाय बासन आवश्यक
 इय आमाके लिखिबा ताहा प्रथान इहिते
 पाठाइब तोमार जोट शुडा केन माने
 आज्ञन एवं ताहार कार्य कल्य इयाजे
 कि । यदितु रान माने तागिजा थाकेन
 तरे ए माने आसिते कहिबा एक कार्य
 उपचित आज्ञ जोउव शुद्ध पाठाइबा । ए
 कार्य बड़ भाल तिनि प्रथाने आसिया छेष
 कहिले इहिते पारे वा ए कार्य इले
 ताहार माते आर दूइ एक जन पुतिनीन
 इहिते पारिबेक आमादीपुरेर राजम्
 होन पर्यक्त इन्द्रागित इयाजे ताहा लिपिरा
 एवं ताहाते मनोयोग अति बिन्दारित
 आवश्यक पुजालोक शुभ वक्षाश द्वार प्राप्त
 ये पुकारे इय कहिबा बाय बासनेर ये

अथवा कह इस्त्र लिखिल ३५८८ इडेज बाटील
 परिवेक होन विषय कारन्त कियिरा ना दूर्ग
 पुतुल रुदियेन । शास्त्रीज्ञ अ० बाहू श्रीमु
 खाहीते चाहू कियिरा सर्वत्रामय एकि
 उमि, एकवारु ए अंखले, आमिते शोरह
 छेष्ठा पाइका आवश्यक आज्ज्ञ जानिवा ।
 एव० एधानकारु अव्य एक अन मेठाति मेहे
 शून इडेते आनिले छाल इस्त्र ए साले
 मेवाति लोह विस्तारित वेतनाकाङ्क्षा रुद्रे
 एपाल इडेते अनिले अल्प बेतने इडेवेक ।
 अ० पुति शुनिलाम डोगाद्विगेव ३५८९ अंते
 ऐक जब द्वाज कियाविश्व आमिया शूपाल
 लोहके रथ ४८८० त रुद्रियांचेन हि
 कियिउ शुहाड़ विशेष लिखिरा एव० पुजा
 लोहके दिवारि रुद्रितेजेके एक्षितु मत्ता
 अ० उवे खुमि एकवारु श्रीमु एकाज नैषिया
 आमि एधानकारु कर्त्ता एक लिपि रुद्रिया-

हिले आइ छोल उपेन्द्रित छारिते पारियोहा
 ता यदि आपाले मृणालिक दुक्षिते पीढ़िह तदे
 आउमनेह आवश्यक नाहि अगारीष्मनुद्धर
 शीघ्रुत इतिका कुडाय कार्यात्मक आधीर एप्टिले
 आमियाजेन एइफ्कले यिनि एधान इहेते
 किछुकाल याइत्रे पारितेजेन नाखेहार लि
 डेढीय कर्थेने कथन तोयार महित छिल
 ताहार भाकिवा ए विषय एप्टेच्च मानोयोग
 करिवा ए बाकि तिभासु मस्तुन नेहार विषय
 याहा किछु करिते पीढ़िह ताहाते पुनरा पुतिष्ठा
 ६४ नाड तुमि महिवेच्छ ए विषय विक्ता
 रित लिप्तनास्ति । आइ१ विषय पूर्व
 पत्रे मश्चुटे लिप्याचि ताहाते जाऊ
 आजह सहे शुभ करिवा दोस दादु लि
 दीर्घ कार्य करितेजेन ताहार विशेष
 लितिवा तिनि दक्ष कार्यक्षम नाहेन एक्षम
 दादु ये विषय ताहाते आदरीन करिया

दिवा त्रैशार्द्धदिवीरु अनुगामि लोकं पाहाते
 कार्या शिक्षा हय ताहा करिवा ए मरुल
 लोकके भाल करिले द्वेषना पाकिवेक
 एवं ऐहिक पारम्प्रिकें अुपेष्ठनाति वटे
 विवेचना करिवा । श्रीगुडु गोदावार द्वेषर
 शुद्धि श्रुत्वारु कर्त्तव्य ताह इवेक एउत
 कुना पाइतेक्षण परितु मत्ता हय उवे आलु
 द्वेर विषय वटे आशारदिगेव एक आद
 कार्या भाल हइते पाकिवेक इहानु निष्ठय
 जानिया मराठार पञ्चात लिखिव । राटीर
 छालियारद्वेर पठिवार नियित एक जन उक
 झापिवा ताहाते ये व्याय हइवे ताहा आयि
 शास्त्रे पाठाइह से विषय घटपेष्ठ मनोयोग
 करिवा शालकेरदिगेके नीताभास ना
 कराइले ये प्रकार ताहा दुखिते पारह
 औउपर एक ऊन नीतिज्ञ मानुष घडु पूर्वक
 रामिया बालकेरदिगेके नीताभास रहाइवा

आर्शी देहार्थ अनाथा करिया ना हियदिव
यिति ।

३५ लम्हुके —

प्राचीनहिक श्रीगुरुज्ञाने प्रशंखन्यांन वडेपू
तोयार पत्र पाठेया मर्याढार जानिलाम् । विष्णि
ग्रांज अधानकाव लोटकेडा तोयारके दैद्यनपि
देवदेव विवरन तिजासा करियाज्जे उाहार
उत्तर करिते पाठेह नाहे ए आश्चर्य विशिष्ट
लोटकेऱ सक्काळेऱ ए मकल जानल अंजाम
वर्शारकेऱ यावी गथन आप्तलार राजकेऱ
दिगीके ए मर्मस्त शास्त्र शुलाय एषत पिति
एक जन ठारुड डाखियार दिवा ये राजकेऱ
दिगीके नाना गुण नूरान इत्यादि नुस्तार
अड्यारु कराल नूरव आमारु ग्राहान

সব' পুরান বেউা পতিত' এক অন নিযুক্ত
 থাকিতেন ইদানীন্ত কিছু কাল হইল আবার
 দের সময়ের শব্দতা প্রযুক্ত উহার কুটি
 হইয়াজে। উশোরেছা এখন তোমারদিগের
 কোন বিষয়তে ন্যূনতা নাই অতএব এ সময়তে
 এ সরু ঠালনা না করনে নিজার কৃতি
 অতএব অত্যাধিক জানিয়া এ বিষয়তে
 প্রতুলের মনোযোগ করিব। সে বিবরণ আমি
 লিপিতে ই মনোযোগ করিয়া অবগত হইয়া
 লাকেরদের ক'জে সুকাশ করিব। পূর্বকালে
 রায়রাবনের ঘুচের সময় রাবন বিবেচনা
 করিল রায় বিশ্ব জাদতার উহাকে জন করন
 যাইদেবের আরাদিনা বাতিলেক সুশ্ৰূত অত
 এব হিমালয় পর্বতে যাইয়া কাঠার উপস্থীত
 আশুতোষ যাইদেবকে মিছ করিয়া সহায়াপ'
 এক শিলিতি মেই হান হইতে লক্ষ্মী
 মাশীপ' লইয়া যাইতেজে যাইদেবের মহিত

तियाय एই आगि लक्ष्मीय द्वापितु इहेले
 आग्नार पंडितज्ञ इहेवे ना किन्तु ये शाने
 आग्नाके नामाइवा आगि मेहे इनेतेहे
 पाक्षित उथा इहेते कुराचित उठिव ना ताहा
 दुखिया ये हय फरह। राबन भाविल एक विन्दु
 पुस्त्र कोन भार नहे इह। अनायासे लक्ष्मी
 लइया पाइव महादेवेर पुमन्ताते आग्नारु
 अस्तु इहेवे कुमहादेवेर राको कोन मन्देहेर
 विषय नहे रामाके शारिते पाँचिले मीता
 आग्नारि इहेवे ताहाके योस्तानी कुरिव
 मन्दोदरी आग्नार पाटेरानी आजे ताहाके
 तांग कुरिते पाँचिव ना भद्रन पोषन कुरिते
 इहेवे के मे जन्य आग्नार वड तावना नहे
 महादीर इन्द्रजित ताहार पृथि मे एकटा
 माग्नान्य नहे आग्नार शेषकालेर रानी
 इहेलेत मीता ताहार मणान केह नाई
 आग्नारु आरु समन्तु यांत्र क मीता आग्नार

मरण आयि अवौद्धार प्रकारे रुल योग्या
हुविह। एहे महल विवेचना करिते।
याइतेजे देवतांशा देखेन दावन महादेव
कें मस्तुके करिया मवित्य हइल आमिया
उपास्तु कि हइवेक। महले परायेक करिया
येष ओ पवनके आजा करिलेन तोयदा
दावनेर अंडा उन्नाइया महादेव बांनेर
दावा जन्माओ घाइया। देवाजाते येष ओ पवन
ताहारदेव मात्या शत रुप गृष्ण करिल उपाच
दावन ताहाते परिशुद्ध हइल ता महले इ
निकंठाय कि करिवेन भाविया नान ता। दुर्ज्ञा
रुलिलेन वर्णनके तुमि मयूरुगीनके उहाडू
उदरे पुरिष्ठ कराओ ताहाते रावन पुमुख
भीजाते यास्तु हइवेक ताहाते से उक्त
लोक महादेवके ता नामाइया पुमुख
करिवे ता कामहिले सेइ सूतन महादेव
करिवे इहाते मन्दूह ताहे। अतप्रव

ବରନ। ତୋଯରୀ ପାଇୟା ଏହି ମନ୍ଦିର କରି ବର
ବେଳେ ଆଜ୍ଞାୟ ମନୁଦୁ ରାବନେଇ ଓଦରେ ପୁରେ
କରିଲେ । ରାବନ ପୁମ୍ବାଦ ପୀଡ଼ିତ ଅତିଶୀଘ୍ର
ପୀଡ଼ିତ ହଇଥା କୁମୁ ହଇଲ କିନ୍ତୁ ଶିବଙ୍କେ ଓ
ଶୂତ୍ରିକାଣ୍ଡିତ ତାଣି କରିତେ ପାଇଁ ନା ନିରନ୍ତାୟ
ହଇଲ । ଏହି କାଳେ ଇନ୍ଦ୍ର ଦେଵରାଜ ଯାହା କରିଯା
ବୃଦ୍ଧ ବୁଦ୍ଧନେଇ, ସେଥି ମେହେ ଛାନେ ଓ ପଞ୍ଚିତ
ହଇଲେନ । ରାବନ ତାହାଙ୍କେ ଦେଖିଯାଇ ପରମାହାତ୍ମେ
ଆଦର ପୂର୍ବକ ବୁଦ୍ଧନଙ୍କେ କହିଲେନ ଠାକୁର
ତୁମି ଆଶୀର ଏହି ଓପକାର କରି । ଆମି
ରାବନ ରାଜା ଇହାର ପରେ ଆମି ତୋଯାର
ପଥେକୁ ପୁତୁର କରିଯା ଦିବ । ବୁଦ୍ଧନ ବଲିଲେନ
ଯହାରାଜ ଆମି ବୁଦ୍ଧନ କୀନ ବଳ ଏବଂ ବୃଦ୍ଧ
ଅତି ଦ୍ୟାପକଳୀଳ ରାଷ୍ଟ୍ରିତେ ପାଇବ ନା । ରାବନ
ବଲିଲ ତାହାର ବିଷୟ କି ତୁମି ଏକ ଦେଉ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ
ଶିବ ସୀଦନ କର ଉହେ ଆମି ପୁମ୍ବାଦ କରିଯା
ଆମି । ବୁଦ୍ଧନ ବଲିଲେନ ଭାଲ ଆମି

आनन्दकांड आज्ञाय दूषे दण्डं पर्यातु शीढ़न
 करिव इहार अधिक आर पारिव ना । राबन
 उपासु वलिया द्रुञ्जनेव मन्त्रके शिवलिङ्ग
 बोधिया पुम्भाव छटिते रसिले मशुदु
 ताहार उदरम् पुम्भावेव वेणि आर शोतु
 हय ना दूषे दण्डे वंवे द्रुञ्जन कहिले
 महाराज आग्नि आर मात्य हय ना जापनि
 ओ आसिते पारिले ना आग्नि शिवलिङ्ग
 मृतिकाय उपासि कहि । इहावलिया शिवलिङ्ग
 मृतिकाते धूइया पुम्भात छटिल । तारपर
 राबन एक पुहर पर्यातु पुम्भाव करिल
 उदर्भरे पवित्र इया आसिया शिवके
 भुलिते इहा करिया आनन्द परामर्श इत लाडा
 छाडा करिल एक ठिल ओ लाडिते पारिल ना
 इहाते अति धूषित इया निज छाले
 पुम्भात छटिल । परे देहे माले दन
 इया अनेक राल पर्यातु महादेव ठिक्क

किलेन पंत्रे वलियुगीर प्रथमे बैद्यनाथे
 एक जन गोप्तालाके प्रत्यादेश कुरिले
 ताहा हड्डे पुकाश इड्याजन उत्तर ताहीर
 नाम इड्ल बैद्यनाथे। मे मान मार्गना
 नहे मे हाने यिति पांश वाङ्मय करिया
 घान ताहा मिञ्चि यह मवर्त्त विष्णात् एहे
 बैद्यनाथेर विष्णव। अत्थव मक्कलके एहे
 यत कहिवा एवं आपनारा मर्दीए मठाते
 पूर्वान अद्याहन कराइवा पांहाते एषउ
 कृपा अदीते हड्डे पारह। ओदेश लदतामु
 अति बड़ मारवीन इड्या थोकिवा आव क्षेत्र
 लोकेह महित विष्णव कुरिवान। ओदेशेर
 लोके मक्कल दूर्जन आमुरिक मठाद
 पांहाते मवर्त्त रक्षा यह ताहा कुरिवा।
 आयि शुनियांचि ऐ देशे एक वृहत्काष
 अश्वम्भ वृक्ष आजे ताहार उलाय ज्वरिश्वा
 शाजार हातेह इति मादुलि पञ्चांचिल

उंहा प्रुहाल इअनेते एक जल चीर मरन
 इत्तेल ताहार विलोषन निधियांजि जात इया
 अद्वेषन रुदिया । ऐ देशे एक इटे
 एक जन माजूया ओ ताहार की माजूयानी मैमा
 दिक्षय रुदितेछिल । उति यद्यो एकडे चिलासी
 ताहार दोकान इइते एकडे शकुन मैमा
 जो दिया निता याए मैमाहो भार ओकोगे
 रुदिया पाइतेछिल इहाते माजूयानी हाँसिया
 उठिले । माजूया बड़ कोवि रुदिया बलिल एकिरे
 हारियाजादी डोर माठ लहेया याए आरु तुइ
 हाँसिम तुइ कि पागली ना कि । से बलिल
 आय ताहार कारन इाँसि नाइ । माजूया बल
 उबे हाँसिल हेन । से बलिल हाँसिल मै
 देख प्रधानकाट चिल एथन एथत दूर्घर्वल इया
 जिये एकडे शकुन मैमा निया पाइते पारे
 ना । माजूया कुहे बल तुइ इहा इइते अर्थि क
 अक्षिशुद्ध चिल कोपाय देर्धियांजिस । से बले

ना आयि देखि नाइ। उबे ईंसिलि
क्षेत्र इहाते ताहाके विस्तारित पूर्वांशु
करिल। चौटी बलिल हेदरे आयाते औ
क्षेत्र जिजामा रुद्रिम ना यदि आयि ताहार
विवरन कहि उबे आयि शरिर। बेटो बलिल
तुइ शरिमे किवा किछु इईम इलितेहै
इडेवेहै। एवं आइबाँर तात्त्वा रुद्रिल।
शाजुयाती बले तुन आयि पूर्व जन्मे छिल
छिलाय भारत म०-ग्रामे अज्ञुन भूरिपूर्वा
बाजार इस्तु बाबेते काटिया ऐलिल आयि में
इस्तु निया ऐ दृक्षेर आपाय देसिया गोइया
छिलाय ताहाते एकटो शादुलि छिल ताहा ऐ
गोइर उलाय पड़िया आजे देख घाइया एहे
कहिते॒ मे यागी स्वयिते पड़िया प्रान त्याग
रुद्रिल। परे ताहारा मेहे उला धनत करिया
झेहु इति शादुलि पाइल ठारि योनि स्वर्ण।

ताहाते से शाक्यों विनवान् हुई। अतएव
लिपितेजि इहार उरु आनिया मर्यादार
लिपिवा। टेति । — — —

किंक लघुके । —

श्रद्धया कुताशीर्द्धजानन्तः विशेषः भवन्नामिन
क्षमानया अनुग्रहं पत्र० । —

चिरदिवमान्तरे श्रीपूत्र रम्भुजां यज्ञाशयेर
हाते तोयार पत्र पाइया मर्यादार जाति हई
लाय। तोयार दिग्गेत्रे ये कार्येर विषय लिखि
याउ ताहाते नितान्त छेषा कुट्ठितेजि से जन्य
कोन भावना करिबा न। ताहार अनेक मूणितिक
हईयाए विशेष विशेषन श्रीपूत्रेर पत्रे अव
गति हईवा प्रव० जूमि ३ तोयार विषय मनो
योग कुट्ठिबा उरे आर भावनार विषय नाई।

आरु १ विषय पाठ्य इन पंक्तोंत निश्चिव । श्रीमूल
 दम्भुजा डारा तोशीर निष्ठा यहितेजन यदि
 केहार एक आदि कार्य कोन माने मूल्योग
 करिया दिते पारह उवे केहार नितान्त उप
 कार एवं आमि ओ वड आङ्गार पाइ रम्भुजा
 आम्बारदिगोर अठान्तरनि एवं कर्मस्फय बटे
 कर्मेक माने राजकम्भे निष्ठुक छिलेन
 ताहाते मूल्याति आचे से सद विषय
 भावना करिबा ना आमि केहारे विलक्षण
 कर्में जानि । तोशीर मातृल एই माने छिलेन
 म० नुति एक कार्य पाइया शादान्त्र गिया
 जेन एই उपलक्ष्येते ॥ डाहार डाल कुँडि
 बत एयन अनुमान इय यदि ए कार्य किं
 काल थाकिते पारेन एवं तोशीर अठान्तरनि
 लोक जनेक दूइ जन से पर्याण गोले दूइ
 एक कार्य इउन्नर यादी इय ना । आमि बृहि
 तोशीर अठान्तरनि दूइ एक जन से माने पाठो

ईले भानि हैते पारे ये विहित हय करिब।
 आमार पूर्वकार विवरन विदित आजह
 उपाठ से विषय अद्यापि ओ अक्षरटो व्याय
 कर्तुला ना कारन हुँगाते पारि ना आमार
 विषयाते अवहेला करिले उत्तम प्रकृत यन्म
 अउपर ए विषय अवहेला अनुचित जानिब।
 तथि उत्तरावलोकि विस्तु त्रित लिपनाशिक
 तोमार मर्याद भुता अनर्थक राहीते दमिया
 कार्य पार्ति करितेजेन एथाने आईले एक
 अदि कार्यार चेष्टा ठिक्र रक्ता घाय परे
 औष्ठरेष्टा येमत पाके ताहाइ हैवेक
 अस्तुति एथाने एक कार्य उपचित आज
 आयि ओ मे जन्य चेष्टा करितेजि एवं
 आश्वास पाइयाछि हिन्दु आमारदिगेर
 अनुरक्ति केह मे कार्यार उपूकु उन्मित
 नाहि अउपर तोमार भुताके अति श्रीम
 एथाने पाठाइबा आर आमारदिगेर बाटीते

शाईया श्रीघुड लिखन्तरु रायके कहिवा टेंह
 एकदारू प्रधाने आईमन ताहारू एक काष्य
 क्षमित आजे तिनि प्रधाने आईलै इटेते
 पारे प्रधत मूर्गिक आजे। श्रीघुड गोकुला
 लन्दू रायके कहिवा आद्य मण्डु दिवस इटेल
 ताहारू माहेव बोति इटेते आमियाजेन
 येस्त्र अमृक माहेवेर घारेते आजेन कल
 ताहारू मगाठारू आशाके जिजामा करिले
 आगि कहिलाय तिनि बाटी आजेन माहेवेर
 आजा इटेल दूइ ठारि दिनेर गवेय आनाईया
 दिते पारि। माहेव बलिलेन ताल ताहाके
 मगाठारू दिया श्रीमु आनाओ अउब ताहाके
 पत्र लिखितेछि एवं आपनि शाईया ताहाके
 श्रीमु पाठिवा एधाने माहेवेर आगि
 मने अनेकै सरकार लोक उपस्थित
 इटेतेजे हिन्दु अद्यापि केह पदार्पित इटेते
 पारेन नाइ अउब रायके पत्र पाठ आमिते

कहिया आर उनके सरकारी लोक मात
 नहीं आइसेन एत इले भाल हय। माहेर
 बेलात् इट्टे एक कार्य पाइया आमिराजेन
 अनुमाने दुका पाय वड पुरान कार्य इवेक
 आद्यापि शुद्धाकि किछु आनिते पारि ताई
 इहार द्वारा आज्ञा अनुरक्ष पाँच मात अन
 पुति पानल इत्तेव दावि इवेक न। अनुमान
 एहे एत इयत्तवे औखरेहा कि बना पाय न।
 आपुत ड्हाँचार्य महाशयके आशार पुनाम
 कहिया एवं उँचार द्वुष्टाँचीर ब्याप्त ४०
 टोका पाठ्टाइतेछि उँचाँके दिवा। इति। —

उक्त लम्हुके —

पद्मशशीर्दिजापनके विश्वसः उव यस्ति
 राशनया अत्रानन् पट ०। — — —

त्रैमात्र पद्म पाइया समाचार आणि त

इसाम । अपनीहार समाचार आयुत लिपिकर
 भाषार एक व्यार्य इसाम तिनि वहरमपुर
 शियाजेन ताहार माहेवेर वहरमपुरेर
 तिलार कलेक्टरि व्यार्य इसाम जानिव
 तोयाके निया पाओनेर तियित नितानु ईद्वा
 छिल माहेव दृढ़ा पात्रा करिवेन ए प्रधुक
 तोयाके समाचार दिते पांडिलाम ना अउव
 तुग्गि मे माने शीमु गोले भाल एक व्यार्य
 अवश्य इवेक । गोने आयार व्यार्य पुर्ववत
 आजे एइफने किजु इटेजे ना प्रौष याम
 पर्यन्त एই पुकार माहेव कहियाजेन ताहार
 व्यार्य बुझि अमुक माने इवेक अठ२
 अनुष्ठान आजे पदि ताहा हय उवे तोयराम
 दूई एक जन आयार महित पाइते पांडिवा ।
 एइफने योहिपुर एकटो ब्रम्मयेर बुटि
 करिवेन एই छोटे आचेत ताहा इले
 दूई ठारि अन लोक पर्वान करिते पांडिवार

वारी नाहि। मे शान इहेके उत्तर
 अति भाल राढे यनुव्योऽयमिति प्राप्ति प्राद्य
 साधगुरी दर्शि दुर्कार अति सूलत मे शाने
 आणार हिचुकाल बुद्धि थाविते इवेके।
 श्रुतु रम्य गुडा महाशय तीदीलंपुर गियाँ
 निलेल ताहार रार्ह कम किंचु इयाजे कि
 ना ताहा आनिते पारि नाई ताहार विशेष
 मराठार पदि नाहिया थाके एवं ताहार कार्य
 किंचु इयां थाके डाल नतुरा ताहाके
 मराठार लिखिवा श्रेष्ठ अपान आइसेन
 ताहाके एष कृतीते राखिया आमि रेसम्येर
 कृतीते याहिर। आमादिगार वाढी सारा कि
 पर्यन्त इयाजे विशेष लिखिवा तोयार
 कविक ड्राता आल कोन शाने आजेन
 कार्या हिचु इयाजे कि ता विशेष जानि नी
 पर्यन्त तुलितेचि काळना गियाजेन
 कमने पाईवरिआर्णक कि ताहा बुद्धिते

मात्रिलाभ ना तिनि कृत्यना गिया। थारेन
परम् कोति प्रभुतिह इत्यापि तानि स्मृते
पासे थाकुरवेन नकुरा लिपिवा एकाले
आहिसेन वार्ष्य ठेळा करिले इत्येते पारि
वेण। आमीत्र माहेवेद एव अन अनुदर्शि
एकाले अं-प्रुति आमियाच्छेन उहार
महाकार कैव अद्यापि उन्मित्त इय तांत्रे
से आहेवेद पुरीत एव कौर्या यासेक
पंक्षेव यादी इत्येक भग्न खुला याहियाच्छ
उहा इले मूडे एव अन लोक पर्वार्चि
इत्येक वादी इत्येत ना तुयि उहाकै एव
मशाठार लिपिवा तिनि दूषि पैंच दिलेदू
यादी वाढी पैंचाशेन। तोमार मातुलेक
पूर्वेर विवाहेर कि इत्याच्छ मशाठार
लिपिवा उहार किंचु वाय यासेनेव आनु
गाऊ आमार करिते इत्येक तोमार विव

आइले ताहा र मूँगीत्य करिया पाठीव ।
 मेरुक्ति आमीदिलोय लिताङ्कु सोध्य घटा
 शक्ति आनुपीता करा कलवा इहा ना नयने
 अति यद्द अउव उहाले कहिया घर्दि ओ
 अमृक्त गिर ना इड्या गाके ईर्ष्या करिया
 आमारु एथाने आईमन यात्रुयमनेव
 लियितु चिला ना करेन प्रतुल कोन याते
 हइवेळे एवं ए विषयते जुगि ओ घट्वान
 इड्या प्रतुल याहाते हर ताहा करिवा ।
 किम्बिक० प्रतुलाप्ति ।—

उक्त लघुके ।—

पत्रम् शुभानी वौद्विजा नक्त विशेषः ।
 तवक्त्रानौरेण्य कथितया अन्तन्द पृ० ।

ठिक दिवस परे भोयार पत्र पाइया समाचार
 आनिलाम । लियियाच उन्हितु छमिर इतिम्

अद्यार्थ एवं आज्ञा इहार कारन कि दुर्घट
 पात्रिलाभ न विशेष लिपिदा । एथान
 कार मराठार पंत्रे कि पर्याण लिपिदा ।
 अद्यार्थ साहेब नोंदवेर महित मास्कात
 हय नाइ शूलुत कर्ता साहेब एथाने नाइ
 शुनितेज्ज्ञ शीमा आमिदेन आइले मास्कात
 करिव उद्गाउद्द ये हय पञ्चात लिपिदा ।
 काशीराधि घोषजा मादराजि गियाजिलेन
 ताहा शुनिया थाकिबा मूल्पुति अद्य दश
 दिवस ताहार त्रुति इड्याज्ञ । श्रीतु
 देओऽन महाश्वर निपियाज्ञ अद्य से प्र
 दीवकेर द्वा ताहार वाटिते पाठीलार
 आंतरा जनेक मेषाने घाइदा एवं
 शुक्ल पर्याण पाकया कायिक मूसाधि करिबा
 इहाते बदाच त्रुटि ना हय । तेमात्र कार्येर
 चेष्टा करिते लिपियाज्ञ ताहा लिपन दिक्ष
 से चेष्टा आयि करितेज्ज्ञ विन्दु एक्षणे

किन्तु यह प्रत्येक लाइ उपर्युक्त होलोइ
 समाचार लिखिर। आशारे प्रधाने बाबार द्वाय়
 बामन हওয়া अভি भৌति हইয়াছে আজি
 पर्यাপ্ত বিশ ত্রিশ টোলা হৈতু ছটিয়া দ্বায়
 করিয়াছি। পুরাণিক প্রধানে আছেন
 সংস্কৃতি দিবস ঠাণ্ডি পাঁচ হইল শীঘ্ৰ ফলান্ত
 সাহেবের অহিত সঁক্ষাত করিয়া পাত্তাত
 করিতেছেন সাহেব বিন্দুর আশ্বাস করিতে
 জেন এক আদি কার্য দ্বিতীয় কি ইয়ে বলা
 যায় না সাহেব বিন্দুর অনুগ্রহ দেখিতেছি
 ইহাতে রূপি ভাল হইতে পাবে যাহা ইয়ে
 শীঘ্ৰ জান পাইবেক। শীঘ্ৰ হাঁচিন বস্তুর
 যে বিষয় আছিলে ছিল তাৰা হইতে পুতুল
 পুরুষক অভিদু হইয়াছেন তিনি দশ পাঁচ
 দিনের অবৈ দোষ পেঁশিবেন কেবল —
 বলিয়াটেছুন্নীতি পুজাৰ নিশ্চিত যে গৌণ
 সেই অন্ত হোন বাবা নাইমে কলা চিহ্নিত

महिमा । १० श्रीयुत चोकित्तरन माहात्म्य निष्ठाके
पाठाइत्तरन विवाद ये कुप्रकृ टोका पाओवा
आज्ञे जाहा मानिता कुडिया दिवा याहाते
अविक्षेप चोकिता हय कुरिवा आठ आशीर्व
दिग्गेह ये विकाद उपनिषित कसवाते छिल
ताहार कि इत्याच्छ विशेष लिखिवा । श्रीयुत
माहेवरु निष्ठे इत्तेष्ठ एक आत्मकुला प्रकृ
लहेया । पाठाइत्तरन इहा अधानकार माहेवरु
निष्ठे दिवा १२० विचारवर मग्य आनन्दावा
उपनिषित पाणिवा विवेचना पूर्वक बाध्य
करिवा छोन विषय भावना बिवा ना ए
विषय ये कपे पराभव करिते पारह
करिवा । श्रीयुत चोकुरि यहाश्येवदिग्गेह
महित ये ब्रह्मिर विवाद इत्याच्छ ताहार कि
इत्याच्छ ताहा लिखिवा यद्युतु लिप्ति ना इत्या
पारके प्रत्यक्षाये भ्राते निम्नति हय करिवा
इत्तेष्ठ अनीनाद दिग्गेह किछु क्रेति हय

ताहा ओ स्वीकार करिला। श्रीयुत रामरङ्क दाय
 महाशयेर महित आर्यरि ये बथा जिल
 ताहा जात आचिह उविमितु श्रीयुत राजनारायन
 दायके पाठेत्तेजि दाय महाशयेर महित
 साक्षात् कठाइया पुत्रानुर लडेया दायके
 श्रीमु ग्राने पाठाइवा। श्रीयुत रामरङ्कन मेन
 देवानेर माहेव एलाना मानेर विजीय
 हइयां यहितेजेन मेन देवानेर प्रतिनिधि
 श्रीयुत रामसुन्दर दोष याइवेन शुनितेजि
 आशाके मेन देवान शहार्य ताळाइया
 निया याइतेन कठियाजिलेन आयि स्वीकार
 करिलाय ना कुहिलाय परित पर्यंत आर्यरि
 माहेव ना आसितेजेन तावत आयि आर
 कोपाह याइते पारिव ना एहेकाने अन्य
 एक अनेक पाठीन लारे येत आजा करेल
 ताहा करिव यदिओ तुम्ह मे कार्यद्व आलिलाव
 कठू लव श्रीमु ग्राने दोषिया आदृ

विच्छादित् समाचार विष्ट नहे, माक्षात्
इत्तेसंश्लिष्ट हिंदुनिव। इति ।—

लघु उक्त के ।—

पुनाशा लिखेदनके विशेषण। महाशयेद्
आशीर्वदादित्ताद्रिश्वरके पदः ।—

चिरकाल गात् इत्तेसंश्लिष्टिगैर अधोन
कावृ यस्तिलादि समाचार ना प्राप्ताते निताङ्ग
द्रुष्टितु कि रुद्रा यथु निरुट्टेर पूर्प नहे ये
दिनेक दूष्टे दिनेऽरु कावृन निरुट्टे पौर्णिम्य
विष्णवज्ज इते किम्बा महाशयेदा विशेष
विशेषन लिखेत किम्बा आज्ञा लोक्तेर गिता
शात् आज्ञे रोन यते विशेष ना जाननेते
निताङ्ग क्षोभित । एथन विवेचना रुद्रियाज्ञ
अर्पद्वाजपूर्वेद् अनेकृ कार्य आशार
कावृन देवतित आज्ञे यदि ताहारा आशार

ଯାଇଲେ କାହିଁଳ ନୌକା ପ୍ରେରିତ କରିବ ତାହେ
 ଖୋଲ ସନ୍ଦେହ ନାହିଁ ଏକବୀର ମେଇ ନୌକା ଯୋଗେ
 ପୈଶିବ ଘରି ତାହାରାଦେଶ ଅନ୍ତର୍ମୋଦ୍ଦ ହୁଏ
 ତାବେଇ ବେଜନୀ ବୁଝାଇ ଆନା ଯାଇବେଳ ମେ ଯେ
 ହେବ । ଯହାଣେର କାର୍ଯ୍ୟ କର୍ମ୍ୟର ବିଷୟ କୋନ
 ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ହଜୁଯାଇଁ ତାହାର ବିଶେଷ ବିଶେଷତା
 ଲିଖିବେଳ । ଶ୍ରୀଧୂତ ମାହେର ଅମୃତ କ୍ଷାନେ ବିଚାର
 କରୁଣା ହଇଲେନ ମହାବେଦୁ ମହିତ ଯହାଣେର
 ପୂର୍ବର ଆନବିତ ଜିଲ୍ଲା ଏବଂ ବିଜ୍ଞାରିତ କଲୁ
 ପୁଅ କରିବେଳ ଏଇ କ୍ଷାନେ ମାକ୍ଷାତ କରିଲେ
 ଘରିତୁ ଏହ ଆଦ କର୍ମ୍ୟର ଆକିଙ୍କିତ କରିବେଳ
 ତାବେ ଦୁଃଖ ହିତେ ପାଇତ ଆମି ଦୁଃଖ
 ଯହାଣୟ ଏକକାନେ ମାକ୍ଷାତ କରିଲେ ଡାଳ ହୁଏ
 ବିବେଚନା ପୁରୁରକ ବିହିତ କରିବେଳ । ଯହାଣେର
 ଅପାନିକାର ରାଜକୀୟ କାର୍ଯ୍ୟ କି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଇହ
 ତେଣେ ତାହାର ପୁତ୍ରାପୁତ୍ରୁଲ ଲିଖିବେଳ ଦୁଃଖ
 ଏ କର୍ମମର ଓ ଆକ୍ଷଳେ କି ମହାଯାନ ଗଠି

करिवेत कि शारीर करेन बला याय ता
 ताहार यत दुये एत लोक अपनवारु
 यद्येक कदाचित् एक दूष्ट जन आजेन कि ता
 तिनिये शारीर लोक ताहा दिया पुजा
 लोकेव एकटे मोडाग्या हइवेक एत
 विषम तहे मे भक्त भाविया कि कर्म याय
 ईश्वरेष्ठा पेटि ताहाइ हय अत्यव ओ अफले
 पदितु याओय हय ताहार पूर्वमयाचारु
 लिपिवेन एवं आपितारा माववान पूर्वक
 याहिवेन । एथान हइते मयाचारु लिपिले
 आपनारा उदनुक्तं कार्यं करिवेन किंह वस्तु
 मैमन्य म'शुद्ध लहिया याहिवेन ताहारदिग्गज
 गोदा मायगु अतावश्यक ये पर्यन्तु ताहार
 आयोजन करिते हय करिवेन कोनक्ये
 द्रुटी ता हय । ए भक्त लोक याहिया आपन
 कारु अस्तिकारेव पुजा लोकेव ओपनु अति

କମନା କରେନ ଏହା ପୁତ୍ରଙ୍କର ଓଦ୍ଧାଗେ
ଥାକିବେନ । ଅଧିନକ୍ଷାର ମରୀଚର ପୁର୍ବ ମମନ୍ତ୍ରର
ଲିଖିଯାଇ ଡାଇଟ ରିହତି ଆଜେନ ମେଇ ଏହା
କର୍ତ୍ତା କରିବେନ କୋନ ଦିଷ୍ଟାତେ ତବନା କରିବେନ
ନା ଔଷଧ ଆଦଶ୍ୟ ପୁତ୍ରଙ୍କ କରିବେନ । ଯହା
ଶ୍ରୀଯେତ୍ର ପୁର୍ବର ବିବାହର ମମନ୍ତ୍ର କୋନ କୌଣେ
ନିରୀକ୍ଷ୍ୟ କରିବେନ କୁଟୁମ୍ବ ଦୋଷୀଯାଦୋଷୀ ବିବେ
ଠନା କରିବେନ ଦାଇତେ କୁଟୁମ୍ବିଜୀ ଦୌଡ଼ାଗ୍ୟ
ଅବିକୁ ଇହ ଏହା କରିବେନ ମମନ୍ତ୍ର ଈର୍ଯ୍ୟ
ଇଲେ ମରୀଚାର ଲିଖିବେନ, ଉଦନ୍ତ ମାତ୍ରେ ଆବ
ଶ୍ୱର ଦୁଃଖ ଏହୁ ଦ୍ୟାୟ ଦ୍ୟମନ ଯାହା ମାତ୍ରିତ୍ୟ
କରିତେ ପରି ନିଷା ନିରୁଟ୍ଟ ନୌଲିବ । ଇହା
ଚାଲେ ନିର୍ବନ୍ଦନ ଶିତି ।—

ଲୁହୁ ପୌଷ୍ଟ ଉଦ୍‌ବଳେ ।—

ପୁନାମାବିଜ୍ଞାନକୁଣ୍ଡ ଉଦ୍‌ବଶେଷଃ ଉବାଲିଷ
ଅତ୍ରାନନ୍ଦ ପରଂ ।————

ଅଧିନକ୍ଷାର ମଯୀଠୀର ଅନେକ ଦିରମ ନା
ପାଇୟା ଏହାଙ୍କ ଭାବିତ ଛିଲାମ ଏଥିନ
ଆଜ୍ୟଗୋପାଳ ମୋହେର ହାତ ପାତ୍ର ପାଇୟା
ମୟମ୍ଭ ମଯୀଠୀର ଜ୍ଞାତ ହେୟା ନିଶ୍ଚିନ୍ଦ ହେଲାମ୍ ।
ଲିଖିଯାଇ ଆନନ୍ଦାର କନ୍ୟାର ବିବାହର ମମ୍ବକୁ
ଆୟୁତ ରାଜନାରଯନ ଦାୟେର ପୁଣ୍ୟର ମହିତ
ହେୟାଇେ ତାହାର କୁଳ ମର୍ଯ୍ୟାଳୀ ଏକଶତ ଟୋକା
ଦିତେ ହେବେଳେ ଏ ମମ୍ବକୁ ତାଳ ବଟେ ଲିଙ୍କ
ଟୋକାର ମାଠାତ୍ୟ ବୃଦ୍ଧ ବ୍ୟାପାର ଏଇକ୍ଷବେ
ତାହାର ମାଠାନ କି ଏକଶତ ଟୋକା ପରି ଦିତେ
ହେବେଳେ ଉତ୍କଳ ଆନନ୍ଦାରଦର ବ୍ୟାୟ ତିନ ଢାରି
ଶତ ଟୋକାର ନୁହେ ହେତେ ପାରିବେଳେ ନା ତାହାର
ମର୍ଯ୍ୟାଳୀ ମର୍ଯ୍ୟାଳୀ ଏଇକ୍ଷବେ ହେତେ ପାରିବେଳେ ନା ।
ଆଶାର ଏଥାନ ହେତେ ଏକଶତ ଟୋକାର ମୁମାର

हैते पारिवेष्ट इहार अस्ति कपर्दक
 हैवे ना बक्षि ठारु शत अन्य फोन छाने
 हैते सरिति करिते पाँडि एमउ मूलि आयि
 देखिते पाहि ना अउपर मूत्ररँ ए मम्बज्ज
 एहेक्कने हैते पारिल ना उवे यदि फोन
 छान हैते टोलारु माँगीत्य करिते परेन
 उवे पुरुत्ति हैवेन पञ्चात् ए टोका आयि
 पाठीया दिव ताहार भावना किछु कुटिवा ना।
 श्रीयुत राजा यहाशय आद्य तित दिवम हैल
 फलाना पंखानाय घात्रा करियाजेत आयि ओ
 दूड़े एक दिनेर मध्ये घात्रा करिव से माने
 पाइया कार्य ता पुरुत्ति हैले टोकारु मक्कल
 माँगीत्य कि पुरुत्तरे हय फिन्डु पञ्चात् हउ
 नेर बाटे हैवे ना यदि ए मम्बज्ज मासेन
 मूहेमास परे हय उवे फोन बायोह इसु ना
 श्रीयुत कृष्णद्वाय यहाशयके लिखितेक्षि ए
 मम्बज्ज एहेक्कने ना हैया पञ्चात् अग्रुहाय ना

दिते हय तिनि प्रथम करिया दिवेन। श्रीपूत्र
 राममुद्भव बम्बुजाके आच्छान्नादिते से हाले
 पाठाइवेन एक आदि कार्या अवश्य करिया
 दिते पाँडिव आहाके माहेवेव नितन्तु अनु
 ग्रुह आजे इहाते पश्चत पाहा माहेवके
 कहि ताहा चाँगाना करेन कार्या अति रुद्ध
 इहेयाजे इहाते पदि किछु काल एই कार्या
 तिर्दिन्निरुत्ते थाकिते पाँडि उवे ईश्वरेहाय पर्याप्त
 लोकेव प्रुतिगालन हइते नाहिवे। म०-प्रुति
 एक कार्या उन्नग्रित आजे बड़ मन्द नहे
 बम्बुजाके पदि शीजु पाठाइते पाठेन उवे
 उहाते प्रुद्धुर्कर्त्तव्या दिते पाँडि नहुका
 ईश्वरी पूजार मयम् आसि वाटी आसिव
 मास्कात् मयम् कहिया शुनिया परा
 मर्श प्रुद्धुर्कर्त्तव्या हय करिव किन्तु इहादु
 मद्देवि पदि क्षेत्रं आवश्यक हय उवे आपनि
 ए पर्यात्तु आसिवेन विशेष दिति इहेया

याहा कुर्वा ताहार चेष्ठा चरित्र करा यहि बेक
 किम्बा आर कोन कोशले कांप्य ठले उवे
 ताहाइ करिब । श्रृंगुत दामणोविन् दाम्
 महाश्वर एपाने आमियाजिलेन अद्य दूष
 दिवस इल बारान्शी पुम्हन करियाजेन
 ताहार पत्र एपाने छिल ताहा पाठाइतेजि
 शीघ्र ताहार बाटीते पाठाइया दिवेन आमि
 ताहाके एक शत टोका पथि बाग् नियित
 दिया श्रृंगुत दामणन् बाबुर महित पाठाइयाजि
 पाठना पंचाङ्ग सहन् पैशिते पारिबेन
 मेघान हहते बाबु माति मरिति करिया
 दिवेन से जन्य कोन भावनार बिषय नहे ।
 ए सकलं अर्धाचार ताहारदिगेर बाटीते
 आनन्द याइया विशेष विशेषन करिया
 रहिवेन बाटीर “ कहे यस्त ना इयेन
 यातायाते शर्मलादि लिखिवेन । किम्बदिक
 शिति ।—

ଲୟୁ ପୌଷ୍ଯ ତିଥକେ ।

ପୁନାମ୍ବା ଆବେଦନକୁ ବିଶେଷ୍ଟ । ଭବଦାଶିଷ
ଅନ୍ତର୍ଶିଵମ୍ଭୁରୁ । —

ଏହାନଙ୍କାର ମହାଠାର ପଞ୍ଚେ କୃତ ଲିପିବା ।
ଆମିଯାଜି ଅବସ୍ଥି ନିରନ୍ତର ରମ୍ଭା ଆଜି
କାର୍ଯ୍ୟ କୁମର କିଛୁଇ ହୁଏ ନାହିଁ ତାହାତେ
ନିତାଳୁ ବିଦୁତ ଇହୋ ! ଦେଖାଇତେଜି ବାମାର
ବ୍ୟାଗ୍ର ବ୍ୟାମନେତେ ଅକ୍ଷମ ଏହାର କାର ଯାତ୍ରାଯି
ଦୂରି କେବଳେ ଦୂର୍ମୁ ଲାଭ ଉଦ୍ୟତିରେ ଆର
କୋନ ଲାଭେର ବିଷୟ ଦେଖି ନା । : କି କରି
ମରଜେରି ଔଷଧର କୁର୍ତ୍ତା ଯନୁଷ୍ୟର ହାତ କିଛୁଇ
ନାହେ କିନ୍ତୁ ଚେଷ୍ଟା ପଥାଶକ୍ତି କୁର୍ତ୍ତବ୍ୟ । ଇହା
ଭାବିଷ୍ୟା ଏହାନେ ଆଜି ଆମାଙ୍କମ୍ କୁମର ମୁନ
ତାଗ କରିତେ ପାଇନା ନା । ବରାହନଗାର ଶ୍ରୀପୁତ୍ର
ଦେଇଥାନ ଯହାର୍ଥୀରୁ ବାଟୀତେ ବାମା କରିଯା

ହିୟାଜ କେବୁ ଚରତ ତୀର୍ଥ ସାରୀୟ ଯେ
 ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ହିୟେ ପାରେ ତାହା ଓ ହିୟେଜେ ଭ୍ୟାଳି
 ଅନୁଷ୍ଠାନମେ କୋଣ ମୂର୍ଖିକ ହିୟେଜେ ନା !
 ଯେ କିଛୁ ହୃଦୟ ଭାଦୁଶୀଳ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏଥାମେ
 ଧାରିଲେ ହିୟେକ ଇତି ଯଦ୍ୟ କୋଣ ମୂର୍ଖିକ
 ହୟ ଭାଲ ନତୁବା ଆଶ୍ଚିତାଦିତେ ଯେଦିଗେ
 ଔଷଧରେଣ୍ଟା ଥାକେ ଯାଇତେ ହିୟେକ ତାହାର
 ଦିଗ୍ନିଧିଗୁ ନାହିଁ । ଦେଶେ ହୃଦୟଭାଗ ଯାହା ଆଜେ
 ତାହାର ପଞ୍ଚନାର୍ଥଙ୍କ ବିବଳ ଆମ୍ବାଦିରି
 କିଛୁଇ ଜୀବିତେ ପାତିଲୀୟ ନା ବିଶେଷ
 ଲିଖିବେଳ ପଞ୍ଚମ୍ବରୀ ଶୁନିଃତଜି ଶ୍ରୀତ ବୁଜ
 ଯୋହନ ଘୋଷତାରହିଗେର ଅଶ୍ରିକାରେର ଦତ୍ତ
 ଶ୍ରୀପୀତ ହିୟାଜେ ଏ ମରାଠାରଟୀ ଅବଶ୍ୟ
 ଲିଖିତେ ହୟ ଘର୍ଯ୍ୟବିମ୍ବାତ ଆମାହିୟେତେ ତାହାର
 ଆନୁକୂଳ୍ୟ କିଛୁଇ ହିୟେ ପାରେ ନା ବଟେ କିନ୍ତୁ
 ଲିଖିଲେ ଓ ଫେତି ନାହିଁ ତରେ ଲିଖିଲେ ଦୈର୍ଘ୍ୟ କି
 ଅଭ୍ୟବ ଏ ମରାଠାର ଦିଶେଷ ବିଶେଷ ଲିଖି

ବେଳ ଆଶ୍ରା ଦିଗ୍ବୀଳ ଘାହା ହେଲେ ପାଇଁ ନାହାଇଲେ
 ଚେଷ୍ଟା ଏଥେଷୁ କରା ଯାବେକୁ । ଶ୍ରୀତୁମାର୍ଗାଳ
 ଦେଉସାମେର ଭୂତୁର୍ପ୍ରତ୍ଯ ଆହାରଦେର ଦେଉସାନ
 ହେଯା ଗିଯାଇଛେ ଉଠିଲୁ କାଜେ ଆଶ୍ରାରୁ
 ଦିଗେର ଜନେକୁ କେହି ଗୋଲେ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ବୁଝି
 ରିତେ ପାଇଁ ବିବେଚନା କରିଯା ଏହି ଅନକେ
 ତାହାର ନିଷ୍ଠାଟ ପୁଣ୍ୟାଇବା ଆପନାରଦିଗେର ଯେ
 ଦୁଃମଯ୍ୟ ହେଯାଇେ ଏପନ ଯାତାପନୀନ ଭାବିଲେ
 କି ହେବେକୁ କୋନଶତ ପ୍ରକାରେ ଦିନ ଯାପନ
 ହେଲେ ତାଙ୍କ ପରେ ଘନି ଔଷଧର ଭାଲ କରେନ
 ତାବେ ମରୁଲି ଆଓଯା ଘାବେକୁ ଏଇକ୍ଷନେ ଏହି
 ବିବେଚନାଟି ଭାଲ ଇହାତେଇ ନିର୍ଭର କରିବେନ
 ଯେମନେ ଗୋଲେ କିଛୁ ଭାଲ ହୁ ଏଯତ ବୁଝିତେ
 ପାଇଁ ମେହାନେ ପ୍ରାନ୍ତିକରଦିଗଙ୍କେ ଯାଇତେ
 ପରମ୍ୟ କହିବେନ ଦୁଃମଯ୍ୟେ ପିଣ୍ଡାଗିମ୍ୟ
 ବିବେଚନାୟ କିଛୁଇ ଇହାତେ ପାଇଁ ନା । ଏ

ଦେଶେ ଶ୍ରୀତ ରାଜା ଯହାର୍ଥୀରଦିଗେର ଏକଟୋ
 ପ୍ରମାତ୍ର ଉପର୍ଦ୍ଧିତ ତାହାତେ ଦେଶେର ଯାବନୀୟ
 ଲୋକ ସମ୍ମନ ଏ ଅଧିକାରେ ରାଜ୍ୟଗୋପାଳ
 ପାଇ ମରଦାର ବଲିଯା ଏକ ଜନ ଦୟା ଛିଲ
 ତାହାର ବିଠରନ ଦେଖାଯିବ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପୁଣ୍ୟ
 ହେଲେ ରାଜବାନୀ ହେତେ ତାହାକେ ବିରିତେ
 ଧାନ୍ୟଦାର ଆମିଯାଜେ ମେ ଦୟା ଏପନ କୋନ
 ଦେଶେ ତାହାର ଅନୁମଜ୍ଜାନ ପାଇୟା ଯାଏ ନା
 ଇହାର ନିଶ୍ଚିତ ମରଳି ସମ୍ମ ଉତ୍ସରବଦ୍ଧା କି
 ହ୍ୟ ବଳୀ ଯାଏ ନା । ମସ୍ତକି ଶୁନିଲାମ ଆମାର
 ଦିଗେର ଏକ ଜନ ପୁଜା ରାଯେରଦେର ଅଧିକାରେ
 ପଲାଇୟା ଗିଯାଇୟ ତାହାତେ କୋନ କୋତ ନାହିଁ
 କିନ୍ତୁ ଆମାର ରାଜସ୍ତର ଏକ ପଢ଼ୀ ବୀନ୍ୟ ତାହାର
 ମାନେ ପାଇନା ଏୟାଂ ତାଙ୍କର ପଞ୍ଚିଶ ଟୋକାର
 ମଦ୍ୟ ୫୦ ଦଶ ଟୋକା ଦିଯାଛିଲ ବକ୍ଷି ପନେତ୍ର
 ଆମାନି ତାହାକେ କହିବେନ ଆମାର ଯେ
 ପାଇୟା ଆଜେ ତାହା ଦୟେ ତରେ ଆହି କୋନ

ଆଖିଦ ନାହିଁ ମର୍ଜନ ବମ୍ବତି କହୁଣୁ ଆଶି ରାଜ
 ମେର ବକ୍ରିତ ନିତାନ୍ତ ବିବୁତ ତାହା ଜାନାଇବେନ ।
 ଏଥାନେ ଯେ ଦୁର୍ବୟେର ନିମିତ୍ତ ଲିପିଯା ଛିଲେନ
 ତାହା ପାଠାଇତେଛି ପଞ୍ଚ ଦୃଷ୍ଟ ବୁଝିଯା ଲାଇବେନ
 ଯେ ଲୋକ ଯାଇତେଛେ ଇହାକେ ବେଜନ ଦିଯା
 ବିଦ୍ୟାୟ କହିବେନ ଏକ ଥାନ ମୋହର ପାଠାଇତେଛି
 ଏକଟା କପାର ଛିଲିମ ମୂଲ୍ୟ କହିଯା ପାଠାଇବେନ
 ଆର ଆଶାକେ ଏକ ମାଯଗୁଁ ଦିତେ କହିଯା
 ଛିଲେନ ଘନି ଏହି ଲୋକେର ମୀଳେ ଦିତେ ପାରେନ
 ଦିବେନ ଆଶାର ଅଭ୍ୟାସଶକ୍ତ ହେଯାଇଁ ମାଯଗୁଁ
 କିଛୁ ବନ୍ଧୁମୂଲ୍ୟ ନାହେ କିନ୍ତୁ ଆଶାରଦିଗେର ଏ
 ଦେଶେ ଦୁର୍ମିଳ ଅତ୍ୟବ ଲିପିତେଛି ଏ ମାଯଗୁଁ
 ଯତ୍ତ ପୂର୍ବରୁ ପାଠାଇବେନ । କିମ୍ବବିହୁ ବିଜାନ୍ତନ
 ଯତି । ——————

ଲମ୍ବୁ ପୋଷ୍ଟ୍ ପିତକେ ।—

ନତି ବିଜ୍ଞାପନଙ୍କ ବିଶେଷଃ । ଭର୍ତ୍ତା
ସବ୍ଦାଦିତୋତ୍ତାନନ୍ଦ ପତ୍ର ।—

ଆମି ଏଥାନେ ଆମିଶ୍ଚାଜି ଅବଦି ପତ୍ରାଦି
ନୀ ପାଇଁଲୁ ଓହିଦୁ ଆଜି ଲୋକ ଧାରୀତି
ମହିଳାଦି ସମାଚାର ଲିଖିବେନ । ଏଥାନ
କାହାର ସମାଚାର ସମ୍ମନ କାହାର ହେଲେ
କହିବ ଶୁଣିବ କୁର୍ତ୍ତାର କର୍ତ୍ତା ଘେଗ ଅଦ୍ୟାପି
ହୟ ନାହିଁ ବୁଝି ଯାମେକୁ ପଞ୍ଚର ଯଦ୍ୟ ହେବେକ
ତାହାର ବିଶେଷ ସେ ହୟ ପଞ୍ଚାତ ଲିଖିବ ।
ଏକମନେ ଯେବେ ଓଳେଯ କାହେବ ଅମୁକ
ମୁହାନେ ଠନିଲେନ ଆମାର ମହିତ ପୂର୍ବେ
ମାହାର ଛିଲ ଏବେ ଆମାକେ କହିଯାଇଲେନ
ଯଦି କୋନ କର୍ତ୍ତା ହୟ ତବେ ତୁ ଯି ଆମାର
ମହିତ ଧାରୀ ପାରିବା ଆମ ଓ ତାହାର

अधीकृत जिलांम् प्रथन माँकां करिने पाहा
 हय पंश्चात् निधिर् प्रदेशने प्रथाने पाकने
 कोन पुण्योजन नाई पदि उलम् माहेर
 आशाके मात लहेया पान उवे अवर्णा पदिर
 जात कारन लिखिलाम् । कोन विष्रु आशाके
 पूर्वे लिखियाजिलेत ताहा प्रपाने चेष्टा
 करितेछि एवं दूडे एक साने अनुमङ्गान
 ओ पाइयाचि इस्ताति इलेहे शीघ्र पाठाइर
 मे जन्य चिन्तित नहिदेत । श्रीयुत भोलानाथ
 मरुकार प्रथन कोन माने आज्ञान एवं
 ताहार कन्यार विवाहेर कोन माने हैर्य
 हइयाचे कि ता पदिओ हैर्य ता हइया पाके
 उवे एक माने निधीर्य करिया आशाके
 मशाचार लिखिवेत आपनकार्दिगीर पंत्र
 पाइले मशाचार विदित हुइया प्रथान इतेजे
 द्याय्यमनेवे पाहा मानित्य करिते पारि
 ताहा चेष्टा करिव शुभपञ्चाश टाका अर्दावे

इहेवेकु अत्यन्त ताहारुदिगीके ताहाइया
 रुहिवेन विवाहेन् ईर्ष्यं कुरिया आमाके
 समाठार लेमोन उवे आमि टोहार मुर्घेंगे
 थाक्किव। आरु तोमारुदिगीर अस्तिकारेव रुह
 कि पर्यन्तु पुदान इहेल रुह अपेक्षा ताहार
 दिशेस निश्चिरा एवं पुत्रा वस्ति ये पर्यन्तु
 कुरिते पाँदह ताहाते रुदाच ओदाम्य कुरिया
 न। ताहाते दूषे ढारि शत्तोक्ता दायि हय
 आमाके लिश्चिरा आमि ताहार मुर्घेंगा कुरिया
 पाठाइव छोन दिश्चु ताबना कुरिया न। उत्तर
 पुत्रुल जबश्यं कुरिवेन। आमारु एक जन
 ठाकुर आदश्यकु इहेयाच्छ ताहा अधान इहेते
 छेक्खा कुरिया नाठाइव। विलक्ष्ण रुपर्याक्षम
 हय एवं अलम न। हय वेउन दूषे ढाका
 कुरिया दिव आरु अम वस्त्र पाइवेकु पुर्वेव
 तोमारु ठाकुर ये छिल से अडि ताल
 ताहाके छेक्खा पाइव। से यदि आइमे उवे

ବଡ଼ ଭାଲ ନତୁରା ଆରୁ ଏହି ଜନଙ୍କେ ବିବେଚନା
କରିଯା ଅତି ଶୀଘ୍ର ପାଠିଇବା ଏଥାନେ ଭୂତ୍ୟ
ଆଜାବେ ବଡ଼ ବ୍ୟାମ୍ଭୋହ ହଇତେଇଁ । ଆଦିକ କିମ୍ବା
ଗିମ୍ବିବ । ଇତି ।—

ଓଳିକ ପ୍ରତିପାଦନ ଲମ୍ବାକେ ।—

ପ୍ରତିପାଦନ ମା ପରମ ଶୁଭାଶୀନିର୍ବେଦନଙ୍କ
ବିଶେଷଂ । ଯହାଶୀଯେର ହିର ରାଜଲକ୍ଷ୍ମୀ
ମତତ କାମନଧାତ୍ର ନିର୍ବତ୍ତି ପରଂ ।—

ଚିରଦିଵମାନ୍ତରେ ଯହାଶୀଯେର ଆଜ୍ଞା ପତ୍ରୀ
ପାଇଯା ମରୁଲ ମଯାଚାର ଅବଗତ ହଇଲାମ୍ ।
ଏ ବନ୍ଦମର ପନ୍ଦାଇ ଜଳ ଦୂର୍ଦ୍ଵା ହଇଯା ଓ ଆଙ୍ଗଳ
ଦୁରିଯା ଗିଯାଇଁ କଦାଚିତ୍ କୋନ ପ୍ରାୟେ ଏହି

ଆନ୍ଦଧାନ ବାଟୀ ରକ୍ତ ପାଇୟାଜେ ଏ ଦେଶେତେ
 ଓ ଏହି ଯତ ହୈୟାଜେ ଇହାତେ କୋଡ଼ି କରିଲେ
 କି ହୈବେଳ ଏବାର ମସର୍ତ୍ତ ଏ ଦମ୍ଭ ଘଟିଯାଜେ
 କରୁ ଯାଏ କି ଏ ମରଳ ଦୈର୍ଘ୍ୟ ଆନ୍ଦଧ ପରିବା
 ଶୁନିତେଛି ଶହାଶ୍ୟର ଅସିକ୍ଷାରେ ଏକ ଗୁମ୍ଫ
 ବ୍ରଦ୍ଧାତ୍ମଳ ପାତ ହୈୟାଜେ ଏ ଅଭାଷ୍ଟର୍ ଶୁନିଯା
 ନିତାନ୍ତ ମନ୍ଦେହ ଜନ୍ମିଯାଜେ ଇହାର ବିଶେଷ
 ଲିଖିଯା ମନ୍ଦେହ ଛୁଦ କରିତ ଆଜୀ ହୈବେଳ ।
 ଆନ୍ଦନକାର ଅସିକ୍ଷାରେ ଏକ ପୁଜାରୀ କନ୍ୟାର
 ମହିତ ଆମ୍ବାର ଏହି ପୁଜା ମତ୍ତୁଦୟନାମେ ତାହାର
 ବିବାହେର ମମ୍ବକ୍ଷ ହୈୟାଜିଲ ଏବଂ ବିଶ୍ଵାସିତିଶ
 ଟୋକା ପନାକୁରେ ଦିଯାଜିଲ ପରେ ଆନ୍ଦନକାର
 ଅସିକ୍ଷାରେ ପୁଜା ଦୁଃଖ କରିଯା ମୁନାନ୍ତକୁରେ
 ମମ୍ବକ୍ଷ ଦୈର୍ଘ୍ୟ କରିଯାଜେ ଏହି ଘପନ ଘରିତୁ ତାହା
 ଅନ୍ୟଥା କରିଯା ତାନ୍ୟତ୍ର ମମ୍ବକ୍ଷ କରେ ତାବେ
 ପଞ୍ଚାତ ବଢ଼ ମନ୍ଦ ହୈବେଳ ଅତ୍ୟବ ଆନ୍ଦନ
 କାର ଅସିକ୍ଷାରେ ପୁଜା ତାହାକେ ତାଙ୍କାଇୟା

କହିବେନ ଏହାର ନା କରେ ତାରେ ଯଦି କଥ୍ୟ
 ପରିଗୁଡ଼ି ନା କରେ ପରେ ଆମାର ପୂଜା ଏକଥ୍ୟ
 ରାଜା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପୁରୁଷ କହିବେଳ ଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କିଛୁ
 ଭାବ ହେବେ ନା ଆତଏବ ଯାହାତେ ଭାବ ହୟ
 କହିବେନ ଆମାର ୧ ମଧ୍ୟାଚାର ପଞ୍ଚାତ ଲିଖିବ ।
 ଦିନାତପୁରେର ରାଜମ୍ଭ କୋନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଇଚ୍ଛାଗତ
 ଇଶ୍ୟାଚେ ଏବଂ ମେ ପ୍ରାୟ ମୁଶ୍କୀମିତ କି ଯତ
 ଇଶ୍ୟାଚେ ତାହାର ବିଶେଷ ଜାନିଯା ଲିଖିବେନ ।
 ଆମାର ଅବିକାର ଏ ସ୍ଵର୍ଗ ମୁଦ୍ରର କପ
 ଶାମିତ ହୟ ନାହିଁ ମେ ଜନ୍ୟ ମବଦ୍ଦା ଚିନ୍ତିତ
 ପୂଜା ଲୋକେ ଆଦ୍ୟାନି ପୁନାହ କରେ ନାହିଁ ଏବଂ
 ଗତ ସ୍ଵର୍ଗରେ ରାଜମ୍ଭ ବକ୍ତି ଆଚେ ତାହା
 ଦେଇ ନାହିଁ ଏଥନକାରୀ ଯେ ପୁରୁଷ ବିଠାରୀ ହେଇ
 ଯାଚେ ଏକ ଟୌକା ବକ୍ତି ହେଲେ ନିର୍ଝୟ ହେତେ
 ହୟ ମେ ମରଳ ଦୟା ପୂଜା ଲୋକେ କିଛୁଟେ
 ଆମିତେ ନାହରେ ନା ଆନାଇତେ ଓ କୌଶଳ ନାହିଁ

एथन प्य विठार इत्याज्ञे ताहाते जोट दक्ष
 नाई द्राजारु एই नीउ मनुग्नि उपैवच अत्यन्त
 क्षियते तदु इत्तेप्य तारे ताहा भाविले ओ
 ओपाय नाईमे प्य इत्कु एथन इत्तेप्य
 अन तदु लोक आपनकारु निकट पाइत्तेज्ञे
 विशेष रूप्यरु रूप्या आज्ञे ऐहार महित
 आलाप इत्तेले प्य पुरुषः लोक आनिते
 औरिवेन परे ऐहार महित रूप्यरु रूप्या
 विवेचन पूर्वक रुहिवेन मल्लोक इत्तेले
 कोन भावना नाई नतुवा क्षिति इत्तेप्य आरि
 वेक्ष बिन्दु इनि तित्तानु विशिष्टरु मन्त्रान
 वटे ताहा आग्नि जानि ऐहार महित क्षेवल
 एहे पुरुष मास्कात् अत्यन्त मादवान पूर्वक
 याहा दक्षय विवेचनाय आईमे ताहाटि
 रुहिवेन महसा किछु रुहिवेन ना बाटीरु
 मूम्हादि मशारु लिपिवेन । इति ।

ଓହ ପ୍ରତିପାଳକ ଓହକେ ।—

ଶୋକାବର ଶ୍ରୀଯୁତ ଅଶ୍ୱକୁମାର ଶାସ୍ତ୍ରୀ
ମହାଶୟ ପରମ କଲ୍ୟାନବରେଷୁ ।—

କୁଏକୁ ଦିବମ ଗାତ ହେଲ ଶ୍ରୀଯୁତ ଅଶ୍ୱକେର
ବାଢ଼ୀତେ ମହାଭାରଥ ପ୍ରମନ୍ତ ମଭାଜେ ଜବନ
ବିବରନ ପ୍ରମୁଖ କରିଯାଇଲେନ ମେ ମହୟ ନିରାପେ
ଖାଲ୍ କୁମ୍ବେ ବାହଳ୍ୟ ହତେ ନିବେଦନ କରିତେ ପାରି
ନାଇ ଏପନ ମେଇ ବିବରନ ଲୋପା ଯାଇତେଛେ
ଆବଦୀନ କରିବେତ ତ୍ରେତୀ ଯୁଗୀ କ୍ଷେତ୍ରି କୁଳେ
ମୁର୍ମ୍ମାଦଂ ଶଜାତ ତୌଳଜଙ୍ଗ ହାହା ହୃଦୁ ପ୍ରଭୃତି
କୁଏକୁ ଜନ ରାଜା ବୁଝାର ପୁଣ୍ୟ ବଶିଷ୍ଠ ମହା
ମୁନିର ମହିତ କନ୍ଦଳ କରିଯା ଶୋଭି ତଥ ପ୍ରୟୁକ୍ଷ
ଶାଲାଶୁନ କରିଯା ଅତି ଦୂର ଦେଶ ପଞ୍ଚିମ
ମଧ୍ୟ ତୀରେ ଯାଇଯା ବସତି କରିଲ ଚିରକାଳ
ଏହି ଯତେ ଗାତ ହୟ ତୀହାରଦେର ମନ୍ତ୍ରାନ୍ତୋତ୍ୱ
ମନ୍ତ୍ରାନ୍ତ ମହାଶ୍ଵରବର୍ଷ ହେଲ କିନ୍ତୁ ବଶିଷ୍ଠ ଶାପେର

भयाते निर्भय होते नीरे ना कुत्ताल पाठे
 नारद मूलि भूमन करिते । ऐसे हाने ओ
 द्वित इया देखन क्षत्रि ब०-शीय कुत्तालि
 लोक सच्च इया बमति करितेजे क्षमिर
 आगमने अविक सक्काळुल इल इहाते
 नारद विश्वापन्न इया याने जासिलेन
 ये इहाया ताज़ि हाहा, हूहूर मन्त्रान
 वशिष्ठ शाप डाये उपुडाबे एपाने बमति
 करितेजे तिनि ताहरदिगीके आप्तम
 करिया कहिलेन भय करिओ ना आयि नारद
 वशिष्ठ नहि इहाते ताहाडा नारदके अति
 आदर गोरबे रड्ड मिहासने बमतिया
 पाद्यार्था प्रार्थि पूजा करिया कुत्तालि
 इया निहेदन करिल पूजो आप्तादिगीर
 कि ओपारु पूर्वपूर्वधरा वशिष्ठ शाप भयाते
 देश भुक्त होया एहे हाने बमति करिया
 जेन आदरा ओमेह मत आजि इहा इहाते

କି କୁଣ୍ଡ କ୍ରାନ୍ ପାଇତେ ପାରି ତାହାର ଆଜ୍ଞା
 ହେତୁ । ନାରୁଦ କହିଛେ ଶୁନ ବଶିଷ୍ଠ ଯହାକ୍ଷସି
 ତାହାର କୋଟି ହେତେ ଏ ବିମ୍ବ ପାଇତେ କହାତ
 ମୁକ୍ତ ହେତେ ପାଇବା ନା କିନ୍ତୁ ଓପାଇଁ ଆଜ୍ଞେ
 କରିତେ ପାରିଲେ ହୟ । ତାହାରା ବଳିଲ
 ଅନ୍ତି ଯେ କଥ ଆଜ୍ଞା କରିବେତ ଆଯରା
 ତାହାଇ କରିବ । ନାରୁଦ କହିଲେ ତବେ ବିଦେଶୀ
 ଆଚରନ କରି ଆଚାର ଓ ସାବଧାରେର ବିନ୍ଦୁଯ୍ୟ
 ଏଯତ କଥକ ପୁରୁଷେ କରିଲେ ତବେ ଦୁର୍ଲଭାପେ
 କିନ୍ତୁ କରିତେ ପାରିବେ ନା ତୋଯାରଦିଗେର
 ମନ୍ତ୍ରାନ୍ତରଦିଗୀକେ ତାହାରା ନାରୁଦୋପଦେଶେ ମେଇ
 ଯତ କରିଲ ଏବଂ ତାହାରଦେର ଦୁର୍ଦ୍ଵିଷାନ ଲୋକ
 ମେଇ ସାବଧାର ଯତ ଏହ ଶାନ୍ତି ଓ ପୁରୁଷ
 କରିଲ ମେଇ ହେଲ ତବେ ଶାନ୍ତି ଅତ୍ୱର ତାଳ
 ଅଛି ହାହ ! ହୁହୁ ମନ୍ତ୍ରାନ୍ତରାଇ ଜବନ ମେଇ
 ଆତିତେ ଯହୌରି କାନ୍ତିଜବନ ଓଦୁର ଯେ କୃକ
 ହିଁ ମାତେ ଯୁଦ୍ଧକଳା ରାଜ୍ୟର କୋପ ଦୂରେ ତମ୍ଭ

इल मे विवेदन ओलोग्न घाइतेजे अव
हीन करिबेत । द्वारा पुणे शिक्षु छूँश
बवाप्प देवकी गार्ड्स आवार हड्ड्या छूँशके
हटि करिलेन राजा शुद्धामिक्तु छूँशेर शुशुर
खला शुष्टि शुतिल ये कृष्ण कृष्ण बवि करि
याचे हाहा शुति यात्र यहा फोटोन्हित हड्ड्या
निज मेना एवं अनुदर्शि राजागिनके मस्तु
मान रुदिया कृष्ण दमनाप्प मधुरा गिमन करिल
इति यदो शुद्धामिक्तु मथा कान्तजरन
आपन ऐना मत्तु अगुगामी हड्ड्या मधुरा
पुरी बेक्तन करिले ओगुमेन पुत्रिति यहा
फोटो मस्तु हड्ड्या ताहार महित घोरतर
शुद्ध करिलेन अवन अति बलवान ओगुमेना
एतोहार द्वाने पराजित हड्ड्ये कृष्ण भावि
मेन एदुरुक्त कान्तजरन आमार बवि नहे
अत्तु ए नुहार अनुदरे इहाके नाश करिते
होये इहा विवेचना करिया कृष्ण बल दम

दूषे भाई उत्तमुरु प्राचीरेय उंद्र उत्तिलन
 कालजवत आहा देखिया मठ१ वृक्षिल
 इहारा उग्रेते पालाय प्रेषे वेळा विरि इहा
 विवेचना करिया दूषे जनके विरिते गोल
 कृष्ण दलराम प्राचीरु इहेते उल्लङ्घन करिया
 द्रुत हेगेते पंचानन करिलेन कालजवत
 ओ महा वेळो पंचात गति करिल ए कर्पे
 नाना शान भूमन करिते कृष्ण विवेचना
 करिलेन पूर्वे उडकामुद्रेरु पूर्वे देव
 गन नरात्मक हईया राजा मृतकक्षके पूर्वापि
 मेलानेति करियाजिलेन राजा मृतकक्ष महा
 दल पराक्रम ठिरकालावसि अमूरु महित
 पूर्व करिया देवतारुदिगीर माहार्या करिल
 इहाते द्रुक्षा आहाके तुक्षे इहेया वरदाने
 पत्न्यान इहेले मे कहिल नितांशह आणि
 ठिरकालावसि अनिद्वित आणि व्यानक काल
 निदृष्ट याईव इहाते ये निदृष्ट उक्त करिवे मे

आशार दृष्टि शांत्रेइ उम्म इडेवे २१० एक
 निष्ठ्या द्वान् आशाके देह मेइ द्वान् पाइया
 शयन कुटि तुक्का बलिलन उथासु चूगि हिया
 लघु एवर्तु उहा शत्री पाइया शयन कुरह
 एवं मे मेइ निदौते आज्जे ताहारि द्वारा
 ए दूष्टेर निमं उन कुटिते इवेक एই मिर
 करिया दूरे उहि पाइया हियालयेर मेइ उहा
 पुर्वेण करिया अनुदीर्यान् इलेलत कालजदन
 ओ मेइ उहा पुर्वेण करिया देखे एक उन
 पूरुष शयने आज्जे यहा कोपे बलिल आरे
 पानिष्ठ एधन वज्र शुभ्र हइया निदौते यन
 द्वियाज्ज पक्षावती यम आज्जे ताहा जानह
 ना ईहा बलिया ताहार वक्ष मूले दरुते
 नदाम्भात करिल द्वाजा मूठक्क नदाम्भाते निदौ
 ते इहेया दृष्टि करिवा यात्र कालजदन उम्म
 द्वालि इल एই पुर्वारे कालजदन स्फुर हइल
 एहे शास्त्रोऽजवन दिवरन जानिवन । ईति ।

ଶ୍ରୀ ପୁତ୍ରପାଲଙ୍କ ଲହୁକେ ।—

ଅନନ୍ତାତିକୁ ପୋଷାମ୍ଭ ପରମ ଶୁଭାଶୀନିର୍ବିରେ
ଦୟକୁ ବିଶେଷତ୍ତ୍ଵ ଯହାଶୀଯେର ଆତୁଳୋଦୃତ
ଶ୍ରୀଜାନ୍ମା ନିଯତ ପୂର୍ଣ୍ଣମୟ ଆତ୍ମ ନିର୍ବିତ ପରମ ।

ଶ୍ରୀଜିତୁରୀବକେର ହାତ ଯହାଶୀଯେର ଅନୁଗ୍ରହ
ପର ପାଇଯା ମର୍କଳ ମର୍ମାଠାର ଅବଗତ ହେଲାମ୍ଭ
ଯେତେ ବିଷୟ ନିଧିଯାଇଲେ ମେ ମର୍କଳ ଆସି
ପୁଣି ଏବେ ସାବଧାନ କରିଅତଜି ଏବଂ ଯାହା
ଅପେକ୍ଷା ଆଜେ ତାହାଓ କରିବ ତାହାର ବୁଢ଼ୀ ଏ
ପରିଜନ ଦିଗ୍ବ୍ୟା କହାଇ ହେତେ ପାରିବେ ନା ଏ
ହୀନେ ଆଶାରଦିଗୋଟି ଯହାଶୀଯେର ଯଦୀ କେବଳ
ମେନ ଦେଉଥାନ ଯହାଶୀଯୁ ତାହାର ନିର୍କଟ
ପାତ୍ରାଯାତ କରିଯା ମର୍ମଦା ଏ ମର୍କଳ ବିଷୟ
କ୍ଷୟନାପେ ନିରେଦନ କରି ତାହାର ଓ ଆଶାମ

ଯେ ପୁରୁଷ ତାହାତେ ଦୁରିତ ପାରି ଏ ବିଶ୍ୟେର
ମୁପୁତୁଳ ଅତି ଶୀଘ୍ର ହେବେ ଏ ନିଶ୍ଚିତ ଆର
ବାନ୍ଧକାଳ ବାଯୋହ ପାଇତେ ହେବେ ନା ଜୀତ
କାରନ ନିବେଦନ ଲିଖିଲାମ । ଅଦ୍ୟ ଦିବମ
ଠାରି ପୌଠ ହେଲ ଶ୍ରୀତ ଯାହାନନ୍ଦରୀଙ୍କ ଯହା
ଶ୍ୟେର ମହିତ ସାକ୍ଷାତ କରିତେ ଗିର୍ଯ୍ୟାଜିଲାମ
ତାହାତେ ତାହାର ବିନ୍ଦୁଦ୍ଵାରା ଅନୁଗୁହ ଦୁରିଲାଗ
ଯହାଶ୍ୟେରଦିଗେର ବାଟିର ସମ୍ମାତାର ପୁତ୍ରଙ୍କେ
ଜିଜ୍ଞାସା । କରିଲେନ ତଥ୍ ମୟୁର ଯଦିଲ
ନିବେଦନ କରିଲାମ ତାହାତେ ବଡ ଆସଦିତ
ହେଲେନ ହିଶେଷତଃ । ଯହାଶ୍ୟେର ଲେଖାପତ୍ରଙ୍କ
କୃତ୍ୟ ଶ୍ରୀରାମ ଯହାଶ୍ୟେର ନୀୟ କରିଯା କହିଲେନ
ତିନି ଆନେକ ଦିବମ ଏ ଅଞ୍ଚଳେ ଆଇଦେନ
ନାହିଁ ବ୍ୟାମର ଭିନେକ ହେଲ ଶ୍ରୀତ ରୀଯ
ନାରୀଙ୍କର ବମୁଦ୍ର ମାତ୍ର ଶ୍ରୀଜ୍ଞାତେ ଆମିଯା
ଜିଲେନ ତାହାତେ ଓ ଆମାର ମହିତ ସାକ୍ଷାତ
ହୟ ନାହିଁ ଉପନ ତିନି ଅତିବାଲକ ଏଥିନ ଏ

ପୁଣୀତ କୁଞ୍ଜ ଇଯାଚନ ଲେଖିବାରେ
 ଶୁଣିଯା ଲକ୍ଷ ଲାଭର୍ ଆହୁଦିତ ହଇଲାଯି କବି
 ନିଃମନ୍ଦିର ହଇଲେନ ଚକ୍ର ମନ୍ଦିର ଦୂର ହଇଲେ
 ଆର ଅଥିର ହଇବେଳ ତିନି ଆମ୍ବାର ବକ୍ତ୍ଵା ପୁଣ୍ୟ
 ତାହାକେ ଆମ୍ବାର ଆଶୀର୍ବାଦ କହିବା ଉହା
 ସମିଯା ଆମ୍ବାକେ ବିଦ୍ୟ କରିଯା ତବେ ଅନ୍ୟ
 ପୁଣୀନ୍ୟ ଯନ୍ତ୍ରିତେ ମହିତ ଆଲାପ ମଦ୍ଧ୍ୟ
 କରିତେ ଲାଗିଲେନ ତାହାର ମୁହଁ ବାନ୍ଧଲା
 ଯହାଶୟେର ପୁତ ବିକ୍ରି ଏବଂ କଥାବାର୍ତ୍ତା
 ଭନ୍ଦିକ୍ଷୟ ଏଷତ ଆନାଇଲେନ ତାଙ୍କରେନ
 ଯହାଶୟେର ଏକବାର ତାହାର ମହିତ ମାକ୍ଷାତ
 କରିଯା ଆନନ୍ଦର ବାନ୍ଧଲା କରେନ ଅବଦୀନ
 ପୁରୁଷଙ୍କ ବିହିତ ଆଜ୍ଞା ହଇବେଳ । ଶ୍ରୀଯୁତ
 ଭବାନୀଶ୍ଵର ବମ୍ବୁଜ ଯହାଶୟ ଏକ ଘୋଡ଼ ହୌଠି
 ଆର ଏକପାନ ଛୁରି ଲାଗ୍ଯ ଏକଘୋଡ଼ ଏହି କଥ
 ଦୁର୍ଯ୍ୟ ଯହାଶୟେର ମୁହଁନେ ଢାହିଯା ପାଠାଇଯାଚନ୍ଦ୍ର
 ତାହାର ମାତ୍ରାର ନିମିତ୍ତ ମାଟ୍ଟିବନ୍ଧ ଦୁଇପାନ

ताहार दिगेव वैष्णव इन्द्रादि ए बड़मर
 दुखि पाठीत नाइ मे रुथा ओ ठाकुर माता
 पुकारान्तरे कहिलेन इहार ये बिहित आजा
 हइवेक। श्रीउ बसुडायार बिवाहेर विषय
 पाहा लिखियाछेन ताहार चेष्टा यपाशक्ति
 कहिव ताहाड़ त्रुटि हइवेक ता किन्तु भद्रा
 भद्रु औररहेछु। पाहा हय दूइ एक मासमेर
 मध्ये निवेदन लिखिव किन्तु बाय बाजारेर
 अनेक आवश्यक ताहा यहाशय यदि
 अक्षीरार कहेन उवे समृद्ध हिर झड़ा
 करिया दिते पारि यदि बाय बाजारेर मासुय
 इच्छा करेन उवे ए विषय एक्षणे कहित
 द्वायितेन दर्शि पुंजाते श्रीउ बायमुद्रर
 घटेकडाज एकाने आदितेन एत रुप
 आजे तिनि आहिल ताहाके यद्यवत्ती
 करिया ए विषय चेष्टा पाओया याइवेक
 अंत्रुति श्रीउ अगलारामवे यादुर अमूर्खात

ଶୁନିଲାମ ଓ ଉତ୍ତର ଅଛଳେଇ ସ୍ଵପ୍ନୀଲଗଳିଲ ମହାଲ
 ଅଦିକାରେଇ ମୀଘା ନିଶିତ ଅବନେଇ ଦିଗେଇ
 ମହିତ ବିଦୀଦ ଆରସ୍ତ କରିଯାଇଛେ ଏବଂ
 ତାହାର ଦିଗେଇ କୁଞ୍ଚିନିବିଷ୍ଟ ଘତୀ ରାଜାଗବ
 ଆଇଛନ ତାହାର ଦିଗେଇ ନିକୁଟି ଓ ପନ୍ଦ୍ର ଯାଇତେଇଁ
 ଅତ୍ୟବ ଏବାର ଜୋଟି ରତ୍ନ ଘତ ରାଜା ଆଇଛନ
 ମହାଲେଇ ଯୁଦ୍ଧ କରିବେନ ଏମତ ଲେଖାନ୍ତା
 ମହାଶୟର ଦିଗ୍ନିର ଅଧିନେ ଓ ଆମିବାର
 ଦିଷ୍ୟ ଜୀତ କାରନ ନିବେଦନ ନିଶିଲାମ
 ତାହାର ଯେ ପନ୍ଦ୍ରାଶ୍ଵ ମ୍ବ ହୟ ତାହାର ଦୈର୍ଘ୍ୟ
 କରିଯା ରାଜ୍ୟବେନ ଶ୍ରୀଯୁତ ବ୍ରଦାବନଚନ୍ଦ୍ରର
 ଲୋକ ଏକଜନ ରକ୍ତ ରାତ୍ରି ଅନୁଞ୍ଜିଶ ହେଯାଇଁ
 ମେ ଅନେକ ଟୋକ୍ଣ ତିଥା ଗିଯାଇଁ ତାହାଙ୍କେ
 ଅନୁମନ୍ତାନ କରିଯା ପାଇତେଇଁ ନା ଏଥାନେ
 ରାଜା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏ ରୂପ ବିଦିତ ହେଯା ରାଜାଜୀ
 ଏହି ହେଯାଇଁ ତାହାଙ୍କେ ଯେ ଦିରିଯା ଦିତେ ପାଇଁ
 ମେ ପେ ବୁଝି ଦିନ ଅର୍ଦ୍ଧକ ପାଇବେ ଆରୁ ରାଜା

पुस्ताद पाइवे यिनि विद्विते शक्त नहेन तिनि
 अनुमद्धान रुद्रिया सर्वांतर दिवेन ईश न
 रुद्रिया यदि राजदृत मे लोकके विद्विया
 आनिवे उवे ये अविकारे एवं ये ग्राम्य
 ताहाके पाइवे मे अविकारी ओ मे ग्राम्य
 वासी लोक राजदणी हइवेन एই बलवदाजा
 यदि मे लोकके ओ आफले मर्हार इड्या
 थाके अनुमद्धान विश्व गुरुमूर्तिते एवं ग्राम्य
 वासी लोकके ओ मावदीन रुद्रिया दिवेन
 आयि द्युकिते पात्रि ये पुरुष आज्ञा ए
 लोकके नियित कठ मञ्जन लोकके मर्वनाश
 हय वा ईशर अनुष्ठने राजदृत महाशयेन
 दिगेन ओ आफले आदाइ याइवे आरु कोन
 विष्णुते भावता नाइ मर्मन्तुइ मर्मिल ईश
 पुरुल पुरापे निवेदन मिति ।—

ଶିଖା ପୁଣ୍ୟକେ ଏଥିରେ ପୂଜ୍ୟ ତୁଳା ମସିବୁକେ ।—

ପୁନଃ ପୁତ୍ରିଯ ଆହୁତ ଅମୃତ ପରମ କଲ୍ୟାନବରଦେଶୁ

ଚିରକାଳଗୀତେ ଓହୀନଙ୍କାର ମହାଠାର ପତ୍ରଦାରୀ
କାତ ହେଲାଯ , ରଘୁନାଥେର ଆତ୍ମବିମୃତି
କାରନ ଲିଖିତେ ଲିଖିଯାଇଲା । ତାହାର ବିଶେଷ
ଲିଖିତେଛି ଅବୀତ ହେବା ପୂର୍ବକାଳେ
ମତାପୁଣୀ ମୁଧ୍ୟବନ୍ଦୀଯ ରାଜା ଅମୃତୀଶ୍ୱର
ନାମେ ଯହା ପୁନାବନ୍ତ ଦାତା ମତାବାଦୀ ପରମ
ଦୈତ୍ୟ ଜିଲେନ ଆପନି ଲକ୍ଷ୍ମୀ ତାହାର କଳ୍ୟାନ
ହେଯା ଅନ୍ତିମୀଛିଲେନ ତାହାର ନାମେ ଶ୍ରୀମତୀ
ପରମମୁଦ୍ରାରୀ ପନ୍ଦିତୀ ରୁତ୍ୟା ତାହାର କପେର
ପୁତ୍ରିଯୋଗିତା ପୂର୍ବିବୀତେ କାହାର ମହିତ ଛିଲ
ନା ରାଜା ଅଭିଧି ଭକ୍ତ ବଡ଼ ପୁତ୍ର ଦିଵମ ଘତ

अतिथि आहिसेव विलक्षण कृपे सकलेह
 मेवा कठन बुक्क्व अतिथिर पद प्रकाळ
 नेह जन शिती आनिया देन एहे माते कृत
 काल न त हय एक दिवस नाही ओ पर्वत
 दूडे क्षमि अम्बरीश बाजार वाटीते अतिथि
 हलेह ठाजा यहा आयोद्धे आयोदित
 हइया ताही दिनाके आउत्तना करिया ठरन
 बद्धना करिया मिंहासन दिलेन शिती
 जन आनिया मुरिदिगेह ठरन वीत
 कृष्णित्तजन एहे मयय कृतार मूर्खन्दुमा
 आलोकून करिया मुनिया दूडे जनेहे मदला
 शक्त हइया इच्छा करिलेन एहे कृताके विवाह
 करि यहा क्षमि नाही मने विवेचना करि
 लेन आगि पूर्वेव बुक्क्वार साक्षात् नियम
 करिया दारा प्रियगी हइयाचि एही ए
 कृताके देखिया अशक्त हइलाय अउवर
 नियमठात हइया ए कृताके विवाह कृद्वित्ते

ହେଠେକ ଇହାତେ ଆଶୀର୍ବ ନିଶ୍ଚିର ଭଦ୍ର ଜନ୍ୟ
ଯହା ପାଇଁ ଓ ମୁକ୍ତିକାର ପରିଵର୍ତ୍ତ ଯୁନି ଓ
ଯନେଇ ଏହି ଯତ ବିବେଚନୀ କରିଲେନ । ଏହି
ଭାବନାତେ ଦୂଇ ଅନେ ମୟମ୍ଭ ରାତ୍ରି ଧାରନା
କରିଯା ପ୍ରାତିଃସ୍ମୁନେର ପର ରାଜୀର ମନ୍ତ୍ରିକୁଟ୍
ଓର୍ବାତି ହେଲେନ ପୁଅଥେ ନାରଦ ଯୁନି ରାଜୀଙ୍କେ
ତାକିଯା ନିର୍ଜନାତେ କହିଲେନ ଶୁନ ଯହାରାଜ
ମନୁଷେହେ ଜାନିଛି ଆମି ଦାରତ୍ୟାଗୀ ଦେବକ୍ଷର୍ମି
ଏହେକୁଳେ ତୋମାର କନ୍ୟାଙ୍କେ ଦେଖିଯା ଆଶୀର୍ବ
ଦାରଗୁହନ ଇହ୍ନୀ ହେଲାତୋଶୀର କନ୍ୟାଙ୍କେହେ
ବିବାହ କରିବ ତୁମି ତାହାର ଅଯୋଜନ କରଇ ।
ଇହାର ପଞ୍ଚାତ ପରିଵର୍ତ୍ତଯୁନି ଓ ଉଥୀୟ ଘାଇଯା
ନାରଦେର ମାନ୍ଦାନ ରାଜୀଙ୍କେ କହିଲେନ ଯହାରାଜ
ପୁଅଥେ ଆମି ପନ କହିଯାଇ ତୋମାର ଶ୍ରୀମତୀ
ନାମୀ କନ୍ୟାଙ୍କେ ବିବାହ କରିବ ଉନ୍ନିଶ୍ଚିତ୍ତ ଆଗି
ମନ କହିଯାଇ ବିବାହେର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ କରଇ । ରାଜୀ

ए रुपा श्रुतियाँ विचार्यानम् रुहिलेन ठाकुर
 आशारु एक रुपां श्रीयती डाइरु अभिलासि
 आनंदां दूषे जन केह मायान्ता तह आग्नि
 काहाके पुरान रुहिव एक जन कोवि रुहि
 लेहे रुक्षा नहि द्राजा ईशा बलिया बोनाय
 लम्बी हड्डेन। परे शुनिया रुहिलेन महाराज
 ईहारु एक विवेचना आजे श्रीमतीके स्थान
 मरां रुहाओ डाइरु पाहाके ईहा इडेहे
 डाहाके दरबन रुहिवेन ईहाते तुशि आशारु
 दिगेरु काहारु काजे जनंदायि इहेया ना परे
 विसि शते मेहे ददनीय नीत्राके दान रुहिवा।
 राजा श्रुतिया रुहिलेन ये आजां उवे अपं
 नांदा रुला आग्नेय रुहिवेन ये आजा
 रुहिलेन ईहाइ इहेवेक शुनिया बलिलेन
 उपास्तु। परेथे यहाइते॒ नैरस्त्र अहङ्करणे
 विवेचना रुहिताजेन आशारा दूषे जन क्षम्भि
 रुला क्षि इय ता जानि नाडू द विवेचना रुहिते॒

जेन आशार नाय किजु वाञ्छ बटे किन्तु पर्वत
 हइते वयोस्थिके एवं कृष्णा पर्वत पुरा
 एवं कृष्णा नीलोकरे पुर्वमें माशीह
 कृष्णाकृष्णा उनेव दिवेचना प्राप्ति करे
 करे। इहाते दुर्घायाम ददाति पर्वतके
 ऊपर रुद्रिया आशाके वरन रुद्रे अत्यन्त
 इहाय एकत्रि उपाय रुद्रिते हइवेकु पर्वते
 विकु लोके उभित हइया नारायन महित
 आलां भगुष रुद्रन हइल उद्गतरे
 निवेदन रुद्रिलन पुर्जो आमि दारित्यागी ताहा
 अवगत आजेन किन्तु राजा अमृदीमर रुना
 शीघ्रतीर मृप्त दण्ड रुद्रिया योहित आर
 दिर्यावलम्बन हउते पारे ना आमि तियम
 उन्हे हइलाय मैरे रुना विवाह रुद्रिव भयत
 रामना हइयाजे एवं पर्वत मूति ओ
 मैरेहते आश्रा दूषे जन रुला मै शाने
 पाइव राजार पन रुना मैचावीन पाहाके

ବନ୍ଦ କରିବେକୁ ତାହାକେ ମସ୍ତକାନ୍ତ କରିବେକୁ ।
 ତାହାତେ ଆମି ବିବେଚନା କରିଥାଏଇ ପରିଵର୍ତ୍ତ
 ପୁରୀ ପରିବର୍ତ୍ତ କରିବାନ ଆମି ବୁଝା ପରିବର୍ତ୍ତ କୁଣ୍ଡମିତ
 ଅତେବ ଆମାକେ କରାଇଛି ବନ୍ଦ କରେ ଓ ପାଇଁ
 ସଂତୋଷ କରିବେକୁ ଇଷ୍ଟ ମିଳି ଇଷ୍ଟେ ତାର ଆଜ୍ଞା
 କରନ୍ତି କରନ୍ତି ଯେତ କଲା ପରିବର୍ତ୍ତର ମୁଖ ଦେଖେ
 ସାମାଜିକ ଯୁଧେର ନ୍ୟାୟ । ଦିଲ୍ଲି ଟଲିଲେନ ଉପାସ୍କୁ
 ଏହି ବନ୍ଦପୁଣ୍ଡି ଇଷ୍ଟେ ଆଶ୍ରମକ୍ଷେତ୍ରେ ପୁରୀନ
 କରିଲେନ । ପରିବର୍ତ୍ତ ବିବେଚନା କରିବେଳେ ରାଜୀର
 ଅନୁଯାୟି ଆମରା କଲ୍ୟ ପୁଣ୍ଡକାଳେ ମେ ମୁଖେ
 ଯାଇବ ତାହାତେ କି ହବେ ନାରଦ ରହାଇନା । ଆମି
 ତାହାର ଶତାଂଶେର ତୁଳ୍ୟ ନହିଁ ତାହାକେ ତ୍ୟାଗ
 କରିଯା ଆମାକେ କୋନ କିମ୍ବା ବନ୍ଦ କରିବେକୁ
 ଅତେବ ଇହାର ଓ ପାଇଁ ନାରାୟନ ବିନା ଦେଖି ନା ।
 ଏହିଶତ ଭାବିତେଛିଲେନ ଉଥିନ ନାରଦ କରିଥାଏ
 ଯାନ ପରିବର୍ତ୍ତ କରିଲେନ ନାରଦ ତୁମି ଏହି ମାନେ
 କ୍ଷବ କାଳ ତିଷ୍ଠ ଆମରା ଏକଟା ନିବେଦନ ଅପେକ୍ଷା

ଆଜେ ତାହାର ପୁତ୍ରଙ୍କ କୁରିଯା ଆମି । ପଞ୍ଚତ
ଓ ମେଇ ଯତ ପୁତ୍ରଙ୍କ ସାକ୍ଷାତ ହଇଯା ଅଶ୍ଵ
ନିବେଦନ କରିଲେ ପୁତ୍ରଙ୍କ ଏହିୟ ଯତ ହଇଯାଏ
ଇହାତେ ଓପାଇଁ କେବଳ ଆମିନି ଆଜୀବନ
କଳ୍ୟ ଯେନ କଣ୍ଠ ନାବଦେର ମୁଖେ ଦେଖେ ଭଲ୍ଲକେବ
ମୁଖେର ନ୍ୟାୟ । ବିଷ୍ଣୁ ସଲିଲେନ ଉଥାକୁ ।
ଏହି ଯତେ ଦୂଇ ଜନ ମେ ଦିବମଗତ କରିଯା
ପଞ୍ଚଦିନ ପୁତ୍ରଙ୍କଙ୍କାଲେ ପାତଃମୁନାଦି ମଧ୍ୟାର୍ପତି
କୁରିଯା ଶୁଦ୍ଧବସ୍ତ୍ର ପରିଦୀନ କରିଲେନ ଗର୍ଭା
ମୃତ୍ୟୁକ୍ଷାର ତିଲକ କରିଲେନ ଶୁଦ୍ଧାଚାରୀ ଓ ତରିଯ
ବନ୍ଦ୍ର ଯଦ୍ୟ କର ନିରିଷ୍ଟ କୁରିଯା ରାଜୀ ପୁରୀତେ
ଯାଇଯା ଓପରିତ ହେଲେ ରାଜୀ କଣ୍ଠକେ
ବନ୍ଦ୍ରାନକ୍ଷାଯାଦି ଜ୍ଞାନିତା କରିଯା ଚତୁର୍ଦେଶୀ
ରୋହନେ ମୁନି ରାଜେବଦେଶ ମନୁଷ୍ୟ ଓ ପଦ୍ଧିତ
କରିଲେନ କଣ୍ଠ ଦେଖେ ଏକ ଜନ ଭଲ୍ଲକୁ ଆର
ଜନ ବାନର । କଣ୍ଠ ଇହାର କିନ୍ତୁ ବିବେଚନା କରିଯା
ପାଇଁ ନା ଭାବିତେ ଲାଗିଲେନ ପିତା କହିଲେନ

नारद शूनि आरु पवर्त शूनि आगमन
 हैयाजे इहारा केटो ताहारा कोपाय
 गोलेन इहा भाविया मृक्त इया दाओइल
 मृक्तले देप्ते शून्य हैते एक जन द्वितीय
 दृप्तिराहे बायु गतिते आमिया खनाड़ि इस्तु
 दीड़न लरिया निया पूनर्वर्ति उर्क्केगति करिल
 एवं तजि अठाते इहाकार शूद्र हैल
 नारद शूनि ओ पवर्त शूनि शहाकोटि पूज
 लित इया द्वितीयने शून्ये अमृषन करिया
 वैद्युप्त यैया नाहायनेर आक्षात् शान
 दिल कहिल पूजो शुन आमारदेर एहै
 पतित इयाजे कोन धेटो आमारदेर एषत
 शनकुमार दिल इहा आरु काहार मार्दि हय
 ताहि देवता बेटोराइ करियाजे के कहिल
 हिष्प आनितु पाँडुलांग ना ताल एहै
 कहितेजि घंटि आमरण दुम्भन है उबे ये
 देवता इहा करियाजे मे नंदयानि पूज

ଶୁଣକ ଏବଂ ଯେତେ ରାମ୍ଭମ ଦୃଷ୍ଟି କରିଲ
ତାହାର ସ୍ତ୍ରୀ ରାମ୍ଭମେ ହେବ କରିବେ ମେ ଆଜ୍ଞା
ବିମୃତି ହଇୟା ପୂର୍ଣ୍ଣବିତ୍ତ ଜନ୍ମ ଲଭକ । ଅତି
ଅମ୍ଭାତ ଶୁନିଯା ବିକ୍ଷୁ କହିଲେନ ଏ କି କମ୍ଭ
କରିଲା । ଅଶ୍ଵରୀଶ୍ଵର କନ୍ଯା ଶୀଘ୍ରତ୍ବୀ ଲଙ୍ଘି
ଅବତାର ହଇୟା ଛିଲେନ ତାହାଙ୍କେ ଆମ୍ଭ
ଆନିଯାଛି ଅତେବେ ଏଥିନ କି ହଇବେକ । ନାରୀଦ
କହିଲେନ ତାବେ କେତ ଆପନି ପୂର୍ବେ କହିଲା
ନା ଯାହା ଶୁଣକ ଆଶ୍ଵରୀଦେର ଶୋଭା ଅନ୍ୟଥା
ହଇବେ ନା ଭୋଗୀର ଆବଶ୍ୟକ ଆଚେ ରାମ୍ କୁର୍ମ
ଆଜ୍ଞା ବିମୃତି ହଇୟା ରାଜୀ ଦଶରଥେର ଗୃହେ
ଜନ୍ମ ଲଈବାର ତାହାର ବିଦରଳ ଦୌଳିକୁ
ରାମ୍ୟାଯନେ ସାହଳ୍ୟ ଆଚେ ଆବଶ୍ୟକ ହୟ ଦୃଷ୍ଟି
କରିବା । ଇତି ।—

ওঁক পুতিপালক লম্বুকে ।—

অনন্তগতিক পৌষনীয়স্য পরম শুভা
শিষ্যঃ । রাশ্যঃ সন্ত নিবেদনঞ্চ দিশ্মেষঃ ।

মহাশয়ের পত্র পাইয়া সমাচার অবগত
হইলাম যে দিষ্ট লিপিযোজন তাহা
বিমূর্তি নাই একান্ত চেষ্টায় আজি সুসন্ধিতা
হইলেই সমাচার লিপিব মে জন্য ভাবিত
নহিবেন । শীর্ণত রাজা মহাশয় আদ্য পাঠ
দিত্ম হইল এখানে পৌশিযোজন রাওয়াম্বৰ
নিমিত্ত পুনরুন্ন ব্যাস্ত করিতেছেন তাহার
ক্ষেত্রে হরিব দৈর্ঘ্য করিতে পারিনাই মহাশয়ের
স্মৰণ যে কৃকৃ টোকা পাওলা কাঁচে তাহা
যদি এইক্ষণে দ্বিতো পাঠেন তবে দৃঢ়ে
পুনর্বাপ্ত হয় কিম্বা যদিতু মহাশয় রাজা
মহাশয়কে কহিয়া রাখিতে পাঠেন তবে

प्रथम तो दिले इहेते पाठ्य उहाँ तहिले
 शुतोष्टु रङ्गु छमि बज्जकु दिते हय अउपर
 अवदीन पूर्वकु विहित आज्ञा इहेवेकु ।
 महाश्मयेर दैवाहिकु गोडकपूरेर पूँग्यु
 मर्दाव्यक्ष इहेग्राज्ञे ताहाते महाश्मयेर
 दिग्गेर पूहे एक जन लोकु पुतिओलन
 इहेवेकु आशादुदिग्गेर अनेकु पदि मेमाने
 पाठ्य तवे प्रानाथिकु यहिवेन तिनि
 नेष्ठा पड़ार विषयाते अयोग्य नहेत
 पदि अनुग्रह पूर्वकु उहाँके गोडकपूर
 पाठ्यान तवे आशादुदिग्गेर मण्डानुकु
 विस्ताहित ओर्हारु हय अविक कि निवेदन
 विधिर । पुतिओलनेर ताँरु आद्योपान्त
 उहाते पुतिओल्य हहे उहाँ करिवेन आशारु
 दिग्गेर बाटीर मरुले प्रथम केटा कोपाय
 उहाँर विल्लेर किन्तु अनेकु दिवमावसि

आनित्तु पारि ताइ उहाँदु विशेष नियमित
 आज्ञा हइवेकु आपलक्ष्मी ओदेशे क्रेतो
 विभूति हइयागिल ताहा एवं कि पुकार
 हहेयाछे ताहा जात नाहु यदि ज्ञानुभव लोन
 केह ओ छाने गिया थाहेल उवे मर्माचार
 लियवेन एथान हहेत ताहार नियित
 आनुकूला लिपि करिया पाठाइर उवे आर
 कोन ओपात हहेते पारिवे ना पुजा क्रेतो
 कोनकये दृष्टप ना नाय सहस्र थाळे एत
 छेतो रायगने करिवेन म० नुडि दग्दीश्वरी
 पुजार ममय अति मन्त्रकटि हइल ताहार
 बायुद्यमनेह मूर्तिकृ एथान हहेते किछु
 हहेत पारे एत मारिया ताइ बायकृ
 अस्त्रायनउ ना हइले ओ नित्तान्ति क्रोतेर
 विष्णु यदितु यहाश्चय किं च मुमार अनिकार
 करेन उवे कोन यत पुकारे जल विलाति
 द्विया हय एवं वाटीते पाहे मतुवा एथाने

ତେହି ପ୍ରବାର ପୁଜା ଦେଖିବ । ଶ୍ରୀଷ୍ଟ ଗନ୍ଧାରୀର ବାବୁ
ଏଣ୍ ପେନ୍ ଲିପିଯାଂଜନ ଜୋଟି ଦାଦା ମହାଶୟଙ୍କ
ତାହାତେ ଲିପିଯାଂଜନ ଆମ୍ବାର ଦିଗ୍ବୀର ବାଟୀତେ
ପ୍ରତିଶୀର କଠାଯ ହିୟାଛେ କେବଳ ଏଥାନକାଳୀ
ଆଦ୍ୟବରମ୍ଭିତେ ତାହାତେ ଆମ୍ବାର ଆଦ୍ୟବରମ୍ଭୀ
କେବଳ ମହାଶୟ ଆହୁ କାହାକୁ କୁଥାନ ଡାଢ଼ି
ଗୁମ୍ଭ କହି ତାଇ ଏବଂ କରିତେ ସମନ୍ତାଓ ତାଇ
ଅତ୍ୟବ ଘାହାତେ ଲଞ୍ଚା ନା ପାଇ ଏଯତ ଆଜା
ହିୟେବେଳେ ଆମ୍ବାର ଲଞ୍ଚା ହିୟେଲେ ମହାଶୟରେ
ସାଥେଷ ମହିମାର ହାନି । କିମ୍ବଦିବ୍ରଂ ନିବେଦନ
ଶିତି ।—

ମର୍ମାନ ଦଶୀଶିକ୍ଷଣ ମର୍ମାନକେ ।—

ନମର୍କାରୀ ନିବେଦନକୁ ବିଶେଷଃ ଆମନାହୁ
ମର୍ମିଲାଦି ମତତ କାମନୀୟ ତାହାତେ ଅତ୍ରାତକ
ପରଂ ।—————

श्रुति पाइया। मरुल मर्याडा दिनिति हैलाई
 शुभप्रत्याह हैया तिन मासमार कर हनुगत
 हैयाके, भूदाय ठालात हैवेक भाल
 उहाते आङ्गदित हैलाई। आदालाते ब्रह्मिर
 दाओयाते आग्नेयदिगेव नाये ये उड्हारि
 हैयाछिल उहाते ओउर दिते हैवेक
 उहाते एहे यत लिखिया दिवेन पूर्वेव
 ब्रह्मि आग्नारदिगेव पुजार शामित छिल
 परे दसर करक पतित हैयाछिल इति
 यद्यो परगने दुलियापूरवे पुत्राया मेहे
 ब्रह्मि बन राहिते पुरुष हैले आग्नेर
 दिगेव मे रम्याडी लोक दारी हैया उहार
 दिगेके बाबुन दरियाछिल मे मरुल लोक
 दुलियापूरवे नायेवेर निवट पाइया निवेदन
 रुहिल, नायेवेर एक ज्ञान रम्याडी पाठाइया
 छिलेत रम्याडी अ आग्नारदिगेव रम्याडी
 मुहे जन प्रकृत हैया मेहे ब्रह्मिते पाइया मुहे

असिक्कारेर पुरान प्राचीन पुजाएँ एवं आत्मा
द्वालेर ये मक्कल लोक ए हमि पूर्वोत्तोत
कुटियाँ जिल में मक्कल लोक आताइया जात
हैलाताहोरा मक्कले कुहिल ए हमि दुलिया
पूर्वेर नहे। आमारदेर असिक्कार पर्गाने
माहात्म्येर शक्करपुर ग्राम्येर इहाते बासिन्दे
कुम्ठारी नियन्ते हइया कुहिलेर पुजा लोके
वन काटिते विस्तुत परिष्कार कुरियाँजे
एवं वापि व्याप्त आनेक इहाँजे एই
मक्कल पुजार जोति पाके पाँठ दृश्य कुरु
शुनोरु कथा कहा गियाँजिल भोजराँजे मे
रुपि शिर राखिया ए हमि इहारदिग्गजे
जोति कुटिते देओ ए कथा आमारदिग्गजे
कुम्ठारी सूक्कार कुटिया कुहिल भाल (जात
कुरिते दिव क्षिति लेखापड़ा कुटिया
आमाके दिउक डाहाते दुलियानुरूप
कुम्ठारी कुहिलेर पक्कुरु लइया लिखिया

दिवेक फिल्ह पुजारा आशार प्रभुके
 विदित हरणा परे लिपिया दिवेक । एই
 काम हैया ममनु उठिया आइल परे मे
 मनल त्रुजार माने करम्भीकार लिपि ठाहिले
 दिव२ एই कथा बले लिपिया देय ना एই
 यत एक रूमर गोत इल उथाच प्रभुकलहया
 करम्भीकार लिपि देय ना पर रूमर प्रभुक
 लहया रहम्भीकार लिपि ना दिया छम्य जोत
 करिते गोले मे मनल त्रुजाके बाबन
 रुप्रिया उठाइया दिया निजातिकारेर पुजार
 दिवेक जोत करिते दियाँजि त्रुलिप्यापुर
 प्रदग्नवाय असिकारी आदानते लालिम
 करिया लदान अबाबे लिपियाँजे उहार
 प्रग्नवाय छम्य ताहार पुजार जोत उठाइया
 बदपन करियाँजि इहा कि प्रुकारे हम मे
 मनल लोक उकालीन उथाय छिल ताहार
 दिग्निरे मासी मानिबेन ताहा एन्द्र पाठाइ

तेजिं एहे यत्ते हमजवाब ओ साक्षीरु तांग
निपिया - दिवेन अपातकाऱ्ह प्रवारु गितिकृ
आरु अमाठारु विस्तारित कृदिया लिपिदेन।
कृष्णविकृ निवेदं शिति ।—

गुण्डके एंगुण्डकुला सद्गुण्डे ।—

पंचम नवांनवाद श्रावुत अमुकृ पंचम
कलांनवादेषु ।—

तोयारिदिगोर मरीनादि समाठारु आनेक
दिवस पाहि नाहि ताहातेहे भावित आलि
अमाठारु विशेष लिपिवा । छिरवाल हइल
तोयारु खुल्लतात गंगा पूर्णिवीते आगिमन
हेतु अमाठारु पुन्ह फरियादिलेन उथल
ताहारु विशेषन पूर्ण इहाते आरेन नाहि ।

एथन् आनन्दिष्वरकं लिखितेऽनि ताहाके
 द्विया समाचारं लिखिता । एकं काले
 यहादेव दिक्षुरु भास्कात् दीना अत्र गान
 कृतिते यहाविष्टु यहादेवेव गाने
 आप्यादित इतेऽन्ये यहानन्दे द्रुव इतिलेन
 मेहे पुरवेर नाम इतिलेन गता द्रुमा परम
 यत्तेऽते मेहे अल कृष्णन् कृतिलेन
 शार्द्धे वर्ते तिति यहाविष्टु शक्ति शक्तिरूपा
 द्रुवग्नी पतितगैवती तिति द्रुमा लोकेर
 नमण्डुते जाजेन ताहा अन्य देह जाने
 ना दिक्षुतिना । पृथिवीते मगर राजा महादेव
 पराक्रम दासे यहादाता यहा पूनावान
 ताहादि पर्शेर भीया नाहि ताहादि भाटि
 यहमुपूर्वा । राजा विमाचार कार्य अश्वमेद
 यज्ञ आरम्भ कृतिलेन द्रुती इत्या अश्व
 जातिले विष्टुर । अन्यै लोक आननार भाटि
 यहमुपूर्व अश्वर रक्षापर्यं लिघ्नु कृतिलेन

ଆମିନି ଇନ୍ଦ୍ର ଆଶ୍ଵାହନ କୁରିଯା ପାତାଳ ପୁରୀତେ
କୁଣିଲ ମନ୍ଦିରଟେ ବନ୍ଦ କୁରିଯା ରାଧିଲେନ ।
ଏଥାନେ ମଣିର ପୁଣ୍ୟକ୍ଷେତ୍ର ସୈନ୍ୟ ମାଘକୁ ମଧ୍ୟେ
ପୂର୍ବିବୋର ଢତୁଦ୍ଵିରୀ ବେଚ୍ଛନ ଘୋଟକେବ ଅନୁମଜ୍ଜାନ
କୁରିଯା ଛିଲେନ ଓଦେଶ କୋପୀତ ପାନ ନା ଇହା
ତେଇ ବିନ୍ଦୁତ କୃତ କ୍ଷାଙ୍ଗ ଗାତ ହିତେଜେ । ଇତି
ମଧ୍ୟ ନାରଦ ଯହମୁନି ନରଲୋକ ଭୁବନେ
ଛିଲେନ ମଣିର ପୁଣ୍ୟଦିଗଙ୍କେ କହିଲେନ ତୋଯାର
ଦେର ବରିତ ଘୋଡ଼ା ଚୋରେ ନିଯା ପାତାଳ ପୁରୀତେ
ରାଧିଯାଜେ । ଇହା ଶୁଣିଯା ମଣିର ପୁଣ୍ୟର ମେଇ
ଥାନେ ବମୁଦୀ ଫତନ କୁରିଯା ପାତାଳ ପୁରେଶ
କୁଣିଲ ମେଇ ପାତାଳ ନାମ ହଇଲ ମଣିର ତାହାର
ଅପ' ଏହି ମହିରେଯଦେର କୃତ ମାଣିର । ମଣିର
ପୁଣ୍ୟରୀ ପାତାଳ ପୁରେଶ କୁରିଯା ଦେଖେ ଏହି
ଥାନେ ତାହାରଦେର ସୈନ୍ୟକ ବନ୍ଦ ଆଜେ ଏହି
ଏହି ଜନ ତାହାର ନିକଟେ ବମ୍ବିଯା ଉପମ୍ଯା

करितेछे अग्रे पूर्वरा अनुशासन करिल
 एই बेटों ठोड़े आशावदेह इय ठुरि करिया
 आनियांचे अपन आशावदेह आशन आउ
 हईया उत्तु उपमा आवश्यक रुपियांचे अउव
 इहाके पूर्वमे २०.इतु रुद्र। से उपम्भी
 कर्त्तव्य शहायुनि उपम्भाते आजेन उद्दारा
 विवेचना ना करिया ठोर भ्रमे कर्त्तव्यके
 उद्दारा आवश्यक रुपिल परे कर्त्तव्यले देत्रा
 नले उद्दारा घाटि महसु पूर्ण ओ महसु
 मेला उम्म इया गेल अउव घोडार
 उद्देश इल ना 'घोडा व्यतिरेक घज पूर्ण'
 इय ना मगरेर आव एक पूर्ण आउ दीमिर्क
 मेई याइरा अद्वेषन करिते नावदोने
 देशे पांडाल पूर्वेश करिया आपन घोडा
 कर्त्तव्यपूर्ये पाइल एव० वर्षत पूर्णार सुर
 करियां कर्त्तव्य मूलिके यमीभूत कैरिल उंच
 हईया मूलि कहिलेन तोर्यार छुआरा पूर्णारा

ପ୍ରସୁତ ଆଶୀର୍ବାଦକେଣିନଲେ ଭମ୍ଭ ଇହିଯା ଗିର୍ଜାଫୁ
 ବୁଝି କୋଣେ ତାହାରଦେର ଆବିଗତି ଇହିଯାଜ
 ତାହାରଦେର ଶୁଭିର ଓପାଇ ଆରୁ ନାହିଁ କେବଳ
 ଧାରିତ ପାଦନୀ ଗଲି । ତିନି ବୁଝିଲୋକେ ଆଜେନ
 ତାହାକେ ଆନିତେ ପାଇଛ ତବେ ଇହାରଦେର
 ଓଦ୍‌ବାହ ଇହିଦେବ ନତୁରା ଆରୁ ଓପାଇ ନାହିଁ ।
 ତିନି ଇହା ଶୁନିଯା ଘୋଡ଼ା ଲଇଯା ଯାଇଯା ଯକ୍ଷ
 ପୂନ୍ କୁରିଲେନ ପରେ ଗଲିଆ ଆନନ୍ଦନ କ୍ଷେତ୍ରୀ
 ଧ୍ୟାନ୍ ଏବଂ କୁଣ୍ଡଲେର ଆଗେ ପୁରୁଷ କୁରିଲେ
 ସଞ୍ଚିକ ତାହାରଦେର ପୂରୋହିତ ତିନି ସଲିଲେନ
 ତବେ ବୁଝାର ପୁରୁଷତା ବ୍ୟାତିରେକ କାର୍ଯ୍ୟ ମିଳି
 ଇତେ ପାଇଁ ନା ଅତ୍ୟବ ଆୟି ଡୋଯାକେ
 ବୁଝାର ଯତ୍ତ ପୁରୁଷ କରି ତୁମ୍ଭ ହିମାଜିଯ
 ପଥର୍ଦାତ ଯାଇଯା ବୁଝାର ମାତ୍ରନାଥ ତୁମ୍ଭା
 କରଇ ତିନି ମେହେ ଯତ କରିତେଇ ପୁନି ତାଗ
 କୁରିଲେନ କାର୍ଯ୍ୟ ମିଳି ଇଲ ନା ତାହାର ପୁଅ
 ଦାଜା ତିନି ଓ ମେହେ ଯତେ ପୁନି ତାଗ କୁରିଲେନ

अग्निर्दि निर्वाणे हईलेन महाराजा रुक्षा पांय
 ना केवल दूषि दैवता राजियात्र शेष। ममस्तु
 यान्ति कारन दैवतानी इहैल दूषि राजीके वल
 ताहारा दूषि जन मरि दखक ताहाते एक
 जन गार्डरजी इया पूण्य पूमह इहैवे सेहे
 पूण्य ममस्तु रुक्षा कुटिवेक सेहे इहैवे कुलेर
 दीपक एक याते दूषि राजी हस्ते कुनिष्ठ राजी
 गार्डरजी इहैल दश्म याशे पूर्व चन्द्रेर
 नायि मूदरं पूण्य अन्तिले दैवतानी जयै
 कारु इहैल एवं रालकेर ओपर पूम वृष्टि
 इहैल मर्वद्ध मकलेहे इर्षान्तिकरन पूण्येर
 आत कम्य दिविशाते करिया आशोदपूजा
 पूण्येर प्रतिपालन कारते। महाराजा
 भागीरुप शब्दान्वेतेहे उपर इहैलेन
 महादलवान ओगुतपा प्रजार प्रतिपालन
 दिवि याते करने पठे शुनिलेन ताहार
 पूरुद्ध पूरुषेहा पाजाले कुपिलाश्चये दुर्लभ

ପାପେ ଡମ୍ବ ହେଯା କୁହିଆଜେନ ତାହାରେ
 କିମ୍ବାଶାନ ହେଯା ପିତୃଲୋକେର ତୁଳାଯଥି
 ମିଠେସ୍ତ ହେଲେନ ଶୁଣିଲେନ ତାହାର ପିତା ଓ
 ପିତାମହ ପିତୃଲୋକୁ ଅନ୍ଧାର ଜନ୍ୟ ଉପର୍ମାୟ
 ପୁନଃ ତୀଗ କରିଯାଜେନ କିନ୍ତୁ କାର୍ଯ୍ୟ ମିଳି
 କହିତେ ପାଇନ ନାହିଁ ଭଗୀରଥ ଦିଷ୍ଟେଚନା
 କରିଲେନ ତବେ ତାହାରଦେବେ ସେ ଗାଁତି ହେଯାଜେ
 ଆମ୍ବାର ଓ ମେହି ଗାଁତି ତବେ ଦେବତା ଘାହା
 କୁବନ । ତିନି ଓ ମେହି ଶତ ହିମାଲୟ ପାଇଯା ଯହା
 ଉପର୍ମାୟ କରିଯା ବୁଦ୍ଧାଙ୍କେ ତୁମ୍ଭ କରିଯା ଗନ୍ଧିର
 ଅନୁମର୍ଜନ ତାହାର ମାନେ ପାଇଲେନ । ବୁଦ୍ଧା
 କହିଲେନ କହ ଗନ୍ଧିନାୟ ଏଥିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆମ୍ବାଙ୍କ
 ଶୁବନ ପୁରିଷ୍ଠ ହୁ ନାହିଁ ଆମି ତାହାର ଉଦ୍ଧତ
 କି ଆନିବ ତୁମ୍ଭ ପାଇଯା ଦିଶୁର ଉପର୍ମାୟ
 କରିଯା ତାହାଙ୍କେ ମିଳି କରିବ ତାହାର ପୁମମତୀ
 ହେଲେ ମରବ ମିଳି ହେବେକ ନ ଭୂରା ଈହାର
 ଆର ଓପୀୟ ନାହିଁ । ଉଦ୍ଦତ୍ତରେ ଭଗୀରଥ ବୁଦ୍ଧାର

କାନ୍ତାଟେ ମୁହଁ ରୁକ୍ଷ ଅମୀଶୀଳ ଉପମା
 କୁଣ୍ଡିଲେ ବିକୁ ପୁନମ ଇଇୟା ବର ଦାଳେ ପଞ୍ଚମାଳ
 ଇଇୟିଲେ ଭଗୀରଥ ଦିଦିଯାତେ କୁତି କରିଯା କହି
 ଲେନ ପୁତ୍ର ପିତ୍ରାନ ଓଛାରାଏଁ ପତିତଭାବନୀ
 କୁବଯାରୀ ଗନ୍ଧା ପୁଣି ବର ଆଜା ଇତ୍ତଙ୍କ । ବିକୁ
 କହିଲେନ ଉପାସୁ କିନ୍ତୁ ଗନ୍ଧା ବୁଝାଲୋକେ
 ଆଜେନ ଆମି ତୁମ ପାଇୟା ତୋମାକେ ଗନ୍ଧା
 ପୁନାଳ କରିବ ଭାବନା ନାହିଁ ତୁମି ମିର ଥାରହ ।
 ଥରେ ବିକୁ ଭଗୀରଥଙ୍କେ ମହିତ ଲଇୟା ଦୁର୍କ
 ଲୋକେ ପାଇୟା ଏକ କାଳୀମ ଯାଇୟା କରିଯା
 ବୁଝାଇପାର ଜଳ ହରନ କରିଲେନ ଦୁର୍କା ବିଷୁର
 ଆଶମଳେ କୋଟିୟ ପୁନାମ କରିଯା ରତ୍ନମଳ
 ସମିତି ଦିଲେନ ପାଦ ଦେଖନେର ଜଳ ପାନ ନା
 ଇହାତେ ଅତିବ୍ୟାକୁ ଇଇୟା ଦୁର୍କାଲୋକ ରିକୁ
 ଲୋକ ଅଶ୍ଵକ ମର୍ଦ୍ଦ ଓ ପୃଥିବୀ ଓ ନାତାଳ
 କ୍ରିତୁରନ ଭୂମଳ କରିଲେନ କୋପାଏ ଜଳ ପାଇ
 ଲେନ ନା ଅତି ଅପରାଧ କି କରିବେନ ଭାବିଯା

पीन ना सर्वत्र रुठेन करिया। पुनर्वर्तार विष
 मन्मूषे आसिया। दोआईका मात्र मृति होने
 आशार क्षमण्डुतेन। अब आज। उद्दे
 शायि जलात्मक एवं व्याप्ति हो क्षमण्डु
 समये मेहे महावारि आनन्दन करिया। विषु
 शुगप्त विंत करिलेन ताहाते तिन दीरा
 बेगवत्ती इतेलक एक दीरा मृगे मिति करि
 लेन ताहार नाम मन्दाकिनी इतेल तिनि मृग
 गंगा द्वितीय पाताले ताहार नाम जोगदत्ती
 तिनि पातालगंगा तृतीय दीरा भगीरथक
 पुदान करिलेन एहे महावस्तु पतितोद्धारिवी
 पुरमयी तुमि पृथिवीते लहेया। याओ जोशार
 पूर्व पूर्व उद्धार करह प्रहृष्ट यादृ पीनो
 खेहार भारदेवै योङ्क पद पीडिवेक किञ्च
 तुमि क्षिति लहेया। याइवा खेहार बेग
 दीरन करित्ते पृथिवी यमातल पुमान कहिवेन
 प्रेतन इतेले पृथिवी यमातल पुमान कहिवेन

जाव मृक्षि, नाश होवे बेहार देगो दीर्घन
 कहें एषत आरु केह नाई केवल यहारेव
 अत्र त्रुयि पाइया शिवायाविना करह ताहार
 पुमन्नता बातिरूक इहार उपाय नाई । भगीरथ
 निकनायु कुत्तान इत्तेव तासाँडे नियुक्त
 इयाताहारे पुमन छरिलेन । यहारेव
 हिमालय पर्वते बसिया मन्त्रके गंगार देगो
 दीर्घन करिया यत इयापा गोलेन मन्त्रक
 इत्तेता जागी करिते चाहेन ना एवं गंगा
 छिरकालादर्ति शिर जटार यदेय त्रुयन
 कहेन बाहिर इत्तेपप पान ना । गंगा एष
 समय दिकुर पादोदरु इलेन इहाते
 ताहारे शोच्चे बल दिकु पादोदुवा गंगा ।
 भगीरथ यहारेव साविना करिले आश्च
 तोष यहारर पुमन इयां आरार उठा
 दियार करिया दिलेन देइ जिम्बु भगीरथ
 बाहिर इयां हिमालये पत्तिले पर्वत

ইইতে বাহির ইওনের পথ না পাওনে উগীরথ
 নিষ্ঠপায় ইয়ে কান্দিতে লাগিলেন। গঙ্গা
 আপনি তাহাকে রহিলেন পুণ্য হিমালয়
 বিদ্রোহ করে এতে বাস্তি আন্ত কেহ নাই
 কেবল ঐরাবত অতএব তুমি ইন্দ্রের স্তুত
 করহ উদ্যাতিরেক ওপায় নাই। উগীরথ
 গঙ্গার আজ্ঞায় ইন্দ্রের স্তুত করিলে মূর্পতি
 সদয় ইয়ে ঐরাবত করনক পবর্ত বিদ্রো
 করিয়া দিলে বেগ বাহির ইয়ে পুরু
 মুখ্য প্রভুরেণৈ যাইতেছিলেন। ইহাতে
 উগীরথ কহিল মাতা আমি শুনিয়াজি আমার
 পিতৃ লোক দক্ষিণ। ইহা শুনিয়া বেগ পুরু
 যাইতেছিলেন তাহারি কিঞ্চিত রাজমহলের
 কাছে দিয়া দক্ষিণ মুখ্য বেগ হতী ইলেন
 বড় বাড়া পুরু দেশে গোল তাহার নাম
 ইল পদ্মা এ দিগে বেগ হাতিয়াগতি পর্যন্ত

ଆହିଲେ ଗନ୍ଧୀ ତିକ୍କାମା କରିଲେନ ଡାକ୍ତିରୀ
ଡେମୋର ନିଷ୍ଠୁଳୋକ ହୋଇଥିଯି । ମେ ସଲିଲ
ଯାତିଃ ଆମି ଶୁନିଥିଲି ଏହି ଦିଗ୍ମେ ନିଷ୍ଠୟ
ବଲିତେ ପାରିଲା ଇହାତେ ଗନ୍ଧୀ ମେହି ହୁଲେ
ଏବେ ଶତ ହିଂଦୀ ହୈଯା ଅବସର କରିବୁ
ଅଛନ୍ତି ମାଣିରେ ପଢ଼ିବା ଅଗିର ଫଳିତ ଯାତ
ଦିଯା ମାତାଳ ପୁରୁଷ କରିଯା ମଣିର ବଳ୍ଲ
ଓହାର କରିଲେନ ଡାହାରା ମର୍ଯ୍ୟାନ ଉପାରେହେ
ମୁଦ୍ରା ଗତି କଢ଼ିଲ ଡାକ୍ତିରୀ ଆନିତା ଗନ୍ଧୀ
ଇହାତେ ଡାହାର ନାମ ହଇଲ ଡାକ୍ତିରୀବୀ । ଗନ୍ଧୀଙ୍କ
ପୂର୍ବିମୀତେ ଆମିମନ ପୁସତି ଏହି ଜାନିବା । ଇତି ।

ମର୍ଯ୍ୟାନ ମର୍ଯ୍ୟାନକେ ।—

କରୀର ଶିଖିବଚନ୍ଦ୍ର ବାସୋନିଯକ୍ଷାରୀ ବହବୋ
ଶିଖଦରଙ୍କ ବିଶେଷତ । ଯାହାଶ୍ୟର ଯଦିଲାଦି

ଅମା ପୁର୍ଣ୍ଣା କହିତେଛି ଡାହାତେ ଅନ୍ଧ ଏହିଲ
ପରଂ ।

ଅମାଗତ ପଞ୍ଚ ପାଇୟା ଅମାତୀର ଜାତ
ହଇଲାମ । ଲିଖିଯାଇଲେ ଅମୁଳ ପଞ୍ଚଗନ୍ଧି
ପୁଜା ଲୋକ ଏବଂ ମର ରାଜମୁଖ ରକ୍ତ ପାଇତେ
ଆମାରଦିଗେର ପୁଭୁର ଅଧିକାରେ ପଲାଇୟା
ଆମିଯାଇଲେ ଡାହାର ହିମାବ ପାଠାଇତେଛି ଦୃଷ୍ଟି
କରିୟା ଦେଓସାଇୟା ଦିତେ ଲିଖନାନୁ ମାରେ ମେ
ଅରୁଳ ପୁଜାରଦିଗେକେ ଆନାଇୟା ଜାତ ହଇଲାମ
ଡାହାରା କହିଲେକୁ ଡାନୁଶାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆମ
ଶାମେର ନିଯମିତ ରାଜମୁଖ ଦିଯାଇଛେ ଆଖିନ
ଶାମେ ବର୍ଣ୍ଣା ହଇୟା ମନ୍ଦୁ ଶମ୍ଭୁ ଓ ଘରହାର
କୁବିୟା ଗିଯାଇଲେ ଏବଂ ବୃକ୍ଷାଦି ଶରିଯାଇଲେ
ଆମାରଦିଗେକେ ବନ୍ଦୋବନ୍ଦ କରିୟା କମି ଦିଲେ
ରାଜମୁଖ କିନ୍ତୁ କରିୟା ଦିତେ ପାଇତୀମ
ଡାହାତେ ଆପଣି ଉତ୍ତର କରିଲେନ ଅଧିକାରୀ
ଅଭି କମି ନା ଦିଲେ ଆମି କମି ଦିତେ

पांडि ना पर्ये पुंजारा कुहिलेक्ष्ये मरुल
 दृक्षादि मरियाजे मे मरुल आमारदिगेव
 अयारि घवी ताहा चांडिया दिले विक्क्या
 कुरियाँ रातिम्ब तिथ्येष्ये दिते पांडि ताहाओ
 पुंजारदिगेवे ना दिया मरुलावे विक्कि कुरियाँ
 लइयाजेन एवं रर्नारि पर पुंजारा मष्टपे ओ
 कुलाई ये बृथिते कुरियाँचिल ताहा रांडिया
 पलाइया आसियाजे ताहाओ विक्कि कुरियाँ
 लइयाजेन ए मरुल दुवो पुंजारा ये यत
 विक्किरु कृपा कुहे ताहा हिसाबे ओऱ्यामिल
 दिले त्रुंजाम्ब शेष हइया आरु अस्तिक हय।
 आनन्दारु कर्मठारीके जिर्यासा कुरियाँ
 मे मरुल कृपा किछुई ग्रुह्य करे ना कुहे
 इहारु किछुई आगि जात नहि। पुंजारा कुहे
 ये मरुल लोके किनियाजे ये कर्मठारी
 थांडिया विक्कि कुरियाजे एवं श्रीशम्भु
 पुरीन् लोके थांडिया मूला निष्पत्ति कुरिया

ଦିଯ়াଜে ମେ ମନ୍ତ୍ର ଲୋକ ବର୍ତ୍ତମାନ ଆଜିର
 ଆନନ୍ଦିଯା ଏକତ୍ର କରିଲାଗ ବିଚାର କରିଲେ
 ମନ୍ତ୍ରଟି ମତ୍ୟ ଆନିତେ ପାରିବେନ । ଏହଂ୍କାର ଭାବୁ
 ଯାମ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆପନଙ୍କର ହିମାବେ ସେ
 ଓହାମିନ ଦିଯାଜେନ ପୁଜାରୀ ସେ ମତ କହେ
 ତାହାତେ ହିଜୁ ଅନୈକ୍ଷ୍ୟ ହୁଏ । ଅତ୍ୟନ୍ତ ମନ୍ତ୍ରକ
 ଲୋକ ଓ ପୁଜା ସାହାତ ଶୁଣିବେ ଇହାତୁ ବିଚାର
 ହୁଏ ତବେ କି ମତ୍ୟ କିମିଥିବା ବୁଝିତେ ପାରି
 ଇହାର ସେ ହୁଏ ଲିଖିବେନ ତବେ ଏ ବିଷୟ ନିଷ୍ପତ୍ତି
 ହୁଇତେ ପାରିବେକ । ଆହୁ ଏହାନଙ୍କର ପୁଜା
 ଲୋକରେ ଫୌଜମୂର ନିଃଶ୍ଵର କରିଯାନ୍ତି ଦିଯା
 ଅମୃତ ପରଗାନ୍ତି ପାଇଯା ଗିର୍ବାଜେ ଭାବର
 ଦେଇ ବାହିର ହିମାଦ ମନ୍ତ୍ର ଲୋକ ଆନନ୍ଦକାର
 ନିକଟେ ପାଠୀଇବ ମେ ମନ୍ତ୍ର ପୁଜା ଲୋକଙ୍କେ
 ଆନନ୍ଦିଯା ଯୋହାବିଲା ଅବଗିତ ହେଯା ସେ ବାହିର
 ଆପନଙ୍କର ବିଚାର ମନୁତ ହୁଏ ଦେଇଯିବା
 ହିବେନ । ଆହୁ ଆପନଙ୍କର ପୁଜା ଲୋକ ଏଥାନ୍

କୁର୍ଦ୍ଦ ତମ ବୀଠିପାଇଁ ଜାହାର ରୁତିଛୁ ବକ୍ରି ଆମେ
ଦେଅୟିଥା ଦିବେନ । ଯାତ୍ରାତେ ଯଶ୍ଵରାମ
ମଧ୍ୟାର ଲିପିବେଳ ନିବେଦନ ବିଷୟିକ
ଶିତି ।—

ସନିବ ଢାକରଙ୍କେ ।—

ବିଜ୍ଞାନକ ବିଶେଷ ତୋଷାର କୁର୍ଦ୍ଦ ବୀଠିନ୍ଦ୍ରିୟ
ଜାହାତେ ଆତ୍ମ ସନ୍ତୋଷ ପଦଂ ।—

ଜାତି ହେଲାଯ ଧ୍ରୁଣିନେ ଯାନପୁରେର ଅନେକ
ତୋଷାର ପଦ୍ରେ ଗୁଣ୍ୟ ଏ ବ୍ୟକ୍ତି ପୁଜା ପଲାଉକ
ଇଟ୍ୟାଜେ ଏ ମର୍କଳ ଯଶ୍ଵର ପତ୍ରନ ନହିଲେ ଯାତ
ମୂର ହାନି ବିଚ୍ଛାରିତ ଜାତପର ଦୀନ୍ୟ ଓ ଢାକା
ହେଲେ ଦୁଃଖାତ୍ମକ ପାଇଁ ପତ୍ରନ ହେତେ ପାଇଁ କୌନ୍ସ
ଗୁଣ୍ୟ କୁତ ଦୀନ୍ୟ କୁତ ଢାକା ତାହାର ଏକଟେ
ଶର୍ଦ୍ଦ ଅନୁଶାନେ ବିବେଚନାମ୍ବାତେ କରିଯା ପାଠିଇବା
ତାହାର ଦୃଷ୍ଟ ବିବେଚନାମ୍ବାତେ ପାଠିନ ପାଇଦେବ ।

ग्रे वृ॒मर चेष्ठा॑ मात्रिय अविकृ पञ्चन ना॑
 कृतिते पारिले पञ्चात् पञ्चन हउन ताहा॑
 हइवेक । ये॒ ग्राम उजारदार ओ गाँति॑
 जया॑ ताहा॑र तागी॑वि सरकार हइते देओ
 नेह आवश्यक नाहि ताहारदिगीके॑ निराश॑
 क्षत्र दिया॑ यदि॑ एकात् मे॑ मकुल लोकेरु॑
 दिगीर तागी॑वि देवनेऱ मानित्य ना॑ थाक्के॑
 ताहे ताहारा॑ एपाई॑ आमिया॑ निवेदन॑
 कृतिले विवेचना॑ यते॑ येयत हय॑ कृता॑
 माइवेक । तुमि अपानकार॑ पञ्चनेर चेष्ठा॑
 पुनर्पाने कृतिवा॑ एपानकार॑ विश्वास तोयार॑
 प्रुति॑ विन्तुर॑ सरकारेर लाभ॑ कृतिते॑
 पारिले आर॑ बौद्धला॑ हइवेक । आर॑ मुविद॑
 पूरेर॑ मीया॑ लड्या॑ माहसेर॑ अविकारीर॑
 देर॑ विरोधि॑ हइयाछिल ताहा॑र निमित्त॑
 माहसेर॑ अविकारी॑ बद्धमाने॑ नालिम॑
 कृतियाछिल॑ मेथाने॑ ताहा॑रदिगीर॑ नालिम॑

तिमस्यि स हैया जिल पूनराये कोठ आँखिले
 नालिस रुकिया जिल मेखाने ओ ताहारा
 हारियाचे तिमस्यि पाओया गियाचे तुम्हि
 अथाने पुतीनै पुजा लोक ओ रुम्ठारी
 सघेड याइया से ब्रह्मिर ठजुळमीया देविया
 लइवा इहाते पुजा लोकेर ओ अदिक
 आळाद हैवेक से छाने पूर्वातुन पुजा घड
 आचे ताहारदिगीके निवंशेगी इहाते
 रुहिवा एवत विवाद आय इहावे ता। आर
 दूर्ण पांच घर पुजा ऐ छाने बमाइते पारह
 ताहार चेष्टा नितान्त एत्यान इहाया रुकिवा
 ताहाते वीता ओ टोका याहा जावण्यक हय
 दिते ताहा दिवा। तुम्हि घटीनै ग्रीष्मै
 याइया पुजा लोकेरदिगीके आश्वाम जन्मा
 इया रापिवा एवत इहाले पुजा लोक सहृद
 हैया बमति रुकिते पारे। शुनिते पाहे
 दम्भा उयाते पुजा लोक विदुत ताहार तुम्हि

किन्तु लिखते ना पर्दि एवं इय उद्दे दूष्ट ये
 अकृत लोक ताहारदिगेव अनुमकान
 करिया सर्वांत लिखिवा एपाने कर्ता
 पर्याणु जात करिया ताहारदिगेवे दशनापे
 लोक पाठीन याईवेण दूष्ट लोकेन नष्ट
 ना करिन आपनाके नष्ट इतेत इय राज
 कर्म्मर एवत् दीर्घा इत्यरवीने विहित
 करिवा क्षमित्वायति ।—

ठाकुर शनिवारके ।—

जाजाकारि शिवचन्द्र बरमोऽनशक्तारा
 निवेदनके विशेष । दायुजि यहाश्लेष
 मिर राज लक्ष्मी सर्वदा श्रान्तमाने
 पुर्वता करितेछि ताहाते ए परिजनेव
 श

तिर्ति पंड० छिरिमालरे आजा
 पन्नी पाइया शिंद्रोहार्य किया अमन्तु
 मशाठार विरिति इया परमाङ्गादित
 इलाम एवमर छया शास्त्र एवं चतुर्विंशति
 आमिराजि इहार घटी दाढ़ी पाँचनद
 कौरन दूषे दार निरेदन लिपिशाळाम
 उहार मूष्मण्ड उत्तर क्षिण्हुई आजा इय ताई
 आयार दाढ़ी पाँचनद निश्चित दाढ़ी इतेत
 दूषे तिन दण्ड मशाठार आइल उहार्ते कि
 कर्त्र ठाकर घनिर मधुक इले घनिरद
 अनुभवि व्यतिरेक कार्य मान इतेत
 पादा पाय न अउव फुहुपुन
 निरेदन लिपितेजि अदरीन पूर्वक विहित
 आजा इतेवक एथानकार रूपर्यव विषय
 हिशेय कि लिपिव देवत इयाचिल एजना
 पुजा लेककु याने राजम् अर्द्धरु पाँचया
 पृथ एत दुर्दा ना पुजार ओय मिताल

ଅକ୍ଷି କୁରିଲେ ଏହି କାଳିନ ପ୍ରାୟ ନିଷ୍ଠାଦୀନେ ଇହି
କଣ୍ଠୀ ଯହାଶୟ ଆମି ମରକାରେର ଚାକର ଆଜା
ଦିନା କୁରିତେ ପାଇଁ ଏ ପରଗନାର କ୍ଷେତ୍ର
ପ୍ରାୟର ଇତ୍ତାରଦୀରେ ନାମେ ବକ୍ତି ରାଜମ୍ଭୁ
କାରନ ଲାଲିମ ନା କୁରିଲେ କୋନ କମେ ବକ୍ତି
ରାଜମ୍ଭୁ ପାଓଥା ପାଦେହ ନା ଏ ବିଷୟ ପୂର୍ବରେ
ନିବେଦନ ଲେଖା ପିଯାଛିଲ ତାହାର ମୁକ୍ତ ଉତ୍ତର
କିଛୁଇ ଆଇମେ ନାହିଁ ଏକାରନ ପୁନର୍ନିବେଦନ
ଲିଖିତେବେଳେ କ୍ଷେତ୍ର ଇତ୍ତାରଦୀରେ ମନ୍ତ୍ରତୌତେ
ଆମେକ ଟୋଳା ବକ୍ତି ଆଟକ କୁରିଯାଇଁ ଏକାରନ
ମରକାରେର ରାଜମ୍ଭୁର ନିମିତ୍ତ ଦୁଇ ତିନ ସାର
ପଦାତିକ ଆମିଯାଛିଲ ଅତ୍ରି ମଦର ଓଳି
ଲେର ନାମେ ଏଯତ ଲିପିନ ପାଇଁ ଯେ ଏଥାନ ହିତେ
ଧେୟ ଇତ୍ତାରଦୀରେ ନାମେ ଆଦିଲତେ ଲାଲିମ
କାରନ ନିବେଦନ ଲିଖି ପାଠିନ ପାଇଁ ମେଇ ଲିପିନ
ବିଦିତ କୁରିଯା ପଦାତିକ ପାଠିନ ଯେ ତାହାର
ଦ୍ୱାରା ବିରିଯା ଦେଓଯା ପାଇଁ ଲାଲିମେର ରଶ୍ମୀ

पूर्विति एकाने मरकार हैते द्विते शब्द
 उहाँर अस्तिकार लिपिते उवे उहाँ बद्या
 पैदान पायु सखल विष्णु लिपिलास देहार
 उउर शीमु आजा हैवेक क्षिदित
 तिवेदत्तशिति ।—

यनिर संशिन्य ठाकुराके ।—

प्रयोजनके विशेष ।————

से रोज शिरमूनाप घोष हीत तोमारु पञ्च
 पाइया मर्यादार जात हैलाय शिरानाइदाम
 शारी पूर्ति पे तिन नौकार ठालान लइया
 गियाछिल उहाँते से तिन भरा बाल
 भवानीपूर ग्रामे काही गीर्वार मद्देय राखिया
 शिरानाइदाम शारी रुल अपाने आसियाछ

ଡାକ୍ ଅଳ୍ପାନି ରିକ୍ଟି ହୁଯି ନାହିଁ ଅତ୍ୟର ତୁମ୍ଭି
 ମତ୍ର ପାଠ ଭବାନୀପୁରୁ ଗୁଣ୍ୟ ଯାଇଯାଏ ପାଠ ଆଠ
 ଦିବମ ମେଇ ଶାନେ ଥାରିଥା ତିନ ଛର୍ବା କଣ୍ଠ
 ବିକ୍ଷ୍ୟ କରିଯା ଟୋକା ଶ୍ରୀଚୁ ପାଠାଇବା ଏଥାନେ
 ସ୍ଵାୟତ୍ତ ବାସନେର ବଜ୍ରେ ଆପୁତ୍ରନ ହଇଯାଇଁ ଏବଂ
 ଆର କୃତ୍ରମାନ ନୌକାର ଢାଳାନ ଦିଲ୍ଲି
 ହଇବେକୁ ଆସି ଏଥାନ ହଇତେ କାନାଇ ମାନ୍ୟିଲେ
 ଶ୍ରୀଚୁ ବିଦ୍ୟାୟ କରିବ ତୁମ୍ଭି ତାହାର ଆପେକ୍ଷା
 କରିବା ନା ଆର ଓଧାନେ କି ଶତ ଚୌଦ୍ଦ ପଦ
 ଓ ଷୋଲ ପଦ ନୌକାର ଭର୍ବା ବିକ୍ରି ହଇଜେଇ
 ତାହା ଜାନିଯାଏ ଲିଖିବା ତୋମାର ବାଟୀ ହଇତେ
 ପରଶ୍ରମ ଏକ ଲୋକ ଏଥାନେ ଆମିଯାଜିଲ ତାହାର
 ମାର୍ଗର୍ତ୍ତ ତୋମାର ଘୁଜ୍ଜା ଲିଖିଯାଇଲେନ ତୁମ୍ଭି
 ଆଦ୍ୟ ଢାରି ଯାଇ ବାଟୀ ହଇତେ ଆମିଯାଜ
 ମର୍ଯ୍ୟାଚାର କିଛୁଇ ଲୋପିବ ନା ଏବଂ ଟୋକା କଣ୍ଠ
 କିଛୁଇ ପାଠିବ ନା ଇହାତେ ଉଦ୍‌ଦ୍ଦୟ ଯଥୋତ୍ତମ
 ଅତ୍ୟର ମେ ଲୋକ ତୋମାର ଏଥାନେ ଏହାତେ

छिल ताहाते आयि ताहाकै अपाने यायिया
 डोयार भाद्र याम पर्यात्तुर याहिना २० कुडि
 टोका ताहार माने दिया समाचार लियिया
 अहा ताहाकै विद्याय रुद्रिलाम तुम्ही म्हे
 लियिउ भावित नहिवा तुम्ही अति शीमु रुक्त
 विक्ती रुक्तिया टोका एपाने पाठाइवा अपाने
 ताहार२ देना आजे ताहा दुक्खिया दिवा श्रीउत
 जीनमनि सरकारेर दूष टोका घटेद्द राक्षि
 देना आजे ताहा दिया घड लइया
 अपाने पाठाइवा प्राण तुल्य श्रीउत राम
 चन्द्ररायकै डोयार अपाने पाठाइ ताहाकै
 कलिरुतार यदी कोन माने रामा करिया
 दिया कोन एक जन जानवान लोकैर महित
 साक्षात् कराइया दिवा मेष्टाने पठिवेत
 गेहोकै कृगीज ओ काली कलम अजाँ
 वश्यक याहा२ ठाहि ताहा दिवा किंनि पठित
 श्रुत इले तुम्ही सरदारा उद्धादीरन

ହରିଦୀ ଟୋକା କୁଡ଼ି ପାପନକାରୀ ଘାହା ଆର
 ଶୀଳ ଇଇବେଳେ ତାହା ତୁମ୍ଭ ବିବେଚନା କରିଯା
 ଦିବା ବସ୍ତ୍ରାଦି ଘାହା କିନିତେ ହୟ ତାହା ଓ ତୁମ୍ଭ
 ଥାକ୍ରିଯା କିନିଯା ଦିବା ଆର ଏକ ଜନ ମେବାଡ଼ି
 ଲୋକ ବିବେଚନା କରିଯା ରାଧାଇୟା ଦିବା
 ଏଥାନେ ଲୋକେର ଜନ୍ୟ ବିନ୍ଦୁର ଅନୁମଜ୍ଜାନ
 କରିଲାମ୍ ତାହାର ଯନେବୁ ଯତ ଲୋକ ଯିଲିଲ ନା
 ତୁମ୍ଭ ଅଥାନ ହଇଏତେ ତୋହାର ଜାନା ଶୁଣା ହୟ
 ନ ଯତ ଏକ ଜନ ଲୋକ ପାଶିନ ଲାଇୟା ବାମାଙ୍ଗ
 କାର୍ଯ୍ୟାତ୍ମ ନିଷ୍ଠୁର କରିଯା ଦିବା ବାମା ବାଟୀର
 ଘର ଘାର ଅର୍ଯ୍ୟାନ୍ତି ହୟ ନାହିଁ ତୁମ୍ଭ କାଳ ବିକ୍ରି
 କରିଯା ଯାମେକୁ ପୈକ୍ରକୁ ବାମାଯ ଥାକ୍ରିଯା ଦୂଇ
 ଏକଥାନ ଘର ନୁତନ ବାଜ୍ଜାଇବା ଆର ପୁରୁତନ
 ତିଜା ମାରାଇବା ଏବାର ଲଗାଇ ଟୋକା ଦିଯା ପତ୍ତ
 କିନିତେ ହଇବେ ନା ବାଗାନେର ତିନଦିଗେ ପତ୍ତ
 ଆଜେ ଆର ମେ ପତ୍ତ କୁତଳ କାଟାଇୟା ଅଗିର
 ଲୋକିର ବାଟୀତେ ପାଲା ଦିଯା ରାଧାନ ଗିଯାଏତେ

असे प्रतीह मड्ड उथा इतें आनंदिया
 शास्त्रिवा दीर्घ योहा लागो ताहा नूतन वासीन
 इतें कोटीवा अरमजान शिक्षाव वाटीते
 मुँगी कुना आजे ताहा मश्च वासी वाटी
 आविहा योहा वासी वाटीर मरे लागे
 ताहा नामिरवरु आर तिळा पैथाने
 नावदीन रुद्रिया अभिवा पुठीर ठारि पाट
 पाका ओ रुद्रिवार ठेळा पाइवा मरेव
 हाजार उटे पुरुत आजे आर योहा अविरु
 लागे ताहा किनित इतेवरु ठून ओ मुरुणि
 ओ याज मरुवेर माहिता कि ठाहि ताहारु
 एको प्रद रुद्रिया पाठीवा ताहा दृष्टि
 दिया होका कियोहो पाठीते इय ताहा
 शिवुत रुजाठीद दोदुव रुठीते पाठीन याइवरु
 ठाटीगुणि इतेवर मरेव हाजार टोकार शिवि
 ए कुठीयालेर रुठीते आमियाजे मे टोका
 मश्च आजे ताहा इतेवर देख्या याइवरु

तुम्हि माहितीन इहेया कांधेर कुम्ह रुक्किवा
 येषत् लेणा पाइत्तेजे इहारु अन्यगत
 कांधेर करिवा ना मराठारु श्रीमु लिपिवा
 तोकारु ठाळान रुदान टोका श्रीमु पाठिवा
 विश्वामेर दुरुन नोकारु ठाळान रुदान देउया
 पाइवेकु रुदाठ आलम्य रुक्किया कांधेरु
 हानि करिवा ना पंत्र पाठ उपाय पाइया अपान
 कारु यश्चिल यात्ता लिपिवा एथानकारु समस्त
 यश्चिल जानिवा क्षिविक्षिति ।—

शनिव भायान्य ठाकुरुके ।—

श्रीदावीनाथदत्त ओ श्रीरामचन्द्रविश्वाम ओ
 श्रीकृष्णनदाम पुति आणो डोमायदिग्गेव

नाम्ये अग्रिर पात्रा परिगीतार परमानन्दपूर
 गुम्येर श्रीहारानन्द विश्वाम आशार एपाले
 लालिम करियाइज तोयहा । ॥ तोयहार दिगीर
 गुम्येर प्रुजारदिगीके सात लइया महमा
 मारि पीट करियाइ इहार कारन जानिते
 पारिलाम ना विश्वाम एपाले आजे तोयहा
 पंत्र पाठ एपाले नै शिया ॥ विषय विदित
 हइया विचार करा याइवेक आर तोयहार
 दिगीर एउमायेर नंबुवि दिगीर याहा पाओला
 ताहा आनिबा पाँठा छागल तिन शत तोयहार
 दिगीर एउमाये एरार विलि करिते हइवेक
 एह० महीष पक्षाश्टोऽर जनो गोपेरदिगीर
 अहित कृपा बाता मिर करिया विजु टोका
 ताहारदिगीके दिया महीष दाय ना करिबा दुइ
 शत घोन दर्थि एक शत घोन दुग्ध घृत घोटि
 अयन नाहा कला एक शत रुङ्दि विलि करिया
 ए मकल लोकेहरदिगीके एउमाइम करिया

ताहारदिग्नके किछु कड़ि एप्टन दिवा बक्सि
 हिमाव करिया पञ्चात देओया याइवेकु नारि
 केल तिन हाजार आर उवाकु दूइ शत
 काँचि दिते हइवेकु ताहाड़ चेष्ठाय अकिवा
 ग्राम्येर पूजारदिग्नके नियमुन करिवा
 ईश्वरी पूजाड़ समय सकले एप्टाने आइमे
 एसकल दुवोर चेष्ठासु थाकिवा दिन म०-क्षेप
 हइल पञ्चाह्यायाह ना हय ताहा करिवा
 ऐमदनपूरेव श्रावयक्ष दालान प्रभृति
 देते शत थान बच्चेर एरमाइम लइया
 गियाजे एव० तिनवारे ताहार ठारि शत
 होका ओ लइयाजे बच्चेर कि पर्यालु करियाजे
 जानिते पारिलाय ना तोयारदिग्नीर एगान
 हइते मे ग्राम निष्टु अउवर तोयरा एक
 ऊन मे छाने याइया बच्चे कि पर्यालु प्रस्तुत
 हइयाजे जानिया आसिवा आर बाकि प्रस्तुत
 हइते कुत दिवस हइवेकु ताहा निष्टय

ଆମ୍ବିଯା ଆମିବା ଉତ୍ସରୀ ପୂଜାର ଯାହୁ
 ବଚ୍ଚ ପ୍ରୁଣ୍ଡ କବିଯା ଦେଇ ତାହାରଦିଗେର ଯାହା
 ପାଇନା ତାହା ଲାଇଯା ଯାଏ ଆର ତାହାରଦିଗଙ୍କେ
 ଯଥେଷ୍ଟ ତାହିଦ କବିବା ଆର ଶୁନିଲାଗ୍ର ତୋଯାର
 ଦିଗେର ଗ୍ରୌମ୍ କାଳୀ କୌତୁନୀଯା ଏକ ଅମ୍ବୁଡ଼ା
 ଆମ୍ବିଯାଙ୍କେ ତାହାରା ହି ପୁରୁଷ ଗୀତ କରେ
 କାଳ ଯନ୍ଦ ଜାନିତେ ପାଇ ନାହିଁ ଏହି ତାଳ
 ହୟ ଏହି ବୁଝଇ ତବେ ତାହାରଦିଗେର
 ଅମ୍ବୁଡ଼ା ଅମ୍ବେତ ପାଠିବା ଏଥାନେ କୌତୁନ
 ହିୟେବେଳେ ଏବଂ ରୀମ ଯାତ୍ରା ଓ ଜାନେ ଏହି ଏହି
 ଲୋକ ତୋଯାରଦିଗେର ଅଧୀନେ ଥାକେ ତବେ
 ତାହାରଦିଗଙ୍କେ କହିବା ଉତ୍ସରୀ ପୂଜାର ତିନ
 ଦିବମ ଏବାଟୀତେ ଆମ୍ବିଯା ଯାତ୍ରା ଓ ନାମ
 ସଂକୌତୁନ କରେ ଏହି ଓ ମୌନେ ନା ଥାକୁ ତବେ
 ମାନାନ୍ତର ହିୟେ ଆନାଇବା ତୋଯାରଦିଗେର
 ଏତଥାଏର ରାଜମୁଁ ଭାଦୁ । ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତେର ବକ୍ରି
 ନୟ ହାଜାର ଟୋଳା ତାହାର ଯଦ୍ୱି ଠାରି ହାଜାର

ପାଠୀଇଯାଇ ଏ ହି ଯତ ବିବେଚନା ବୁଦ୍ଧିତେ
 ପାରିଲାମ ନା ତିନ ଶାହ ତୋତି ଆଦ୍ୟାତ୍ମି
 ଇନ୍ଦ୍ରାଗିତ କୃତିତେ ପାରିଲା ନା କି ବୁଦ୍ଧିତେ
 ଆନି ନିଶ୍ଚିନ୍ତ ଆଛଇ ଏଥିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତୋରୀର
 ଦିଗେର ଭଦ୍ର ନିଶ୍ଚିତ ଲିଖିତେଜି ଏହି
 ଆପନାରଦିଗେର କୁଳାଳ କାହାନୀ କର ତାହେ
 ଭାଦ୍ର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତର ରାଜମ୍ଭ ମହିତ ଶୀଘ୍ର ଫୌଣ୍ଟିଂ
 ପୁନରାୟ ତାକ୍ଷିଦ ନା କୃତିତ ହୟ ଏହ ପଞ୍ଜେ
 ଇତ୍ତାରେ ତାକ୍ଷିଦ ଆନିବା ଉତ୍ସରୀ ପୁଜାର
 ପରେ ତୋରୀରଦିଗେର ଗ୍ରାମେର ବନ୍ଦୋବନ୍ଦ ଇଇବେଳୁ
 ଶରୀମପୁର୍ବାଦ ଦାସେର ପ୍ରମୁଖତ ଶୁନିଲାମ
 ତୋରୀରଦିଗେର ଓପାନେ ତିନିର ମହାଜନେରା
 ଆମିଯା ତିନି ବିକ୍ରି କୃତିତେଜେ ମେଇ ଯହା
 ଅନେକେ ଅନେକେ ଏଥାନେ ପାଠୀଇବା
 କିମ୍ବା ତୋରୀ ତାହାରଦିଗେର ନିକୁଟି
 ଯାଇଯା ଜୀବ ଫୁଲ ତିନିର ଫ୍ଲେମାଇସ ଦିବା
 ତିନି ପୁସ୍ତ ଇଇଲେ ଏଥାନେ ସମାଚାର ଲିଖିବା

ଛୋଟା ନଈଯା ଲୋକ ସାଇରେକୁ ପଞ୍ଜାନୁମାରେ
ଏ ଅକ୍ଷଳ ଦୁରା ବିଲି କୁରିଯା ପଞ୍ଜ ପାଠ ତୋଶରା
ଏଥାନେ ଶୋଶିବା ଦିଲମ୍ବ ନା ହୟ ଇତି ।

ଶନିର ସାଧାନ୍ୟ ଢାକରକେ ।

ଶ୍ରୀଅମୃତୀ ମୁଚ୍ଚରିତେଷୁ ଆଗେ ।

ତୋଶାର ୧୩ କାର୍ତ୍ତିକେ ପଞ୍ଜେତେ ଜାତା ହେଲ
ନୃଗାନେ ଯଦୁଦ୍ଵୀପାରୁ କେବଳ ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ୍ ପୁରାଣ
ନଷ୍ଟତା କୁରିଯା ରାଜୁମ୍ବ ନା ଦିଯା ତୋଶାର ନାମେ
ଜିଲ୍ଲାର ଆଦାଲତେ ଲାଲିମ କୁଡ଼ିଯାଜେ ମେ ଜନ୍ୟ
ଛନ୍ଦାର ବିଷୟ କି ମେ ନିଶ୍ଚିତ ଜିଲ୍ଲାର ଉକଳକେ
ଲୋହ ଗେଲ ଏବଂ ଏଥାନେ ଓ ଯେତେବେଳେ ମୁପଥ
ଆଛୁ ତାହାର ଚେଷ୍ଟାଓ ହେଉଜେ ତୁମ୍ଭ ଓଧାନେ
ହିନ୍ଦୁବ ଶକ୍ତିତେ କାର୍ଯ୍ୟ ପୁରୋତନ କୁରିବା ହୋଇ
ବିଷୟ ଭୟ କୁରିଯା କାର୍ଯ୍ୟ କୁରିବା ନା ପୁଜା

ଲୋକେର ନଷ୍ଟତୀୟ କି ହେତୁ ପାଇଁ ଯେ ମୌଳି
 ପୁଜ୍ଞା ଦୂଷ୍ଟତା କରିଯା ଜିନୀରୁ ଲାଲିମ କରିତେ
 ଗିଯାଇଛେ ତାହାରଦିଗେର ନାମ ଏହି ଫଳ କରିଯା
 ଶୀଘ୍ର ଏଥାନେ ପାଠୀଇବା ଆହୁ ତାହାରଦିଗେର
 ଦୃତି ବିଚାର ଯାଇବା ପାଇଁ ତାହା ନିର୍ଭୟେ ଜାନିଯା
 ଫଳ କରିଯା ଏଥାନେ ପାଠୀଇବା ଏବଂ ତୁ ସି
 ଆହିନ ଯତ ମାତ ଦିବମ ଯେବୀଦେ ଏକହାର
 ଟୋନାଇଯା ଦିବୀ ଯଦି ଯେବୀଦେର ଯଦୀ ତାହାର
 ମାତ୍ରାତ ହେଯା ଅପନୀ ରାଜମ୍ଭ ବନ୍ଦୋବସ୍ତ
 ହରେ ତାଳ ନତୁରା ଏକହାରର ଯେବୀଦ ଗତ
 ହେଲେ ପରେ ଖାତିକେ ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ଦିଯା ସକଳ
 ଉତ୍ସୁକୁ ତାହାରଦେର ଦୃତି ବେଶୀତ ଦିକ୍ଷା କରିଯା
 ଲାଇୟା ଏଥାନେ ମର୍ଯ୍ୟାଚାର ଲିପିବା ଯେ ପୁଜ୍ଞାଙ୍କ
 ସକଳ ଉତ୍ସୁକୁ ଦୃତି ବେଶୀତ ନା ହୁ ତବେ ତାହାର
 ମାତ୍ରାକ୍ଷାର ଜାନିଯା ଏଥାନେ ଲିପିବା
 ଖାଜାରିର ମର୍ଯ୍ୟାମିର ଫଳ ପାଠୀଇଯା ଛିଲ୍ୟ
 ଆତ ହେଯା ଗେନ ଇହାର ଯେ ହୁ ଆଗିତ୍ତ

शास्त्रे एवं एक तिक्ष्ण वरिया पाठीन
 याइवेक मादा आलानि गत वृम्मरेर मत
 एथन करिबा पञ्चां विवेचना करिया ये
 दिहित करा यावेक परगना हइते ये
 द्वाजस्त्र जिलारु उक्ति नर्यन्त ठालान करिबा
 ताहा महि मिक्का टोका मम्मन्तु दिबागत टोका
 याहा ठालान करिबा ताहारु ये रुम्य हइवेक
 ताहा तोदारु नाम्य मरठ लिखात उक्तिके
 लिखियाछि इहा दुखिया कार्य करिबा पञ्चां
 इहारु कोन आन्ति शुना यावेक ना आरु
 पतुल कि पुकारु हइतेजे ताहारु विशेष
 लिखिबा आरु यथनकार ये विषय उपचित
 हय ए नर्यन्त दिदित ना करिया किछु करिबा
 ना ईति ।—

अक्षयाला ।—

आदौ यटे निरोपन ।—

। यटे कडा कडि कपर्द एव कडा
एই समस्त नाम । एव कडार परिशाला
३ तिन कालि ४ ठारि काक ७ मातु कला
९ नव दलि १७ सतेर कनिका २९
मात्राइश जर ३१ बत्रिश दाड ८० आणि
तिल । ३६० तिनात घाटिटे दील । एই समस्त
कडार नियम । ताहार अक्षेर आकार एই ।
। // । तिन कालिते कडा । २७८
। एই ठारि काक । अन्यान्यार आकार
नाई गवनार मूले वेवल नाम शात्र घटि
लिखनेर आवश्यक हय तरे अक्षेर प्रक्षे
अक्षर ताळिया नाम लिखिते हय ।—

୫ କହାର ଆହାର ଏହି ୬ ଏହ କହା
 ୭ ଦୁଇ କହା ୮ ତିନ କହା ୯ ଠାରି
 କହାଯ ଏହ ଗଣା ୧୦ ପାଠ କହା ୧୧ ଜୟ
 କହା ୧୨ ମାତ୍ର କହା ୧୩ ଆଟ କହା ଏବଂ
 ଦୁଇ ଗଣା ଏହ କଥେ ୧୪ ତିନ ଗଣା ୧୫ ଠାରି
 ଗଣା ୧୬ ପାଠ ଗଣା ଏହ ସୁତି ୧୭ ଶ୍ଵତ୍ସଶ୍ଵତ୍ତ
 ଗଣା ୧୮ ମାତ୍ର ପାଠ ଗଣା ୧୯ ଶୋନେ ଜୟ
 ଗଣା ୨୦ ଜୟ ଗଣା ୨୧ ମାତ୍ର ଗଣା ୨୨ ମାତ୍ର
 ମାତ୍ର ଗଣା ଏବଂ ଦେଖ ସୁତି ୨୩ ଆଟ ଗଣା
 ୨୪ ଲୟ ଗଣା ୨୫ ଦଶ ଗଣା ୨୬ ପାଠର ଗଣା
 ୨୭ ବାହ ଗଣା ୨୮ ମାତ୍ରବାର ଗଣା ଏବଂ
 ଆଜାଇ ସୁତି ୨୯ ତେର ଗଣା ୨୩ ଛନ୍ଦ ଗଣା
 ୨୩ ପନେର ଗଣା ଏବଂ ତିନ ସୁତି ୨୬ ଘୋଲ
 ଗଣା ୨୭ ମାତ୍ରର ଗଣା ୨୮ ମାତ୍ରମାତ୍ରର
 ଗଣା ଏବଂ ଦଶୁଳ ପନ୍ଥ ୨୯ ଆଠାର ଗଣା
 ୩୦ ଓତିଥ ଗଣା ୩୧ କୁତି ଗଣା ଓ ଏହ ପନ୍ଥ
 ୩୨ ପାଠ ସୁତି ଏବଂ ଶ୍ଵତ୍ସ ପନ୍ଥ ୩୩ ଜୟ ସୁତି

ଏବଂ ଦେଖ ପଳ । ୧୫. ମାତ୍ର ଦୁଇ ଏବଂ ପୌନେ
 ଦୁଇ ପଳ ୨୦ ଦୁଇ ପଳ ୨୫. ନୟ ଦୁଇ ଏବଂ ମାତ୍ର
 ଦୁଇ ପଳ ୨୫. ଦଶ ଦୁଇ ଏବଂ ଆଡ଼ାଇ ପଳ
 ୨୫ ଏଗୀର ଦୁଇ ଏବଂ ପୌନେତିନ ପଳ ୮.
 ତିନ ପଳ ୮୫ ତେର ଦୁଇ ଏବଂ ମାତ୍ରାତିନ ପଳ
 ୨୫. ଚନ୍ଦ ଦୁଇ ଏବଂ ମାତ୍ରାତିନ ପଳ ୧୫.
 ପନେର ଦୁଇ ଏବଂ ପୌନେଠାରି ପଳ । ୧୦. ଠାରି ପଳ
 ଏହ କଷ୍ଟ । — ୧୦. ପାଁଛ ପଳ । ୧୦. ଜୟ ପଳ
 ୧୨. ମାତ୍ର ପଳ । ୧୧. ଆଟା ପଳ । ୧୨. ନୟ ପଳ
 ୧୩. ଦଶ ପଳ । ୧୫. ଏଗୀର ପଳ । ୧୬. ବାର ପଳ
 ୨୦. ତେର ପଳ । ୨୦. ଚନ୍ଦ ପଳ ୮୫. ପନେର ପଳ
 ଏହ ସୋଲ ପଳ ଏବଂ ଏହ କାହନ । ୧୦. କୁଡି ପଳ
 ଏବଂ ବିଳ ପଳ ଏବଂ ଶାଯା କାହନ । ୧୧. ଚିରିଞ୍ଚ
 ପଳ ୨୨୦. ଦେଖ କାହନ । ୧୨. ଆଡ଼ାଇଞ୍ଚ ପଳ ପୌନେ
 ଦୁଇ କାହନ । ୧୩. ଦୁଇ କାହନ । ୧୪. ମାତ୍ରା ଦୁଇ କାହନ
 । ୧୫. ଆଡ଼ାଇ କାହନ । ୧୬. ପୌନେ ତିନ କାହନ ।
 ତିନ କାହନ । ୧୭. ମାତ୍ରାତିନ କାହନ । ୧୮.

କ୍ଷୀର ତିତ କାହନ ୩୮୦ ପୌନୋଡ଼ିରି କାହନ
କ୍ଷୀର କାହନ । ଏଇ କଥା ଲେଖିବେ ହ୍ୟା ।

वर्षाक ।

ପଂଚକ ।

୧. ୩. ୮. ୧. ୮. ୧୨. ୧୮. ୧୦. ୧୮.
୧୨. ୧୮. ୬. ୮. ୬୨. ୬୮. ୪

ଏ ମହାତ୍ମା କୁଠା ଗନ୍ଧା ଉପରି ଭାଗେ ଲେଖା
ଇବେ କୌଣସି ପାହା ଶିଳାର ଅଛେଇ ଆକାଶର
ଓ ଇଲେକ୍ଟ୍ରାର ଆକାଶ ଓ ରତ୍ନ ଓ ଗଣ୍ଡା ମହାନ
ନାମ ଉପରେ ଉକ୍ତା କିମ୍ବା କୈପ୍ରେସ୍‌ଯା ଲିପିତେ
ଇବେକ ବୁଡ଼ିର ନାମ ପାଇଁ ଇବେକ ଘରିତୁ
ପାଇୟେଇ ପ୍ରତ୍ଯେ ଏକ ରତ୍ନ କିମ୍ବା ଦୁଇ କାହିଁ
ଏବଂ ତିନ ରତ୍ନ ହ୍ୟ ତାହାର ନାମ ଶ୍ଵରୋଚୀଂଚ
ଗଣ୍ଡା ଓ ସାତ୍ରୋଚୀଂଚ ଗଣ୍ଡା ଓ ପୌନେଚୟ ଗଣ୍ଡା
ନାମ ଥାକିବେକ । କିନ୍ତୁ ଉପରେର ଉକ୍ତାର
ନାମେ ପାହା ଜାନା ଯାବେକ ଏଇ କମ୍ଯ ପନେର
ନାମ ଜାନା ଇବେକ । ଚକ୍ରର ନାମ ଶିଳା
ନାମ ଦୁଇ ଚକ୍ର ଆହି ଟାଙ୍କା ଓ ଆଟ ଆନା ।
ଶ୍ଵରୋ ଦେବ ଆହାଇ ପୌନେ ମହାତ୍ମାର ପୁରୁଷ

मिति कहिते हवेह इहाँत नाश भाउकिया
आपत्तास अ०-सूत ठलत दूइ रुथाइ प्राप्त
जरुरत वहे ।—

भाउकिया ।—

१ एक २ दूइ ३ दि ४ तिन ५ चारि ६
ठतुथ ८ पीठ ७ पक्ष ८ जर्य ९ घट १०
माति ११ मष्ट १२ आठ १३ आष्ट १४ तंश १५
सिर १६ दधि १७ दिग १८ ग्रीव १९ ग्रहादर्श
२० वार २१ द्वादश २२ तेज २३ त्रियोदश
२४ ठद २५ ठतुदर्श २६ पत्नेर २७ पक्षदर्श
२८ घोर्व २९ घोडर्श ३० मातेर ३१ मष्टदर्श
३२ आठीर ३३ आष्टादर्श ३४ उनिश ३५ उत
हिंशति ३६ कुडि ३७ विश ३८ विंशति
३९ एकुइश ४० एकविंशति ४१ वहिश ४२
द्वाविंशति ४३ तेइश ४४ त्रियोदिंशति

୧୪ ଚରିତ୍ରାଣ ଓ ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଶ୍ୱାସି ୧୫ ପଞ୍ଚଶ ଓ
 ପଞ୍ଚବିଂଶୀତି ୧୬ ଜୀବିଦଶ ଓ ସତ୍ତବିଂଶୀ
 ଶତି ୧୭ ମାତୃଇଶ ଓ ମଞ୍ଚବିଂଶୀତି ୧୮
 ଆଟାଇଶ ଓ ଅଷ୍ଟାବିଂଶୀତି ୧୯ ଉନ୍ନତିଶ ଓ ଉନ୍ନ
 ତିଂଶୀତ ୨୦ ତିଶ ଓ ତିଂଶୀତ ୨୧ ଏକତିଶ ଓ
 ଏକତିଂଶୀତ ୨୨ ସତିଶ ଓ ସାତିଂଶୀତ ୨୩
 ଡେତିଶ ଓ ନ୍ରିୟତିଂଶୀତ ୨୪ ଚୌତିଶ ଓ
 ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଶ୍ୱାସି ୨୫ ପରିତିଶ ଓ ପଞ୍ଚ
 ତିଂଶୀତ ୨୬ ଛତିଶ ଓ ସଟିତିଂଶୀତ ୨୭
 ମାନ୍ଦିତିଶ ଓ ମଞ୍ଚତିଂଶୀତ ୨୮ ଆଟିଶ
 ଓ ଅଷ୍ଟାତିଂଶୀତ ୨୯ ଉନ୍ନତାଲିଶ ଓ ଉନ୍ନତା
 ରିଂଶୀତ ୩୦ ଚଲିଶ ଓ ଚତ୍ତାରିଂଶୀତ ୩୧
 ୧୫ ଏକଚଲିଶ ଓ ଏକଚତ୍ତାରିଂଶୀତ ୩୨
 ବେଳାଲିଶ ଓ ସାତାରିଂଶୀତ ୩୩ ଡେତାଲିଶ
 ଓ ତିଚତୁରାରିଂଶୀତ ୩୪ ଚୌଯାଲିଶ ଓ
 ଚତୁରାତାରିଂଶୀତ ୩୫ ପରାତାଲିଶ ଓ ପଞ୍ଚ
 ଚତ୍ତାରିଂଶୀତ ୩୬ ଛତଲିଶ ଓ ସତାତାରିଂ

ଶ୍ରୀ ୪୭ ମାତ୍ରକ୍ଲିଶ ଓ ମଞ୍ଚକାରିଶତ
 ୪୮ ଆଟକ୍ଲିଶ ଓ ଆଷୀଠକାରିଶତ ୪୯
 ଉନ୍ନତକ୍ଳାଶ ଓ ଉନ୍ନତକ୍ଳାଶତ ୫୦ ପକ୍ଳାଶ ଓ
 ପକ୍ଳାଶତ ୫୧ ଏକାନ୍ତ ଓ ଏକାନ୍ତକ୍ଳାଶ ଏବଂ
 ଏକାନ୍ତକ୍ଳାଶତ ୫୨ ବାୟାନ ଓ ହାନକ୍ଳାଶତ
 ୫୩ ତିପନ୍ନାନ ଓ ତିପନ୍ନକ୍ଳାଶତ ୫୪ ଚୌରାନ ଓ
 ଚତୁରକ୍ଳାଶତ ୫୫ ପକ୍ଳାନ ଓ ପକ୍ଳନକ୍ଳାଶତ
 ୫୬ ଛାପନ୍ନାନ ଓ ଛାପନ୍ନକ୍ଳାଶ ଓ ସଟନକ୍ଳାଶତ
 ୫୭ ମାତ୍ରନ୍ନ ଓ ମଞ୍ଚନକ୍ଳାଶତ ୫୮ ଆଟେନ
 ଓ ଆଷୀନକ୍ଳାଶତ ୫୯ ଉନ୍ନଷ୍ଟିଟ ଓ ଉନ୍ନଷ୍ଟି
 ୬୦ ସାଇଟ ଓ ସାଇଟ ୬୧ ଏକଷାଣିତ ୬୨
 ବାସାଣିତ ଓ ହାସାଣିତ ୬୩ ଡେବାଣିତ ଓ କ୍ରିୟାବାଣିତ
 ୬୪ ଚୌଥାଣିତ ଓ ଚତୁରଥାଣିତ ୬୫ ପକ୍ଳାବାଣିତ ଓ
 ପକ୍ଳାବାଣିତ ୬୬ ଜେବାଣିତ ଓ ସଟେବାଣିତ ୬୭
 ମାତ୍ରବାଣିତ ଓ ମଞ୍ଚବାଣିତ ୬୮ ଆଟେବାଣିତ ଓ
 ଆଷୀବାଣିତ ୬୯ ଉନ୍ନମହାନ ଓ ଉନ୍ନମନ୍ତି
 ୭୦ ମାତ୍ରନିତ ଓ ମଞ୍ଚନିତ ୭୧ ଏକାନ୍ତନିତ ଓ ଏକ

ମଞ୍ଚତି ୭୧ ବାହୀତରି ଓ ଦ୍ୱାମଞ୍ଚତି ୭୨
 ତେହୀତରି ଓ କ୍ରିମଞ୍ଚତି ୭୪ ଚୌରୀତରି ଓ
 ଢୁଃମଞ୍ଚତି ୭୫ ପଚାତରି ଓ ସଙ୍କମଞ୍ଚତି
 ୭୬ ଜୟାତରି ଓ ସଟମଞ୍ଚତି ୭୭ ମାତାତରି
 ଓ ମଞ୍ଚମଞ୍ଚତି ୭୮ ଆଟୋତରି ଓ ଅଷ୍ଟାମଞ୍ଚତି
 ୭୯ ଉତ୍ତାଶୀତି ଓ ନରମଞ୍ଚତି ୮୦ ଆଶି ଓ
 ଅଶୀତି ୮୧ ଏକାଶି ଓ ଏକାଶୀତି ୮୨
 ବିରାଶି ଓ ଦ୍ୱାଶୀତି ୮୩ ତିରାଶି ଓ ତ୍ରାଶୀତି
 ୮୪ ଚୌରାଶି ଓ ଢୁରାଶୀତି ୮୫ ପଚାଶି ଓ
 ପଞ୍ଚାଶୀତି ୮୬ ଛୟାଶି ଓ ସତଶ୍ଶୀତି ୮୭
 ମାତାଶି ଓ ମଞ୍ଚାଶୀତି ୮୮ ଅଷ୍ଟାଶି ଅଷ୍ଟା
 ଶୀତି ୮୯ ଉନନସବୈ ଓ ଉନନସତି ୯୦
 ନସବୈ ଓ ନୈ ଓ ନରତି ୯୧ ଏକନୈ ଓ ଏକା
 ନସବୈ ଏବଂ ଏକନସତି ୯୨ ବିରାନସବୈ ଓ
 ବିରାନୈ ଓ ଦ୍ୱାନସତି ୯୩ ତିରାନୈ ଓ
 ତିରାନସବୈ ଏବଂ କ୍ରିୟାନସତି ୯୪ ଚୌରାନୈ

३ छोरानवदहि एवं ठतुलवदि १४
 पठानहि ३ पठानवदहि एवं पञ्चनवदि १६
 जयानहि ३ जयानवदहि एवं मङ्गवदि १७
 मात्रानवदहि ३ मात्रानहि एवं मञ्चनवदि
 १८ आटोनहि ३ आटोनवदहि एवं अष्टानवदि
 १९ निरालै ३ लिरालवदहि एवं ओप्पत
 ात् ३ शैक्षु एवं अजूत् ३ लक्ष कोटी ।
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
 २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७
 २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५
 ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२
 ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
 ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८
 ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६
 ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५
 ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४

୮୪ ୮୫ ୮୬ ୮୭ ୮୮ ୮୯ ୯୦
 ୯୧ ୯୨ ୯୩ ୯୪ ୯୫ ୯୬ ୯୭ ୯୮
 ୯୯ । ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦୦୦୦
 ୧୦୦୦୦୦୦୦ ୧୦୦୦୦୦୦୦ । — । ଏ ମରୁଳ ଟୋଳା
 ଏହି ଜନ୍ମାତ୍ମକ ଦୁର୍ବେଗ ଶିଖନାହିଁ ଅଛୁ କିନ୍ତୁ ପରି
 ଶିତ ଦୁର୍ବେଗ ଶେର ଯୋନ ଇତ୍ୟାଦିରୁ ପୁରୁଷଙ୍କ
 ଏହି । ୧୫ ଚାହିଁ ଥିଲେ ଏହି ରତି । ଆ
 ଶାତ୍ରେଜୟ ରତିତେ । ଏହି ଜାତୀ ବୈଲ ଆନାମ୍ଭ
 ଏହି ତୋଳା । ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀତୋଳାଯ୍ । ୧୬ ଏହି
 କାହା । ଶ୍ରୀ ଆଜ୍ଞାଇ ତୋଳାଯ୍ । ୧୭ ଆହି
 ଛଟାକ ପାଂଚ ତୋଳାଯ୍ । ଏହି ଛଟାକ । ୧୮ ଶ୍ରୀ
 କ୍ଷଟୋକ । ୧୯ ଦେଖ ଛଟାକ । ୨୦ ପୌନେ ଦୁଇ
 ଛଟାକ । ଦୁଇ ଛଟାକ ଓ ଆଦି ପୋଥା । ୨୧
 ଶ୍ରୀ ଦୁଇ ଛଟାକ । ୨୨ ଆଜ୍ଞାଇ ଛଟାକ
 । ୨୩ ପୌନେତିନ ଛଟାକ । ୨୪ ତିନ ଛଟାକ । ୨୫
 ଶ୍ରୀତିନ ଛଟାକ । ୨୬ ଶାତ୍ରେତିନ ଛଟାକ
 । ୨୭ ପୌନେଚାରି ଛଟାକ । ୨୮ ଚାହିଁ ଛଟାକ

। १. एक शोया ॥ २. इहाँ पर एहे मात शांति
 शांति शोने नाम हवेक ॥ ३. चाठ छटोक
 । ४. जय छटोक ॥ ५. मात छटोक ॥ ६.
 आठ छटोक आदि शेर ॥ ७. नम छटोक
 । ८. दश छटोक आड़ाइ शोया ॥ ९. एक शोय
 छटोक ॥ १०. दान छटोक तित शोय ॥ ११. तेह
 छटोक ॥ १२. उद्ध छटोक ॥ १३. नेमर छटोक
 योल छटोक ॥ १४. एक शोय हवेक इहाँ
 शुर्व मत शांति शांति देख आड़ाइ शोने
 अहु कर्म नाम हवेक ॥ १५. दुड़े शेर
 । १६. तित शेर ॥ १७. ठाड़ि शेर ॥ १८. चाठ शेर
 । १९. जय शेर ॥ २०. मात शेर ॥ २१. आठ शेर
 । २२. नम शेर ॥ २३. दश शेर ॥ २४. एक शेर
 । २५. दान शेर ॥ २६. उद्ध शेर ॥ २७. नेमर
 शेर ॥ २८. योल शेर ॥ २९. मत शेर ॥ ३०. सत्तर
 शेर ॥ ३१. आठार शेर ॥ ३२. उत्तिश शेर ॥ ३३.
 कुकुल शेर ॥ ३४. नकुल शेर ॥ ३५. याइल शेर

୧୦ ତେଇଶ ଶେର । ୧୮ ଚାରିବର୍ଷ ଶେର । ୨୫ ସୀତିଲ
 ଶେର । ୨୬ ଛାରିବର୍ଷ ଶେର । ୨୭ ମାତାଇଶ ଶେର
 । ୨୮ ଆଟାଇଶ ଶେର । ୨୯ ଉନତ୍ରିଶ ଶେର । ୩୦
 କ୍ରିଶ ଶେର । ୩୧ ଏକକ୍ରିଶ ଶେର । ୩୨ ବର୍ତ୍ତିଶ
 ଶେର । ୩୩ ତେବ୍ରିଶ ଶେର । ୩୪ ଚୌତ୍ରିଶ ଶେର
 । ୩୫ ପଞ୍ଚକ୍ରିଶ ଶେର । ୩୬ ଛତ୍ରିଶ ଶେର । ୩୭
 ଆପିଞ୍ଚିତ୍ରିଶ ଶେର । ୩୮ ଆଟିତ୍ରିଶ ଶେର । ୩୯
 ଉନଚଲ୍ଲିଶ ଶେର ଚଲିଶ ଶେର । ୪୦ ଏକ ଘୋନ
 ହଇବେଳ । ଦେଖ ଆଭାଇ ସେଇଥା ଶାତ୍ରେ
 ପୌଳେ ମରଜନେ ମୁଁଦିର ସତ ଆନିବା । —

୧ ହସି ପରିମାଣେର ଅଙ୍ଗ ଓ ତାହାର ପ୍ରକାର
 ଏବଂ ତାହାର ନାମ କାଠା ବିଦା ଓ କୁଳ ।
 ୨ ଏକ କାଠା । ୩ ଦୁଇ କାଠା । ୪ ତିନ କାଠା
 ୫ ଚାରି କାଠା । ୬ ପାଁଚ କାଠା । ୭ ଛୟ କାଠା ।

୧୮ ମାତ୍ର କାଠୀ ୧୩ ଆଟ କାଠୀ ୧୪ ନୟ କାଠୀ
 ୧୦ ଦଶ କାଠୀ ୧୫ ଏଗାର କାଠୀ ୧୨ ବାର
 କାଠୀ ୧୩ ତେବେ କାଠୀ ୧୪ ଚନ୍ଦ କାଠୀ ୮
 ପୌନେର କାଠୀ ୮ ଷୋଲ କାଠୀ ୮୨ ମତେର କାଠୀ
 ୮୦ ଆଠାର କାଠୀ ୮୪ ଅନିଶ କାଠୀ କୁଡ଼ି କାଠୀ
 ୮ ଏହି ବିଦା ଓ କୁଡ଼ା । ଶଯ୍ୟ ଶାତେ ଦେଖ
 ଆଜୀଏ ପୌନେ ମରନେଇ ପୂର୍ବ ଅଛି ଯତ ।

ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଆକି । —

୧୫	୮	୧୦	୧୪	୧	୧୩	୧୨	୧୦
୧୪	୧୦	୧୫	୧୨	୧୩	୧୪	୮	୮୨
୮୨	୮୦	୮୪	୮	ଇହାକେ	କୁଡ଼ା	କାଠୀ	
ଛଳି ।	ଏହି	ବିଦା	ଓ	ଏହି	କୁଡ଼ା	ପଦ୍ମମାର୍ଗରେ	

पुक्तन ए देशे प्रई मत ठारि हाते काठा
 आणि हाते एक कुडा बद इशिर दीप पुम्ह
 पंडियां खरिया सहितानुयाई आहे खरिले
 भाषाऱ नाय हर खालि मे प्रई मत ठाक्के
 बुडि कुडाक्का गाओ। आर्धे कुडवेळ
 कुडवेळ कुडवानुये काठीपु कुडवेळ कठाय
 घुजाऱ खाठाक्कुडु पंडियां मे ए
 मे खालि पंडियां यान। —

असांख्यी गुप्त ।



